मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 63 | अंक : 09 | मार्च, 2023 | पृष्ठ : 56 | मूल्य : ₹20

राजस्थान दिवस

राजस्थान बजट-2023

प्रदेश के 10 हजार मेधावी विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा ग्रहण करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए RTSE छात्रवृत्ति आरम्भ

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा), संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, (पंचायती राज के अधीनस्थ), कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

एकाग्रता व आत्मविश्वास से करें सफलता का वरण

मार्च माह से वार्षिक परीक्षाओं का दौर आरम्भ होने जा रहा है। सभी विद्यार्थियों को अग्रिम शुभकामनाएं.... सत्रपर्यन्त की गई तैयारी को उत्तर पुस्तिकाओं में उकेरने का समय आ गया है। वर्षभर पढ़ने के बावजूद भी विद्यार्थी इस समय तनावग्रस्त हो जाते हैं। मन में आंशका रहती है कि परीक्षा परिणाम क्या रहेगा? मेहनत और आशा के अनुरूप अंक प्राप्त नहीं होने का डर उनके मस्तिष्क पटल पर छा जाता है जो उनके आत्मविश्वास को कमजोर एवं प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है। अभिभावक भी आवश्यकता से अधिक महत्त्वाकांक्षी हो जाते हैं। उनकी आशाओं का दबाव भी बच्चों पर रहता है। अभिभावकों को मेरी सलाह रहेगी कि परिवार के माहौल को तनावमुक्त एवं सहज रखें। बच्चों की मन:स्थिति को समझने का प्रयास करें। आपके संबलन से उनका आत्मविश्वास बना रहेगा। बच्चों का आकलन, मात्र परीक्षा परिणाम से न करें। अंको से हटकर भी बच्चों में अनेक योग्यताएं होती है, उन्हें पहचानने एवं प्रोत्साहित करने से ही बच्चों में उत्साह बढ़ता है। परीक्षा महत्वपूर्ण है पर अन्तिम नहीं, जीवन में और भी अवसर मिलेंगे।

कुछ विषय छात्रों की रूचि के होते है जबकि कुछ कठिन भी लगते हैं। विद्यार्थियों को मेरी राय है कि जो विषय या पाठ्यवस्तु आपको कठिन लगती है उसे अधिक समय और ऊर्जा देते हुए समझने का प्रयास करें, उससे दूरी न बनाए। गुरूजन भी विद्यार्थियों को समय प्रबन्धन और परीक्षा कक्ष में आत्मविश्वास से प्रश्न पत्र हल करने हेतु मार्गदर्शन देवें।

''काक चेष्टा बको ध्यानम्, श्वान निद्रा तथैव च
अल्पाहारी गृह त्यागी, विद्यार्थी पंचलक्षणम्''

इस श्लोक का अर्थ यह है कि विद्यार्थी कौए की तरह चेष्टाशील बने अर्थात् उसे जहाँ भी विद्या प्राप्त हो ग्रहण करें। बगुले की तरह ध्यान केन्द्रित रखकर पढ़े, अल्पाहारी अर्थात् संतुलित आहार लेने वाला तथा कम खाना खाने वाला तथा गृहत्यागी अर्थात् घर-गृहस्थी की बातों से अलग यही पाँच लक्षण एक विद्यार्थी के होते हैं। विद्यार्थी ऐसे लक्षण वाले बनने चाहिए। परीक्षा के तनाव से मुक्ति हेतु समय का प्रबंधन तथा रात्रि को पूरी नींद लेना तथा सवेरे जल्दी उठकर पढ़ना श्रेयस्कर है। परीक्षा के दिनों में सुपाच्य आहार लेना चाहिए ताकि विद्यार्थी स्वस्थ रहे, स्वस्थ शरीर से तनाव मुक्त रहेंगे।

मेरी सभी परीक्षार्थी विद्यार्थियों के लिए सफलता प्राप्त करने हेतु शुभकामनाएं तथा कामना करता हूँ कि सभी विद्यार्थी पढ़ाई में व्यस्त रहें, मस्त रहें, तनावमुक्त रहे। स्वस्थ रहें एवं दृढ़ विश्वास के साथ परीक्षाओं में उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए सफल हो ऐसी मंगल कामना करता हूँ।

बोर्ड की परीक्षाओं को सफलतापूर्वक संचालन के लिए विभाग द्वारा हर संभव प्रयास किए जाते रहे हैं। संस्था प्रधान ध्यानपूर्वक सचेत रहकर परीक्षाओं का आयोजन करवाएं, छोटी सी लापरवाही से विद्यार्थियों का बड़ा नुकसान हो सकता है। हर हाल में परीक्षा की विश्वसनीयता को बरकरार रखना परीक्षा से जुड़े प्रत्येक कार्मिक का दायित्व होना चाहिए।

भारतीय संस्कृति में रंग, उल्लास एवं खुशियों का पर्व होली का आगमन इसी माह में है। जो हमारे भीतर आनन्द एवं उमंग का संचार करती है। यह त्योहार मन को तरोताजा करने के साथ-साथ प्यार एवं स्नेह से रिश्तों को पुनर्जीवित कर देता है। आओ प्रयास करें कि इस बार होली के पवित्र उत्सव पर उदासी एवं निराशा के पीछे छिपी मुस्कराहट को लौटाते हुए चारों तरफ खुशिया बिखेरें। खुशहाल परिवार एवं समाज वही है जहाँ रिश्तों को अहमियत दी जाती है। रिश्तों में अपनेपन का अहसास ही जीवन का सुरक्षा कवच है। सदैव प्रसन्नचित रहने वाले ही सफलता प्राप्त करते हैं।

काली अंधेरी अमावस्या की रात्रि के समापन के साथ-साथ चैत्र माह शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर 22 मार्च को सूर्योदय के साथ ही भारतीय नववर्ष विक्रम संवत 2080 आरम्भ होने जा रहा है। यह पर्व हमें निरन्तर कर्म करते हुए देश प्रेम, अनुशासन एवं नैतिक मूल्यों को पुन:स्थापित करने का संदेश देता है। इसी दिन से प्रकृति में बदलाव भी आरम्भ होता है। इसके साथ-साथ ही चैत्र नवरात्रि के रूप में शक्ति स्वरूपा माँ जगदम्बा की आराधना के पर्व का आगाज भी होता है। वैसे तो बसन्त, फाल्गुन मास में ही आ जाता है लेकिन इसका सम्पूर्ण प्रभाव चैत्र मास में दिखाई पड़ता है। प्रकृति प्रफुल्लित होकर आनन्द बिखेरती है। जो चहुँ ओर खुशनुमा एवं खुशबूनुमा माहौल लेकर आती है।

नारी शक्ति हमारे परिवार एवं समाज की धुरी है। समाज निर्माण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हर युग मे नारी ने समाज को अपना श्रेष्ठ दिया है। कभी दुर्गा और चण्डी बनकर बुराई का नाश किया है तो कभी माँ, बेटी, बहन एवं पत्नी बनकर घर परिवार को संवार रही हैं। माँ की अच्छी परवरिश से ही समाज को संस्कारित इंसान मिलते हैं। प्रदेश की नारी शक्ति को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर मेरा कोटि-कोटि प्रणाम...

30 मार्च को वीरों की भूमि राजस्थान की वीरता, त्याग एवं संस्कृति के गौरवपूर्ण पर्व राजस्थान दिवस की आप सभी को हार्दिक बधाई।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्।

(डॉ. बुलाकी दास कल्ला)

''काक चेष्टा बको ध्यानम्, श्वान निद्रा तथैव च
अल्पाहारी गृह त्यागी, विद्यार्थी पंचलक्षणम्''
इस श्लोक का अर्थ यह है कि विद्यार्थी कौए की तरह चेष्टाशील बने अर्थात् उसे जहाँ भी विद्या प्राप्त हो ग्रहण करें। बगुले की तरह ध्यान केन्द्रित रखकर पढ़े, अल्पाहारी अर्थात् संतुलित आहार लेने वाला तथा कम खाना खाने वाला तथा गृहत्यागी अर्थात् घर-गृहस्थी की बातों से अलग यही पाँच लक्षण एक विद्यार्थी के होते हैं।

सत्यमेव जयते

जाहिदा खान
राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार
शिक्षा (प्राथमिक और माध्यमिक),
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (स्वतंत्र प्रभार)
मुद्रण एवं लेखन सामग्री (स्वतंत्र प्रभार)
कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

"कहा भी गया है कि "विद्या ददाति विनयम्" अर्थात शिक्षा वह है जो विनय सिखाए। आम के वृक्ष पर लगे फलों में ज्यों-ज्यों रस की वृद्धि होती है त्यों-त्यों वे झुकने लगते हैं। यहाँ झुकना परिपक्वता एवं विनयशीलता का प्रतीक है। शिक्षक वृंद से मेरी अपेक्षा है कि विद्यार्थियों एवं उनके माध्यम से परिवार एवं समाज को विनम्रता, धैर्य एवं मेहनत सरीखे उत्तम मानवीय गुणों का पाठ पढ़ाएं। ऐसे उत्तम संस्कारित शिक्षकों की उज्ज्वल परम्परा हमारे देश में रही है। मैं ऐसे गुरुजन के प्रति हृदय से सम्मान व्यक्त करती हूँ।"

हो चित्त जहाँ भय-शून्य, माथ हो उन्नत....

शिक्षा को जीवन दायिनी कहा गया है इसका आशय यह है कि शिक्षा से हमारे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। यह सर्वविदित है कि शिक्षा जीवन की जटिलताओं से उबार कर सुखमय जीवन का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा का कार्य व्यक्ति को उत्तम संस्कारों एवं उच्च जीवन मूल्यों की सीख देना है। हमारी सत्य सनातन संस्कृति में उच्चतर शिक्षा प्राप्त व्यक्ति से गहरी विनम्रता, संवेदनशीलता, उदारता एवं लोक मंगल भावना की अपेक्षा की गई है। कहा भी गया है कि "विद्या ददाति विनयम्" अर्थात शिक्षा वह है जो विनय सिखाए। आम के वृक्ष पर लगे फलों में ज्यों-ज्यों रस की वृद्धि होती है त्यों-त्यों वे झुकने लगते हैं। यहाँ झुकना परिपक्वता एवं विनयशीलता का प्रतीक है। शिक्षक वृंद से मेरी अपेक्षा है कि विद्यार्थियों एवं उनके माध्यम से परिवार एवं समाज को विनम्रता, धैर्य एवं मेहनत सरीखे उत्तम मानवीय गुणों का पाठ पढ़ाएं। ऐसे उत्तम संस्कारित शिक्षकों की उज्ज्वल परम्परा हमारे देश में रही है। मैं ऐसे गुरुजन के प्रति हृदय से सम्मान व्यक्त करती हूँ।

शैक्षणिक सत्र 2022-23 के अन्तिम सोपान में परीक्षाओं के दौर का आगाज हो चुका है। विद्यार्थियों के वर्ष भर की पढ़ाई का मूल्यांकन इन परीक्षाओं के माध्यम से होना है। मेरी गुरुजन एवं विद्यार्थीगण से अपील है कि परीक्षा पूर्व के दिनों में योजनाबद्ध रूप से अध्ययन अध्यापन करावें ताकि विद्यार्थी अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो सके। माता-पिता अतिशय विश्वास एवं आशा के साथ अपने बच्चों को विद्यालय भेजते हैं। हमें उनके विश्वास पर खरा उतरना है।

इस माह रंगों का अद्भुत उल्लास पूर्ण त्योहार होली एवं अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस भी है। होली का त्योहार प्रेम और भाईचारे का संदेश देता है। मानव समाज को अपने प्रेम, वात्सल्य, त्याग और श्रद्धा से अभिप्राणित करने वाली समस्त महिलाओं के मान सम्मान का उत्सव है- अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस। होली एवं अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सभी को शुभकामनाएं।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की कालजयी कृति, गीतांजलि में एक बहुत सुन्दर एवं शिक्षाप्रद छंद है जिसे मैं गुरुजन के मनन एवं गुरुदेव की अपेक्षा के अनुरूप राष्ट्र का निर्माण करने में अपनी मंगल आहूति देने की भावना से यहाँ प्रस्तुत कर रही हूँ-

"हो चित्त जहाँ भय-शून्य, माथ हो उन्नत,
हो ज्ञान जहाँ पर मुक्त, खुला ये जग हो,
घर की दीवारें बने न कोई कारा,
हो जहाँ सत्य ही स्रोत सभी शब्दों का,
हो लगन ठीक से ही सब कुछ करने की,
हे पिता! मुक्त वह स्वर्ग रचाओं हममें,
बस, उसी स्वर्ग में जागे देश हमारा।"

पुनः मंगल कामनाओं के साथ,

Zahida
(जाहिदा खान)

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

गौरव अग्रवाल
आइ.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

समझकर पढ़ने की क्षमता का विकास

समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर, कला और साहित्य की दृष्टि से राजस्थान उत्सवधर्मी प्रदेश है। उत्सवों की परम्परा में मन के मैल को साफ कर परस्पर सौहार्द्र, प्रेम, भाईचारे की भावना बढ़ाकर मन को प्रफुल्लित करने वाला रंगों का त्योहार होली इसी माह में है। होली के पश्चात् शीत का समापन और गर्मी का आगमन होगा। चेटीचण्ड और गणगौर के पर्व भी इसी माह मनाए जाएंगे। पर्वों और उत्सवों के दौर में आयोजित बोर्ड परीक्षाएं भी जारी है। विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे तनावरहित होकर पूर्ण मनोयोग के साथ परीक्षा दें एवं अध्यापक व अभिभावक धैर्यपूर्वक इस कठिन घड़ी में इनका मार्गदर्शन करें।

परीक्षाओं के इस दौर में राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम RKSMBK कार्यक्रम के अन्तर्गत अप्रेल 2023 में आकलन-3 द्वारा हम एक कदम और आगे होंगे। मैं उम्मीद करता हूँ कि हमारे विद्यार्थी 80 प्रतिशत दक्षताओं में दो या तीन स्टार प्राप्त कर लेंगे। प्रथम श्रेणी पुरस्कार ब्लॉक की सर्वश्रेष्ठ पंचायत को जहाँ सबसे अधिक विद्यार्थी लक्ष्य को प्राप्त करेंगे एवं द्वितीय श्रेणी पुरस्कार उस पंचायत को दिया जाएगा जहाँ 80 प्रतिशत विद्यार्थी लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। शीघ्र ही श्रेणीवार पुरस्कारों की घोषणा की जाएगी। वर्तमान समय में विद्यार्थियों में हमें समझकर पढ़ने की क्षमता का विकास करना होगा जिससे वे रटने की प्रवृति से मुक्त हो।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" की धारक भारतीय संस्कृति अर्वाचीन काल से नारी सम्मान की मर्यादा का पालन पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ कर रही है। वर्तमान समय में सम्पूर्ण वैश्विक मंच एकमत होकर स्त्री के प्रति सम्मान और सृष्टि के विकास में उसके योगदान को नमन करते हुए 8 मार्च को प्रतिवर्ष की भाँति "अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस" के रूप में मनाएगा। प. जवाहर लाल नेहरु ने कहा था-"यदि आप विकास चाहते हैं तो महिलाओं का विकास करें, समाज का विकास स्वत: हो जाएगा।" महिला दिवस मनाने की संकल्पना तभी सफल होगी जब हम राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के द्वारा बालिका शिक्षा के प्रति और अधिक संवेदनशील बनते हुए उन्हें शिक्षा से जोड़ पाएंगे। 23 मार्च को शहीद दिवस पर भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव के साथ-साथ अन्य समस्त शहीदों की शौर्य गाथाओं से हमारे शिक्षक विद्यार्थियों को परिचित कराएंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

अस्तु! उल्लास के रंगों से सराबोर होली, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस, नवरात्रि, चेटीचण्ड, गणगौर, रामनवमी एवं राजस्थान दिवस की आप सभी को बहुत बहुत बधाई.....।

आपका अपना

(गौरव अग्रवाल)

"परीक्षाओं के इस दौर में राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम RKSMBK कार्यक्रम के अन्तर्गत अप्रेल 2023 में आकलन-3 द्वारा हम एक कदम और आगे होंगे। मैं उम्मीद करता हूँ कि हमारे विद्यार्थी 80 प्रतिशत दक्षताओं में दो या तीन स्टार प्राप्त कर लेंगे। वर्तमान समय में विद्यार्थियों में हमें समझकर पढ़ने की क्षमता का विकास करना होगा जिससे वे रटने की प्रवृति से मुक्त हो।"

Rajasthan Education Department

मासिक
शिविरा पत्रिका
न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८
इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 63 | अंक : 09 | फाल्गुन-चैत्र २०७९-८० | मार्च, 2023

प्रधान सम्पादक
गौरव अग्रवाल
❄
वरिष्ठ सम्पादक
सुनीता चावला
❄
सम्पादक
डॉ. संगीता पुरोहित
❄
सह सम्पादक
सीताराम गोदारा
❄
प्रकाशन सहायक
सुचित्रा चौधरी
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक सदस्यता राशि व शर्तें
- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चेक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

अपनों से अपनी बात
- एकाग्रता व आत्मविश्वास से करें सफलता का वरण 3

मेरा संदेश
- हो चित्त जहाँ भय-शून्य, माथ हो उन्नत.... 4

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- समझकर पढ़ने की क्षमता का विकास 5

आलेख
- राष्ट्रीय मूल्यों के प्रणेता के रूप में शिक्षक 7
  डॉ. गौरव सिंह
- भारतीय संस्कृति के प्रमुख तत्वों का विवेचन 9
  डॉ. रमेश चन्द्र टांक
- जुगनुओं का जीवन 12
  मुग्धा
- उपलब्धियाँ और आलोचना एक दूसरे के पूरक हैं 15
  डॉ. राकेश कटारा
- संस्कार युक्त हो विद्यालयी शिक्षा 16
  सन्जू शृंगी
- मानवीय जीवन और सामाजिक संबंधों का समुच्चय है समाज 17
  बुलाकी शर्मा
- सद्प्रयासों व संघर्ष का परिणाम है सफलता 18
  सीताराम गुप्ता
- दयनीय स्थिति : बदलाव अपेक्षित है 19
  प्रदीप कुमार पारीक
- भारतीय महिलाओं का प्रभुत्व 20
  राकेश ढाका
- नेतृत्व का परमादर्श - रानी लक्ष्मी बाई 21
  पुष्पा यादव
- बालकों में स्वअध्ययन और गतिशीलता 22
  शशिप्रभा छाबड़ा
- जीवन में ज्ञान रूपी यज्ञ की महत्ता 23
  रामचन्द्र
- बच्चों का लिखना-पढ़ना और मेरा सीखना 24
  हंसराज तंवर
- मेरी अपनी जुबान मेरे अपने लोग 26
  भंवरलाल पुरोहित
- प्राचीन वाङ्मय में समुद्री ज्ञान-संपदा 30
  डॉ. शंकरलाल शास्त्री
- मानसिक स्वास्थ्य 32
  डॉ. कुलदीप पंवार
- संदर्भ कक्ष 33
  गगनदीप पारीक
- Innovative Approaches At MGGS Rudawal, Bharatpur 34
  Rajendra Goyal
- खेलों के विकास में योगा का महत्त्व 38
  राजेन्द्र कुमार व्यास
- शैक्षिक नवाचार 39
  श्रवण कुमार लक्षकार
- इतिहास एवं विषय वस्तु की उपादेयता 41
  ओमप्रकाश लोधा

रपट
- 30 वाँ राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह 13
  बसन्ती ढाल
- अब्दुल कलाम व्यक्तित्व विकास योजना भ्रमण 36
  कंचन बाला

स्तम्भ
- पाठकों की बात 6
- आदेश-परिपत्र : मार्च, 2023 27-29
- शिविरा पञ्चाङ्ग : मार्च, 2023 29
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 29
- Telecast Schedules of PM e-vidya 29
- बाल शिविरा 44-45
- शाला प्रांगण से 46-47
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 48-49
  परमेश्वरी शिवराण
- हमारे भामाशाह 49
- ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृत प्रोजेक्ट 52

पुस्तक समीक्षा 42
- पहली बूँद नीली थी
  कवयित्री : सोनू यशराज
  समीक्षक : **मनीषा कुलश्रेष्ठ**

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary
मुख्य अवरण : आशीष राजोरिया

Rajasthan Education Department

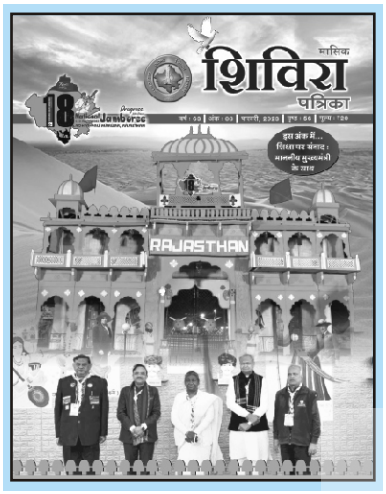

▼ चिन्तन

क्रोधाद्भवति संमोहः
संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो
बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।

क्रोध से मनुष्य की मति मारी जाती है यानी मूढ़ हो जाती है जिससे स्मृति भ्रमित हो जाती है। स्मृति-भ्रम हो जाने से मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि का नाश हो जाने पर मनुष्य खुद अपना ही नाश कर बैठता है। इसलिए मनुष्य को कभी क्रोध नहीं करना चाहिए।

पाठकों की बात

- शिविरा पत्रिका का माह फरवरी 2023 का अंक प्राप्त हुआ। मुखावरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक व मन को प्रफुल्लित करने वाला था, जिसमें बहुआयामी भारतीय संस्कृति व गुणीजनों का संगम देखते ही बनता है। शिविरा पत्रिका के सभी लेख पठनीय, ज्ञानवर्धक व रोचक लगे। इनमें सुनीता चावला का 'मुख्यमंत्री से संवाद, डॉ. संगीता पुरोहित का परीक्षा पर चर्चा नरेन्द्र मोदी जी द्वारा', कमल कुमार जांगिड़ का 'युग सेतु दयानंद सरस्वती', राजेन्द्र कुमार शर्मा का 'जम्बूरी', अनामिका चौधरी का 'विज्ञान दिवस', रामजीलाल घोड़ेला का 'बच्चों में सृजनशीलता का विकास जैसे लेख पत्रिका में चार चाँद लगाने वाले थे। बाल शिविरा की कविताएँ भी आकर्षक लगी। हर्षित व्यास का आदर्श विद्यार्थी के लक्षण लेख भी सराहनीय रहा।

  डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत, जयपुर

- शिक्षा पर व्यवहारिक संवाद से ओतप्रोत शिविरा का फरवरी- 2023 का अंक पढ़कर मन प्रसन्न एवं अभिप्रेरणा से युक्त हो गया। अपनों से अपनी बात में ऊर्जावान रहते हुए परीक्षा की दैनिक आधार पर निरंतर तैयारी अभिप्रेरित करने वाला था। कक्षा रूम की पढ़ाई के साथ-साथ कक्षा की चारदीवारी से बाहर ऑनलाइन मोड पर वर्चुअल गैर सरकारी विद्यालय संचालित करने का निर्णय स्वागत योग्य लगा। इससे निश्चित रूप से विद्यार्थियों को अध्ययन-अध्यापन में सुविधा होगी। ग्रामीण परिवेश के कमजोर विद्यार्थियों के लिए महात्मा गाँधी और राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की संख्या में निरंतर वृद्धि एक शुभ संकेत है कि हमारे विद्यार्थी अध्ययनोपरांत शिक्षा के क्षेत्र में अपनी सृजनशीलता को निखार कर एक बेहतर भविष्य के निर्माण के लक्ष्य को प्राप्त कर पाएँगे। मेरा संदेश में तकनीक भी तरक्की का राजपथ वास्तव में ज्ञानवर्धक लगा। हमारे निदेशक जी का दिशा कल्प के अंतर्गत कर्मण्येवाधिकारस्ते... शिक्षक बंधुओं को अपने कर्म एवं धर्म के प्रति समर्पित रहने का संदेश देता है, प्रेरणा पद लगा।

  रश्मि माहेश्वरी, उदयपुर

- शिविरा पत्रिका फरवरी 2023 का अंक समय पर मिला। प्रति माह की भांति इस बार भी प्रतीक्षा थी कि कब पत्रिका प्राप्त हो और कब आध्यांत सांगोपांग पढ़ा जाए। 'अपनों से अपनी बात' माननीय शिक्षा मंत्री जी का संदेश उमंग एवं उत्साह के साथ परीक्षा की तैयारी विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए प्रेरणादायी था। शिक्षा राज्य मंत्री महोदया का 'मेरा संदेश' तकनीक भी तरक्की का राजपथ भी उतना ही श्रेष्ठ था। निदेशक महोदय का 'दिशाकल्प' कर्मण्येवाधिकारस्ते... कर्म की प्रधानता की महता को रेखांकित करने वाला व परीक्षार्थियों को प्रेरित करने वाला था। वरिष्ठ संपादक महोदया का माननीय मुख्य मंत्री से संवाद के कुछ अंश सम्पूर्ण शैक्षिक परिदृश्य से संदर्भित था। सहायक निदेशक शिविरा अनुभाग डॉ. संगीता पुरोहित का परीक्षा पर चर्चा माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी आगामी माह में आयोज्य परीक्षाओं की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण था। 'आलेख' शृंखला में देवेंद्रराज सुथार का भारत कोकिला सरोजिनी नायडू का जीवन परिचय रेखाचित्र स्तरीय था। 18वीं राष्ट्रीय जंबूरी(रपट), अनामिका चौधरी का विज्ञान दिवस और सुनीता का शिक्षक की कलम से सफलता की कहानी: शिक्षक की जुबानी भी पठनीय थे। आदेश परिपत्र सहित सभी स्थायी स्तंभ उपयोगी लगे। संपादक मंडल सहित सम्पूर्ण शिविरा परिवार को हार्दिक साधुवाद।

  कमल कुमार जांगिड़, नागौर

Rajasthan Education Department

राष्ट्रीय मूल्यों के प्रणेता के रूप में शिक्षक

❐ डॉ. गौरव सिंह

किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। सफल जीवन पाने के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक होती है, जो शिक्षक द्वारा प्रदान की जाती है। शिक्षक समाज में उच्च आदर्श स्थापित करने वाला व्यक्तित्व होता है। प्रत्येक देश या समाज के निर्माण में शिक्षक की अहम भूमिका होती है, या यों कहें कि शिक्षक ही समाज का आईना होता है तो अतिश्योक्ति न होगी। हमारे समाज और एक बालक के जीवन में शिक्षक का स्थान माता-पिता के बाद, लेकिन ईश्वर से पहले आता है- माता, पिता, गुरु और फिर ईश्वर विश्व में केवल भारत ही ऐसा देश है, जहाँ पर शिक्षक अपने शिक्षार्थियों को ज्ञान देने के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भी देते हैं, जो विद्यार्थियों में उच्च मूल्यों को स्थापित करने में बहुत उपयोगी है। आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक वह पथ प्रदर्शक होता है जो हमें केवल किताबी ज्ञान ही नहीं देता बल्कि पाठ्यक्रम के साथ-साथ जीवन मूल्यों की शिक्षा व जीवन जीने की कला भी सिखाता है। शिक्षक का प्रमुख ध्येय बालकों का चरित्र निर्माण कर उनमें ऐसे मूल्यों को रोपना होता है जिससे उनकी सीखने की क्षमता में वृद्धि हो सके। शिक्षक द्वारा प्रदान की गई मूल्यपरक शिक्षा, शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है। शिक्षक शिक्षार्थी में उचित आदर्शों की स्थापना कर उन्हें सही मार्ग दिखाता है। शिक्षक हमें समाज में रहने योग्य बनाता है इसलिए शिक्षक को समाज का शिल्पकार कहा जाता है।

प्रत्येक समाज एवं राष्ट्र के विकास में शिक्षा का विशेष महत्त्व है इसलिए प्रत्येक देश मानवीय संसाधन को श्रेष्ठ, योग्य एवं प्रशिक्षित बनाने के लिए शिक्षा पर आश्रित होता है। सही शिक्षा का अर्थ केवल साक्षरता या योग्यता पा लेना नहीं है बल्कि अहम का विनाश, मानवतावादी बनाना, सत्य को पाना और ईश्वर को लक्ष्य मानकर जीवन में आगे बढ़ना है। शिक्षा का क्षेत्र इतना व्यापक है कि जीवन का प्रत्येक पहलू कहीं न कहीं इससे जुड़ता हुआ प्रतीत होता है। शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर जब चर्चा होती है तो अनेक मंचों से एक स्वर मुखरित होता है जिसमें मूल्य शिक्षा या मूल्यों की बात की जाती है। हालांकि इस पर नजरिए अलग-अलग हैं परंतु एक बात पर तो सभी सहमत है कि हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मानवीय तथा संवैधानिक मूल्यों को यथास्थान महत्त्व दिए जाने की आवश्यकता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति से समाज और समाज से व्यक्ति का अस्तित्व जुड़ा हुआ है। व्यक्ति के आदर्शों, मूल्यों में बदलाव से समाज प्रभावित होता है। वहीं दूसरी ओर समाज के अंदर मूल्यों के परिवर्तन से व्यक्ति के मूल्यों में भी परिवर्तन आ जाते हैं। ज्ञानार्जन प्रक्रिया में कुछ ऐसे ज्ञान तत्व की कमी रह जाती है जिसका सीधा संबंध व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ संपूर्ण मानव समाज से जुड़ा होता है। आज मनुष्य को विशिष्ट दिशा में अग्रसर करने में संपूर्ण शिक्षा प्रणाली अप्रासंगिक, दिशाहीन एवं निरर्थक सिद्ध हो रही है। ज्ञान का स्थान सूचना एवं शिक्षा का स्थान परीक्षा ने ले लिया है। परिणामस्वरूप आज विश्व अत्यधिक ज्ञान विस्तार से पीड़ित है केवल विषयों के ज्ञान से शिक्षा का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता है ज्ञान के विस्तार के अनुपात में हमारे समाज में जीवन मूल्य विकसित नहीं हो पाए हैं और वर्तमान व्यवस्था में यही दुःख का मूल कारण है। शिक्षा और मानवीय मूल्यों में परस्पर संबद्धता का अभाव दिखाई पड़ रहा है। जीवन मूल्यों के विश्व व्यापी क्षरण के संकट में हमें निश्चित रूप से मानवीय मूल्यों की शिक्षा की सोद्देश्यता को स्वीकार करना ही होगा क्योंकि शिक्षा स्वयं में एक मूल्य है।

शिक्षा संस्कार के लिए है। 'विद्या ददाति विनयम' या 'श्रद्धावान लभते ज्ञानम्' ये उक्तियाँ सुसंस्कृत और सुशिक्षित मनुष्य की पहचान है। इस संदर्भ में सर्वप्रथम 'मूल्य' शब्द में निहित अर्थ को स्पष्ट करना आवश्यक होगा। मूल्य मूलतः नैतिक प्रत्यय है। यह ऐसा आधार है जो हमें उचित एवं अनुचित का बोध कराते हैं। मूल्य को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि मूल्य नियामक मानदंड हैं जिनके आधार पर मानव की चुनाव प्रक्रिया प्रभावित होती है तथा वे अपने प्रत्यक्षीकरण के अनुरूप विभिन्न क्रियाओं का चुनाव करते हैं। सहज शब्दों में, मूल्य कोई नई वस्तु या विचार नहीं है बल्कि सुदृढ़ आत्मिक इच्छाशक्ति है। हम जिसे सम्मान देना चाहते हैं या महत्त्वपूर्ण समझते हैं, वही मूल्य हैं। यह मानवीय संरचना की अभिप्रेरणात्मक विद्या है। यह हमारे व्यवहार के लिए प्रेरणा स्रोत है। व्यक्ति का सम्मान और उसकी सामाजिक उपयोगिता तथा समाज की प्रगति में व्यक्ति की सक्रियता और सार्थक योगदान को मूल्य ही निश्चित करते हैं यह शिक्षा का केंद्रीय मर्म हैं।

नैतिक, आध्यात्मिक एवं मानवीय मूल्यों के विकास में शिक्षा की विशेष भूमिका है तथा इस उद्देश्य की प्राप्ति की दिशा में अध्यापकों को एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। मूल्य शिक्षा के लिए संकल्प हमें अपने संबंध ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक तीनों ही रूपों में परिलक्षित होता है। मूल्य मौखिक व्यवहार में भी प्रदर्शित होते हैं। मूल्यों में समाज की स्वीकृति निहित होती है, शिक्षार्थी अपनी इच्छानुसार स्वच्छंद होकर जब चाहे उसी रूप में काम नहीं कर सकता उसे अपने साथियों, अभिभावकों, शिक्षकों की भावनाओं का भी ध्यान रखना पड़ेगा और यही सब उसकी इच्छाओं को भी नियंत्रित करते हैं। मूल्य उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन एवं निर्धारक है। यह किसी के कार्य व्यवहार के उद्देश्यों से संचालित होते हैं। यदि मूल्य उच्चस्तरीय एवं सम्मानीय है तो उद्देश्य भी उन्हीं के अनुरूप जनसाधारण की दृष्टि में सम्माननीय हो सकते हैं। शिक्षा मूल्यों का विकास करने में सहायक है। शिक्षक का प्रमुख कार्य भावी पीढ़ी को नैतिक मूल्य प्रदान करना है। गाँधी जी ने कहा है कि शिक्षा का उद्देश्य मानव को बुद्धिमान बनाना है। मूल्यों का विकास बालक के पर्यावरण से प्रभावित होता है उसे यह पर्यावरण विद्यालय में ही मिलता है। इस आधार पर विद्यालय में शिक्षक द्वारा संपादित विभिन्न क्रियाओं का बालक पर मूल्यपरक प्रभाव पड़ता है। विद्यालय में प्रचलित मूल्य प्रजातंत्र,

Rajasthan Education Department

धर्मनिरपेक्षता, लैंगिक समानता, पर्यावरण संरक्षण, सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रति सम्मान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिक विभेद की समाप्ति बालक अपने में आत्मसात करने की चेष्टा करते हैं। अध्यापक इस ओर विशेष ध्यान देकर बालक को मूल्यों को आत्मसात करने में सहायता प्रदान करता है।

मूल्य संविधान के किसी नियम द्वारा विकसित नहीं किए जा सकते। सरकार द्वारा कठोर निर्णय लेकर मूल्य विकसित करना संभव नहीं है। मूल्यों का उद्भव स्थल तो मन है, मन द्वारा उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय को ध्यान में रखकर उद्देश्य निर्धारित करना मूल्यों की ओर ले जाएगा या मूल्यों से दूर कर देगा। विद्वानों के अनुसार मूल्य युक्त समाज में जीवन जीने में आनन्द आता है। आयु लम्बी होती है, रोगों से मुक्ति मिलती है।

प्रकृति का सम्पूर्ण दर्शन किया जा सकता है, मन प्रसन्न रहने से तनाव से मुक्ति मिलती है। मूल्य निर्माण में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक का सीधा संबंध छात्रों से होता है। शिक्षक बालकों का सर्वांगीण विकास करने में सहायक होता है। वह छात्रों को प्रगति की राह दिखाने वाला एक पथ प्रदर्शक होता है। शिक्षक न केवल कक्षा में अपितु विद्यालय में उचित वातावरण का निर्माण करता है। सभी बालकों के प्रति उदार, पक्षपात रहित व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार रखता है। शिक्षक बालकों की योग्यता, क्षमता, रुचि, अभिरुचि आदि के अनुसार शिक्षा प्रदान करता है। छात्रों की आवश्यकताओं व प्रकृति के अनुसार शिक्षण पद्धति अपनाता है। विद्यालय में किसी भी क्रिया को सिखाने का दायित्व शिक्षक का होता है। वह छात्रों को ज्ञान व क्रिया का अधिगम कराने के लिए उचित वातावरण की तैयारी करता है अतः शिक्षक को शिक्षण की सम्पूर्ण प्रक्रिया में सिद्धहस्त होना आवश्यक है। बच्चे के जन्म लेते ही अनेक रिश्ते उसके साथ जुड़ जाते हैं। परिवार के बाद किसी बच्चे का आत्मिक बन्धन जुड़ता है, तो केवल शिक्षक के साथ। बस छोटी सी उम्र में बालक अपने अध्यापक के सम्पर्क में आ जाता है, फिर वह अपने मन के खाली पृष्ठों की किताब शिक्षक के सामने खोलकर रख देता है, शिक्षक की इच्छा है, उस पर अच्छा लिखे या बुरा। नन्हा फूल रूपी बालक शिक्षक के हर अन्दाज को सूक्ष्मता से देखना प्रारम्भ कर देता। एक मर्यादित अध्यापक का प्रभाव उस पर इस तरह छाने लगता है कि माता-पिता का प्यार व विश्वास भी दूसरे स्थान पर दिखाई देने लगता है। अध्यापक की एक ही आवाज से सारी कक्षा का अनुशासित हो जाना, उसे भी अनुशासन का पाठ सिखाने लग जाता है। चूंकि छात्र शिक्षक को आदर्श मानता है इसलिए छात्र के गुणों जैसे अध्ययनशीलता, ईमानदारी, कार्य के प्रति प्रतिबद्धता आदि के विकास का दायित्व उस पर होता है। साथ ही वह छात्रों में उनकी अभिरुचि व क्षमताओं के अनुकूल भविष्य के क्षेत्रों जैसे प्रशासनिक, प्रबन्धन तकनीकी, वैज्ञानिक, व्यावसायिक आदि का निर्धारण करने में सहायक होता है।

शिक्षक द्वारा प्रदान की गई मूल्यपरक शिक्षा ही शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है। शिक्षकों द्वारा प्रारंभ से ही पाठ्यक्रम के साथ-साथ जीवन मूल्यों की शिक्षा भी दी जाती है। शिक्षा हमें ज्ञान, विनम्रता, व्यवहार कुशलता और योग्यता प्रदान करती है। शिक्षक को ईश्वर तुल्य माना जाता है। आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक वह पथ-प्रदर्शक होता है, जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाता है। आज के समय में शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारीकरण हो गया है। देश के समक्ष बड़ी चुनौती है। पुराने समय में भारत में शिक्षा कभी व्यवसाय या धंधा नहीं थी इससे वर्तमान छात्रों को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। शिक्षक ही भारत देश को व्यवसायीकरण और बाजारीकरण से स्वतंत्र कर सकते हैं। शिक्षक ही देश के पथप्रदर्शक बनकर भारत में शिक्षा जगत को नई बुलंदियों पर ले जा सकते हैं। गुरु एवं शिक्षक ही वो है, जो एक शिक्षार्थी में उचित आदर्शों की स्थापना करते हैं और सही मार्ग दिखाते हैं। एक शिक्षार्थी को अपने शिक्षक या गुरु के प्रति सदा आदर और कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए।

किसी भी राष्ट्र का भविष्य निर्माता कहे जाने वाले शिक्षक का महत्त्व यहीं समाप्त नहीं होता, क्योंकि वे न सिर्फ हमको सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं बल्कि प्रत्येक शिक्षार्थी के सफल जीवन की नींव भी उन्हीं के हाथों द्वारा रखी जाती है। किसी भी देश या राष्ट्र के विकास में एक शिक्षक द्वारा अपने शिक्षार्थी को दी गई शिक्षा और शैक्षिक विकास की भूमिका का अत्यंत महत्त्व है। शिक्षक का दर्जा समाज में हमेशा से ही पूजनीय रहा है। कोई उसे गुरु कहता है, कोई शिक्षक कहता है, कोई आचार्य कहता है, तो कोई अध्यापक या टीचर कहता है। ये सभी शब्द एक ऐसे व्यक्ति को चित्रित करते हैं, जो सभी को ज्ञान देता है, सिखाता है और जिसका योगदान किसी भी देश या राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करना है। सही मायनों में कहा जाए तो एक शिक्षक ही अपने विद्यार्थी का जीवन गढ़ता है। शिक्षक ही समाज की आधारशिला है। एक शिक्षक अपने जीवन के अन्त तक मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता है और समाज को राह दिखाता है, तभी शिक्षक को समाज में उच्च दर्जा दिया जाता है। माता-पिता बच्चे को जन्म देते हैं। उनका स्थान कोई नहीं ले सकता, उनका कर्ज हम किसी भी रूप में नहीं उतार सकते, लेकिन शिक्षक ही है जिन्हें भारतीय संस्कृति में माता-पिता के बराबर दर्जा दिया जाता है क्योंकि शिक्षक ही हमें समाज में रहने योग्य बनाता है, इसलिए ही शिक्षक को समाज का शिल्पकार कहा जाता है। गुरु या शिक्षक का संबंध केवल विद्यार्थी को शिक्षा देने से ही नहीं होता बल्कि वह अपने विद्यार्थी को हर मोड़ पर उसको राह दिखाता है और उसका हाथ थामने के लिए। हमेशा तैयार रहता है। विद्यार्थी के मन में उमड़े हर सवाल का जवाब देता है और विद्यार्थी को सही सुझाव देता है और जीवन में आगे बढ़ने के लिए सदा प्रेरित करता है। एक शिक्षक या गुरु द्वारा अपने विद्यार्थी को विद्यालय में जो सिखाया जाता है, या जैसा वह अपने आस-पास होता देखता है। उसकी मानसिकता वैसी ही बन जाती है अर्थात जैसा वह सीखता है वैसा ही व्यवहार करता है इसलिए एक शिक्षक या गुरु ही अपने विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। सफल जीवन के लिए शिक्षा बहुत उपयोगी है जो हमें गुरु द्वारा प्रदान की जाती है।

सहायक आचार्य
निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर
मो.न.: 9785972787

Rajasthan Education Council

भारतीय संस्कृति के प्रमुख तत्वों का विवेचन

❐ डॉ. रमेश चन्द्र टांक

प्रत्येक संस्कृति की मूल चेतना संस्कार की होती है, तथापि एक संस्कृति के तत्व किसी दूसरी संस्कृति के तत्वों के सर्वथा समरूप नहीं होते। एक संस्कृति की विशेषताएँ ठीक वही नहीं होती जो किसी दूसरी संस्कृति की विशेषताएँ होती हैं। तत्त्वों या विशेषताओं की विभिन्नता ही सांस्कृतिक अनेकता को जन्म देती है और तात्विक भिन्नता ही वह आधार है जिसके कारण किसी एक संस्कृति को किसी अन्य संस्कृति से अलग पहचान पाना संभव हो पाता है। भारतीय संस्कृति के अग्रांकित प्रमुख तत्व है जो इसे एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान कर अन्य संस्कृतियों से पृथक् करते हैं।

1. आध्यात्मिकता की प्रधानता– धर्म संस्कृति का आवश्यक अंग है। धर्म के दो भाग है आध्यात्मिकता (Spirituality) और कर्मकाण्ड अथवा बाह्याडम्बर (Ritualism) आध्यात्मिकता तो सब धर्मों की एक जैसी है, लेकिन उनके बाह्याडम्बरों में अन्तर है। सब धर्मों ने अपने निजी प्रतीक चिह्न गढ़कर अपनी अलग अस्मिता व पहचान बना ली है। अब तो एक ही धर्म के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न सम्प्रदायों ने भी अपनी अलग पहचान बना ली है। यद्यपि आध्यात्मिकता का न्यूनाधिक अंश प्रत्येक संस्कृति में निहित रहता है, परन्तु भारतीय संस्कृति का तो यह प्राण तत्व है। प्रारम्भ से लेकर आज पर्यन्त उसमें आध्यात्मिकता की प्रबलता रही है। यदि सूत्रात्मक रूप में आध्यात्मिकता को भारतीय संस्कृति का मूलाधार कह दिया जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। इस दुनिया को सुन्दर बनाने में हमारी संस्कृति के साथ रोम, मिस्र व यूनान की संस्कृतियों ने भी अपना योगदान किया। हमारी संस्कृति को छोड़कर इनमें से कोई भी संस्कृति काल का प्रहार न सह सकी। परन्तु हमारी संस्कृति काल के तूफानों में भी अजेय रही, क्योंकि वह अध्यात्म की आधारशिला पर आधारित है। जब अध्यात्म शाश्वत है तो उस पर आधारित संस्कृति को काल भला कैसे कवलित कर सकता है?

जहाँ पाश्चात्य संस्कृति में भौतिकता की प्रधानता और लौकिक जीवन के गुणगान की प्रचुरता है। यहाँ भारतीय संस्कृति की मूल दृष्टि आध्यात्मिकता की रही है। पाश्चात्य संस्कृति भौतिक जीवन को अतिशय सीमा तक भोगने और क्षणिक अस्थायी आनन्द को ही अन्तिम सत्य मान कर रह गई, लेकिन भारतीय संस्कृति की सूक्ष्म दृष्टि धर्म-चक्षुओं से न दिखाई पड़ने वाले पारलौकिक जीवन तक भी निर्बाध पहुँची है। जीवन केवल वही नहीं है जो आँखों से दिखाई दे रहा है, यह तो जीवन का एक खण्ड मात्र है। जीवन का वास्तविक अंश तो आत्मा है, जो अन्तः चक्षुओं का विषय है। उस तक दैहिक इन्द्रियों की गति नहीं, यह केवल तपश्चर्या के द्वारा सन्धाने जाने योग्य है। तपश्चर्या के कुछ अंश के बिना कोई भी महान एवं पूर्ण संस्कृति नहीं हो सकती, क्योंकि तपश्चर्या का अर्थ आत्म-संयम और आत्म-विजय है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी निम्नतर वृत्तियों को दबाता है और अपनी प्रकृति की महानतर ऊँचाइयों तक उठ जाता है। भारतीय तपश्चर्या दुःखों का शोकपूर्ण सिद्धान्त या शरीर की विकृत साधना का कष्टपूर्ण आत्म-संयम नहीं है, बल्कि यह तो उच्चतर आनन्द की ओर एक पवित्र प्रयास तथा आत्मा का पूर्ण स्वत्व है। इसके अनुभव के तल में आत्म विजय का महान हर्ष, आन्तरिक शान्ति का स्थायी आनन्द तथा एक सर्वोच्च आत्म-विस्तार की उद्दाम प्रफुल्लता वर्तमान है।

2. समन्वय की भावना– भारतीय संस्कृति समन्वय की साधिका है। वह देश, धर्म के आधार पर भेदभाव न करके सबके प्रति समभाव रखती हैं। अनेकता में एकता खोजना उसका लक्ष्य है। उदाहरणार्थ, सामने सौ व्यक्तियों की भीड़ खड़ी हैं जिसमें हिन्दू हैं, मुस्लिम हैं, पारसी हैं, ईसाई हैं। इस प्रकार इनमें अनेकता है। अब इस अनेकता में एकता खोजिए, एकसूत्रता खोजिए। 'इन सबका पिता एक ही ईश्वर है'– यह हुई एकसूत्रता, जिससे इन सब लोगों को एकीकृत किया जा सकता है। इस प्रकार अनेकता में एकता की तलाश और स्थापना करना ही सत्य है। युगों से भारतीय संस्कृति इसी सत्य की संवाहिका रही है। यदि भारत के प्रारम्भिक इतिहास को देखा जाए तो ज्ञात होगा कि यहाँ शक, हूण, मुगल आदि विभिन्न जातियाँ समय-समय पर आती रही। भारतीय संस्कृति ने इनमें से किसी को नकारा नहीं, बल्कि सभी को अपने विशाल हृदय में स्थान दिया जो आक्रमणकारी जातियाँ शत्रु बनकर आई थी, वे भी भारतीय संस्कृति में समाविष्ट होकर रह गई। यहाँ सभी मतों, सम्प्रदायों, विचारों व जीवन पद्धतियों को स्वीकृति प्रदान की गई है। वस्तुतः हमारी संस्कृति किसी एक नियम को अन्तिम नहीं मानती, क्योंकि जीवन बहुपक्षी है। वह मानती है कि अनन्त सत्य को अनन्त तरीकों से खोजा जा सकता है। ''भारतीय संस्कृति विविधतामयी है, क्योंकि भारत की प्रकृति अनन्तरूपा है। वह समन्वयवादिनी है, क्योंकि प्रकृति सबको स्वीकृति देती है। किसी एक विचार, एक भावना और एक धारणा की सीमा उसके लिए बन्धन है, क्योंकि वह असंख्य नदियों-स्रोतों को अपने में मुक्ति देने वाला समुद्र है।'' धर्मों की दृष्टि से भी हम देखते हैं कि भारतीय संस्कृति में केवल हिन्दू धर्म के लिए ही नहीं, अन्य धर्मों के लिए भी समान स्थान रहा। भारतीय संस्कृति ने पारसी, इस्लाम, ईसाई आदि सभी धर्मावलम्बियों को प्रश्रय दिया है।

विश्व में शायद ही ऐसा कोई देश हो जिसकी संस्कृति ने कभी एक साथ इतने धर्मों को अपने अन्दर आत्मसात किया हो। आचार्य विनोबा भावे ने कहीं कहा है कि समस्या उत्पन्न करने वाले लोग वे हैं जो कहते हैं कि मैं हिन्दू ही हूँ, मैं मुस्लिम ही हूँ, मैं ईसाई ही हूँ। इनके विरोध में कार्ल मार्क्स ने कहा कि मैं हिन्दू भी नहीं हूँ, मुस्लिम भी नहीं हूँ, ईसाई भी नहीं है। परन्तु विश्व कल्याणकारी लोग वे हैं जो कहते हैं कि मैं हिन्दू भी हूँ, मुस्लिम भी हूँ, ईसाई भी हूँ। तृतीय प्रकार का यह सर्वधर्म समभाव ही भारतीय संस्कृति की पहचान है। ''भारतवर्ष ने एक सुसम्बद्ध सत्ता का विकास किया है जिसने युगों से अनेक जातियों, संस्कृतियों तथा मतों के लोगों को प्राप्त एवं आत्मसात किया है। न तो किसी आक्रमणकारी

Rajshree Education Department

को नकारा गया है और न ही किसी शत्रु का उन्मूलन किया गया है। सभी के लिए स्थान जुटाया गया है। शत्रुओं को मित्र बना दिया गया है। वे जो शोषण करने आए थे, लूटने और मारने आए थे, प्रार्थना करने के लिए रह गए।''

3. सहिष्णुता की भावना– भारतीय संस्कृति का भव्य भवन सहिष्णुता की नींव पर आधारित है। सृष्टि-पालक विष्णु का सहिष्णु व्यवहार इसका प्रमाण है। भगवान विष्णु जब क्षीरसागर में लक्ष्मी संग शय्या पर शयन कर रहे थे तो वहाँ अचानक आए कुपित भृगु ऋषि ने उनके वक्ष पर पाद-प्रहार किया। तब भगवान विष्णु ने ऋषि के पैर को हाथ में लेकर सहलाते हुए कहा कि- ऋषिवर! आपके पैर कोमल है और मेरा वक्ष वज्र के समान कठोर। कहीं आपको चोट तो नहीं लगी? 'देव-परम्परा से प्राप्त यह अनन्य सहिष्णुता ही हमारी संस्कृति की विलक्षणता है। सब मतों व विचारों के प्रति सहयोगी भाव रखना हमारी संस्कृति की सीख है। यहाँ मतों की विभिन्नता कभी शत्रुता का आधार नहीं बनी। यहाँ परस्पर विरोधी सम्प्रदाय भी एक-दूसरे के प्रति सहिष्णुता भाव रखते हैं। निर्गुण ईश्वर का उपासक सगुणोपासक के प्रति सहिष्णु रहता है और आस्तिक व्यक्ति नास्तिक के प्रति उदारता का भाव रखता है। वैष्णव हो, शैव हो या कि शाक्त-सब अपने मत के प्रति समर्पित रहते हुए भी अन्य सम्प्रदाय के प्रति सहिष्णुतापूर्ण श्रद्धा भाव रखते हैं। महात्मा बुद्ध और गुरु नानक ने जब हिन्दू धर्म में ब्राह्मणवाद का विरोध किया तो यहाँ ईसाइयों की भांति कैथोलिक और प्रोटेस्ट नहीं हुए। हमने बुद्ध और नानक को पूजा, हमने उनके सुविचारों को स्वीकार किया, भले ही ये हमारी प्रचलित मान्यताओं के भिन्न क्यों न रहे हो। क्रान्तिकारी कबीर ने जब हिन्दू धर्म की कुरीतियों व बाह्याडम्बरों का व्यंग्यात्मक विरोध किया तो उनके विरोधियों ने भी उनके प्रगतिशील विचारों को ग्रहण करते हुए आत्मसुधार किया। इतना ही नहीं, अब तो उनके नाम से स्वतंत्र कबीर पंथ ही चल पड़ा है जिसके अनुयायी उनकी शिक्षाओं का पालन ही नहीं करते, बल्कि उनका प्रचार-प्रसार भी करते हैं।

यह भारतीय संस्कृति सरीखी सहिष्णु संस्कृति में ही संभव हो सकता है। अपने युग की प्रचलित धार्मिक सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध बोलने पर सुकरात को विष का प्याला देकर मार दिया गया, ईसा मसीह को सूली पर लटका दिया गया और मंसूर को 'अनलहक' कहने पर मौत के घाट उतार दिया गया, परन्तु भारत में एक भी ऐसा उदाहरण उपलब्ध नहीं जब उसमें सुधार की आवाज उठाने वाले को समाप्त कर दिया गया हो। राजा राममोहन राय ने जब हिन्दू धर्म की तत्कालीन रूढ़ियों विकृतियों के विरुद्ध अभियान चलाया और विधवा- विवाह का समर्थन और बाल विवाह व सती प्रथा का विरोध किया तो उनको सराहा गया। भारतीय संस्कृति की इसी सहिष्णुता तथा आत्म शुद्धीकरण की प्रकृति (Self Corrective Nature) ने संकटकाल में भी उसे बचाया।

4. प्रकृति की आराधना– प्रकृति व पर्यावरण को भारतीय संस्कृति में विशेष महत्ता प्रदान की गई है। नदी, पर्वत, वृक्ष, वनस्पति सब उसके लिए श्रद्धेय व पूजनीय है। हमारी संस्कृति मानती है कि पवन पिता धरती माता और पानी मनुष्य का गुरु है। नदियाँ हमारे खेतों को सींचती है, अपने साथ बहाकर लाई हुई मिट्टी से भूमि को उर्वर बनाती हैं अतएव गंगा, यमुना, कावेरी, गोदावरी आदि अनेक नदियों की पूजा इस देश में प्राचीन काल से होती आई है। हम उन्हें माता कहते आए हैं और बालिकाओं के गंगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा, गोदावरी आदि नाम रखते हैं। आजकल नदी के पर्यायवाची सरिता, ललिता, शैलजा, शैवालिनी आदि शब्दों के रूप में बालिकाओं के नामकरण की प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। बालिकाओं के उषा, सन्ध्या, इरा, पूनम, पूर्णिमा, ज्योत्स्ना, रजनी, तरु, तारिका, चन्दा, चन्द्रिका, चमेली, पुष्पा, सरोज, लता, विभा, किरण आदि नाम तथा बालकों के सूर्य, चन्द्र, दिवाकर, सुधाकर, राकेश, आकाश, तारक, क्षितिज, रत्नाकर, सागर, अशोक, चन्दन, तुलसी, कमल, गुलाब आदि नाम भारतीय संस्कृति के प्रकृति प्रेम का प्रमाण हैं। यद्यपि देखने में ये सब छोटी बातें हैं, लेकिन इन नन्हीं-नन्हीं बातों में भारत का सांस्कृतिक दृष्टिकोण झलकता है। गंगा नदी को तो भारतीय संस्कृति में पवित्रतम नदी की मान्यता प्राप्त है। हम उसे मात्र जल का प्रवाह नहीं, बल्कि साक्षात माता का स्वरूप मानते हैं। इसलिए हिन्दुओं का कोई भी धार्मिक अनुष्ठान गंगा जल के बिना सम्पन्न नहीं होता। प्रकृति अपने सहज रूप में जनसामान्य और आदिवासियों के जीवन में विद्यमान है। जनसामान्य के जीवन में अब भी नदी, पेड़, पर्वत और गंगा मैया है। काशी और इलाहाबाद के मल्लाह रात में आपको गंगा में नाव की सवारी नहीं कराएंगे, क्योंकि गंगा मैया अभी सो रही है। प्रातःकाल जब ये लोग गंगा में स्नान करने अथवा नाव चलाने जाते हैं, तो कंकड़ फेंककर गंगा को जगाते हैं, गंगा-जल से आचमन करते हैं और इसके बाद ही नाव चलाते हैं। ज्येष्ठ मास की शुक्ल दशमी को मनाया जाने वाला 'गंगा दशहरा' पर्व गंगा के प्रति भारतीयों की पूज्य भावना का प्रतीक है। ऐसी मान्यता है कि इसी पवित्र तिथि को गंगाजी धरती पर अवतरित हुई थी। धर्म शास्त्रकारों ने 'गंगा दशहरा' को कायिक, वाचिक व मानसिक प्रकार के समस्त पापों को दूर करने वाला माना है। अतः इस दिन भारतीय गंगा स्नान कर पूजा-पाठ करते हैं, भूखों को भोजन खिलाते हैं तथा दीन-दुखियों को दान देते हैं। कार्तिक शुक्ल षष्ठी को मनाया जाने वाला सूर्यषष्ठी पर्व प्रकृति-शिरोमणि सूर्य के प्रति हमारी सनातन श्रद्धा का प्रतीक है। इस दिन किसी नदी-सरोवर के किनारे जाकर अस्त होते सूर्य की विधिपूर्वक पूजा करके उसे अर्घ्य दिया जाता है। माघ मास की शुक्ल पंचमी को मनाया जाने वाला 'वसन्त पंचमी' पर्व ऋतुराज वसन्त के प्रति हमारी अभिनन्दन भावना का प्रतीक है।

हमारी प्राचीन संस्कृति अरण्य संस्कृति थी। हमारे ऋषि-मुनियों के समस्त आश्रम वनों में, पर्वतों पर अथवा नदियों के तटों पर स्थित थे। हमारे समस्त शिक्षा केन्द्र (गुरुकुल) वनों में थे। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने वन-संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए सन् 1902 में 'शान्ति निकेतन' की स्थापना की, जहाँ विद्यार्थी पेड़-पौधों के नीचे बैठकर शिक्षा ग्रहण करते थे। कमरों के अन्दर बैठकर पढ़ने का चलन तो अंग्रेजों ने प्रारम्भ किया था, क्योंकि वे शीत देश के वासी थे और वहाँ बाहर खुले में बैठकर पढ़ाई नहीं हो सकती थी। आकाश के नीचे प्रकृति के सान्निध्य में मनुष्य के मौलिक विचारों को गति मिलती है और उसमें नवीन विचारों का उन्मेष होता है। बन्द कमरे में तो विद्यार्थी पिष्टप्रषण विचारों की पुनरावृत्ति करता रहता है जो इसके अन्दर पहले से संचित होते हैं। इसलिए प्राचीन

Rajasthan Education Department

काल में हमारे वटुक चिंतन करने और नए विचार प्राप्त करने के लिए उन्मुक्त आकाश में पेड़ के नीचे तथा नदी के किनारे बैठकर अध्ययन किया करते थे। यह हमारी संस्कृति के प्रकृति प्रेम का पुष्ट प्रमाण है।

5. प्रेम का अनन्त विस्तार– भारतीय संस्कृति प्रेम की गरिमा व महिमा से ओत-प्रोत है और प्रेम ही उसके पृष्ठ का अन्तिम शब्द है। प्राणिमात्र से प्रीति करना उसकी मूल भावना है। प्रेम प्रसूत अहिंसा की भावना भी इस देश में प्राचीनकाल से रही है। यहाँ अहिंसा को तन तक सीमित नहीं रखा गया है, बल्कि मन और वचन की अहिंसा पर भी बल दिया गया है। सृष्टि के समस्त प्राणियों में एक ही परमात्मा की ज्योति जगती है और पेट की भूख भी सबकी एक जैसी होती है, फिर किसी प्राणी को कष्ट देना मानो परमात्मा को ही कष्ट देना है। अतएव जहाँ भी अन्याय, अत्याचार और हिंसा की बात आई, वहीं भारतीय संस्कृति ने उंगली उठा दी और सभी प्रकार के हिंसापूर्ण कर्मो की कठोर वर्जना कर दी। वस्तुतः प्रत्येक प्राणी के प्रति प्रेमपूर्ण अहिंसा भाव रखना भारतीय संस्कृति का मूल मन्तव्य है। अहिंसा का तत्व उसके साथ सदा से संयुक्त रहा है और उसके मूल में निहित प्रेम भावना को विकसित एवं परिपोषित करता रहा है।

भारतीय संस्कृति की प्रेम भावना केवल मानव जगत तक सीमित नहीं है, वरन् मानवेतर प्रकृति के सन्दर्भ में भी उसका यह मूलभूत तत्व सर्वत्र देखा जा सकता है। मानवेतर प्रकृति में पशु-पक्षी जगत् का समावेश किया जा सकता है। पशुओं के प्रति भारतीय संस्कृति का स्नेह सम्बन्ध स्पष्ट देखा जा सकता है। उसने गाय को पशु जगत का प्रतिनिधि माना है। इसलिए दीपावली के अवसर पर गाय के माथे पर कुंकुम लगाया जाता है, गले में माला पहनाई जाती है, उसके सींगों को सुन्दर रंगों से रँगा जाता है और गोवर्धन के दिन उसकी पूजा की जाती है। गऊ को प्रतिदिन पिंडदान करना धर्म माना गया है। कार्तिक मास की शुक्ल अष्टमी को मनाया जाने वाला 'गोपाष्टमी' व्रत गोवंश के प्रति भारतीय संस्कृति की प्राचीन निष्ठा का पुष्ट प्रमाण है। इस दिन सुगन्ध-पुष्पादि से गौओं की पूजा की जाती है तथा उन्हें वस्त्रालंकारों से अलंकृत करके उनकी चरण- धूलि को मस्तक पर लगाया जाता है और उनके ग्वालों को भी सत्कृत किया जाता है। वास्तव में भारतीय संस्कृति गाय को परिवार के एक व्यक्ति की भाँति देखना सिखाती है।

जीव जगत के प्रति अपने प्रेम को भारतीय संस्कृति ने धार्मिकता का पुट प्रदान किया है। देवी-देवताओं के अधिकतर वाहन पशु-पक्षी हैं। शिव की सवारी बैल है और सर्प उनका कण्ठाहार है। नीलकण्ठ साक्षात शिव-रूप है और उसका दिखाई देना कल्याणकारी कहा गया है। शिव की शक्ति दुर्गा शेर पर सवार रहती है। शिवपुत्र कार्तिकेय की सवारी मयूर है। शिव के ही अन्य पुत्र गणेश की सवारी है मूषक है। गरुड़ को विष्णु का वाहन बनने का गौरव प्रदान किया गया है। धन की देवी लक्ष्मी का वाहन उल्लू है। विद्या की देवी सरस्वती का वाहन हंस है। अनेक घरों में वन्य जीवों को पाला जाता है। हिरण को पालने की परम्परा अनेक ग्वाल परिवारों में यत्र-तत्र आज तक मिलती है। उसकी आँखों की करुणा मानो भारतीय संस्कृति का प्राण है। तोता अनेक घरों का पालित पक्षी है, कबूतर पालन के उदाहरण भी बहुतायत में मिलते हैं, पक्षियों के लिए दाना- चुग्गा डाला जाता है, ग्रीष्म ऋतु में उनके लिए पानी के पात्र रखे जाते हैं, चींटियों के लिए उनके बिलों पर आटा डाला जाता है, गली के स्वामीहीन कुत्तों को भोजन खिलाना धर्म माना गया है और पितरों के श्राद्ध पक्ष में कौओं को पिंडदान किया जाता है।

9. चार पुरुषार्थ– शास्त्रों में धर्म के प्रमुखतः तीन प्रकार माने गए हैं- कामार्थक, प्रवर्तक व निवर्तक। कामार्थक धर्म काम और अर्थ की प्राप्ति को ही जीवन का सर्वस्व समझता है। कामार्थक धर्म के अनुयायी वर्तमान जीवन में प्राप्त होने वाले सुख के अतिरिक्त अन्य किसी सुख की कल्पना से न तो प्रेरित होते हैं और न उसके साधनों के अन्वेषण में समय नष्ट करना उचित समझते हैं। वर्तमान जीवन का सुख भोग करना ही इनका उद्देश्य होता है और इसी ध्येय की प्राप्ति के लिए वे सब साधन जुटाते हैं। वे मानते है की हम जो कुछ है वह इसी जन्म तक है और मृत्यु के पश्चात पुनर्जन्म नहीं होता। पुनर्जन्म का अर्थ अधिक से अधिक हमारी संतति का चलते रहना है। अतः हम जो भी अच्छा-बुरा करेंगे, उसका फल हम इसी जन्म में भोग लेंगे, उसका फल भोगने के लिए इस जन्म के पश्चात हमारा पुनर्जन्म नहीं होगा। बहुत हुआ तो हमारे कर्मों का फल हमारी सन्तान या हमारे समाज को भोगना पड़ सकता है। इस प्रकार की विचारधारा रखने वाले लोगों को हमारे प्राचीन शास्त्रों में अनात्मवादी, नास्तिक अथवा चार्वाक कहा गया है... प्रवर्तक धर्म जीवन के दैहिक व भौतिक सुखों को साध्य तो मानता है, परन्तु इसके साथ ही यह पुनर्जन्म को भी स्वीकारता है और मानता है कि यदि हमें इस जन्म की भाँति अगले जन्म में भी सुखी होना है तो हमें पुण्य परोपकार के धर्म निर्दिष्ट कार्यानुष्टान करने होंगे। प्रवर्तक धर्म में काम, अर्थ और धर्म केवल तीन पुरुषार्थ माने गए हैं। यहाँ मोक्ष नामक चौथे पुरुषार्थ की कोई कल्पना नहीं है। इस धर्म का सार यह है कि अपने वर्तमान जीवन में शुभ-लाभ करते हुए हम ऐसे पुनर्जन्म की तैयारी करे जिसमें वर्तमान जन्म की अपेक्षा हम अधिक व स्थायी सुख प्राप्त कर सके ... निवर्तक धर्म निवृत्ति करने वाला अर्थात पुनर्जन्म के चक्र का नाश करने वाला अथवा जन्मान्तर से मुक्ति दिलाने वाला धर्म है। निवर्तक धर्म के अनुयायी जन्म-जन्मान्तर को तो मानते हैं, परन्तु वे उसके चिरस्थायी सुख से सन्तुष्ट नहीं होते, क्योंकि ऐसा सुख भी अन्त में नश्वर होने के कारण काम्य नहीं हो सकता। अतः वे लोग सदैव किसी ऐसे शाश्वत सुख की खोज में रहे, जो एक बार प्राप्त होने के बाद कभी नष्ट न हो। इस सुख की खोज में उन्होंने मोक्ष नामक एक नए पुरुषार्थ की कल्पना की। उन्हें लगा कि आत्मा की एक ऐसी स्थिति भी सम्भव है जिसे पाने के पश्चात कभी जन्म नहीं लेना पड़ता। आत्मा की उस स्थिति को उन्होंने मोक्ष का नाम दिया।

भारतीय संस्कृति की समस्त साधना निवर्तक धर्म की साधना है। उसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष- ये चार पुरुषार्थ कहे गए हैं जिनकी प्राप्ति के लिए प्रत्येक व्यक्ति का प्रयत्नशील रहना आवश्यक माना गया है। इन चार पुरुषार्थी में आध्यात्मिकता और भौतिकता का सन्तुलित संयोग है। चार पुरुषार्थी में से दो (धर्म और मोक्ष) का सम्बन्ध पारलौकिक जीवन से है और शेष दो (अर्थ और काम) लौकिक जीवन से सम्बन्धित है। धर्म का स्थान सबसे पहला है, मोक्ष को सबसे अन्तिम है।

वरिष्ठ अध्यापक (संस्कृत)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय वेदला,
उदयपुर (राज.)
मो.न.: 9461503411

Rajshri Education Department

जुगनुओं का जीवन

❐ मुग्धा

एक जगमगाते जुगनू पर नजर टिक जाए तो मन आनंद से भर जाता है। आँखे बार-बार अंधकार में टिमटिमा रहे जुगनुओं को टटोलती है। यह जुगनू एकदम छोटे से होते हैं लेकिन यह प्रकृति की अनमोल देन हैं। इसमें तो कोई दो राय नहीं कि जुगनू प्रकृति को सुंदरता प्रदान करते हैं।

जुगनू को शुद्ध हिंदी भाषा में खद्योत कीट कहा जाता है। यह कीट परिवार का ही अंग है। इनके पंख होते हैं। ये जीवदीप्ति उत्पन्न करके अपने संगी को आकर्षित करते हैं या दूसरे जानवरों का शिकार करने के लिए इसका उपयोग करते हैं। इनके द्वारा उत्पन्न प्रकाश पीला, हरा, लाल आदि हो सकते हैं। यह प्रकाश रासायनिक क्रिया द्वारा उत्पन्न किया जाता है। इसमें अवरक्त और पराबैंगनी आवृत्तियाँ नहीं होती।

बरसात के मौसम में जुगनुओं को हजारों की संख्या में देखा जा सकता है। इसका कारण यह है कि बारिश में इनको अपनी खुराक आसानी से मिल जाती है। बरसात का मौसम प्रारम्भ होते ही जुगनू के लार्वा को मिट्टी में खाने के लिए छोटे केंचुए, घोंघे, छोटे मशरूम, कीट के लार्वा तथा नवांकुरित बीज के पौधे पर चिपके कीट आदि जैसे शिकार रूपी व्यंजन मिलने लगते हैं। इन्हें पकड़कर जुगनुओं का दल जायकेदार भोजन का रसास्वादन करता है।

जुगनू लगातार नहीं चमकते, बल्कि एक निश्चित अंतराल में चमकते और बंद होते हैं। हमारे वातावरण में जुगनू के अलावा और भी ऐसे जीव हैं जिनमें रोशनी पैदा करने का गुण होता है परन्तु जुगनू हमारे वातावरण में आसानी से पाया जाता है इसीलिए जुगनू रोशनी पैदा करने वाले जीवों में ज्यादा प्रचलित है। भारत में हिमालय की तलहटी में पाए जाने वाले कुछ जुगनू रंग-बिरंगी रोशनी के साथ ही मधुर संगीतमय आवाज भी निकालते हैं। इस बात का पता तब लगा जब पर्वतारोही दल को जगमगाते हुए जुगनू घोर अंधकार में रास्ता दिखा रहे थे और सन्नाटे में इनके शरीर से सुमधुर संगीत सुनाई दे रहा था। इनकी उपयोगिता का अनुभव करके ही, जुगनू को प्रकृति का टॉर्च भी कहा जाता है।

जुगनू की चमक का रंग हरा, पीला या लाल की तरह का होता है। ये ज्यादातर रात में ही चमकते हैं। जुगनुओं के चमकने के पीछे उनका मुख्य उद्देश्य अपने साथी को आकर्षित करना, अपने लिए भोजन तलाशना होता है। मादा जुगनू के पंख नहीं होते हैं इसलिए वह एक जगह ही चमकते हैं, जबकि नर जुगनू उड़ते हुए चमकते हैं। इस आधार पर उन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है। अधिक रोशनी से चमकने वाले जुगनू अधिकांश वेस्टइंडीज और दक्षिणी अमेरिका में पाए जाते हैं। इनकी कई प्रजातियाँ तेज प्रकाश देने वाली भी होती हैं। दक्षिण अफ्रीकी जंगलों में तो जुगनुओं की ऐसी प्रजातियाँ भी हैं जो तीन सौ ग्राम तक वजनी होते हैं और ये तकरीबन दस फुट के गोल घेरदार क्षेत्र को प्रकाशमय कर देते हैं।

बच्चे इन्हे बेहद पसंद करते हैं। विदेश में न जाने कितने ऐसे रात्रि पार्क बनाए गए हैं जहाँ लोग बार-बार जाते हैं और कहते हैं कि जुगनुओं की चमक, जुगनुओं को निहारना उन्हें बेहद पसंद है। शहरों में जुगनुओं के दर्शन लगभग नहीं के बराबर होते हैं। वायु प्रदूषण से इनकी जान को भी खतरा है इसलिए ये ग्रामीण और देहाती इलाकों में चले जाते हैं। शहर की कॉलोनियों में कीटनाशक दवाओं के अंधाधुंध प्रयोग से जुगनुओं का अस्तित्व खतरे में आ गया है। इनकी प्रजातियों की संख्या में भी तेजी से गिरावट दर्ज की जा रही है। जुगनू किसानों के मित्र जीव हैं। ये हानिकारक कीटाणुओं को आहार बनाकर फसलों की रक्षा करते हैं। इनका अस्तित्व मानव सभ्यता के लिए आवश्यक है।

डी-54, यूजी फ्लोर, पर्यावरण कॉम्प्लेक्स,
इग्नू रोड, साकेत, नई दिल्ली-110030
मो.न.: 7976037095

सूचना

आगामी अंकों के लिए लेखन विषय

अप्रैल

1. विश्व जनसंख्या दिवस
2. महावीर और उनका दर्शन
3. भारतीय इतिहास में जलियाँवाला बाग
4. बी.आर. अम्बेडकर के शिक्षा पर विचार
5. ईदुल फितर
6. राष्ट्रीय सिविल सेवा
7. विश्व पृथ्वी दिवस (धरती तेरे कितने रूप)
8. पुस्तकें और हम
9. आयुष्मान भारत दिवस

मई-जून

1. प्रेस की स्वतंत्रता
2. रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा पर विचार
3. विजय दिवस
4. योग दिवस
5. विश्व रेडक्रॉस दिवस
6. प्रौद्योगिकी
7. परिवार की आवश्यकता
8. दूर संचार दिवस
9. आतंकवाद विरोधी दिवस
10. तम्बाकू निषेध
11. महाराणा प्रताप जयंती
12. ईदउल जुहा
13. भामाशाह जयंती

नोट : पाठकों से आग्रह है कि उक्त विषय एवं अन्य शैक्षिक मौलिक चिंतन पर स्वरचित रचनाएँ माह की 1 से 10 तारीख तक शुद्ध एवं स्पष्ट लेखन में शिविरा की मेल आईडी पर वांछित प्रमाण पत्र मय मोबाइल नम्बर भेजें।

-संपादक

Rajasthan Education Department

रपट

30 वाँ राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह

❒ बसन्ती ढाल

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों का 30वाँ राज्य स्तरीय सम्मान समारोह 11 फरवरी, 2023 को वेटरनरी ऑडिटोरियम बीकानेर में आयोजित हुआ। जहाँ प्रदेश के अलग-अलग जिलों से कुल 39 मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों को शिक्षा विभाग में अपने बेहतरीन योगदान व उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हुआ।

कर्मभूमि पर फल के लिए श्रम सबको करना पड़ता है।
रब तो सिर्फ लकीरें देता है रंग हमको भरना पड़ता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमान गौरव अग्रवाल निदेशक प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर ने की तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बुलाकीदास कल्ला थे। उनकी उपस्थिति से समारोह की शोभा ओर अधिक बढ़ गई। श्रीमती रचना भाटिया, अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर, श्री अशोक कुमार मीणा, अतिरिक्त निदेशक प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर, श्री धर्मेन्द्र जोशी संयुक्त निदेशक, श्री संजय धवन, वित्तीय सलाहकार ने कार्यक्रम को शोभायमान किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा मंत्री महोदय एवं अतिथियों का स्वागत श्री जसंवतसिंह राजपुरोहित के निर्देशन में राष्ट्रीय स्काउट एवं गाइड की टीम द्वारा सलामी देकर तथा शिक्षा निदेशालय की महिला कार्मिकों द्वारा तिलक, माला के साथ स्वागत किया गया।

मुख्य अतिथि माननीय शिक्षामंत्री डॉ. बुलाकीदास कल्ला ने अपने कर कमलों से दीप प्रज्वलित कर तथा सरस्वती पूजन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। राजकीय महारानी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय बीकानेर की छात्राओं द्वारा भावना तिवाड़ी के निर्देशन में सरस्वती अर्चना एवं स्वागत गीत का गायन किया गया जिससे सम्पूर्ण ऑडिटोरियम संगीतमय हो गया।

पहचान के जरिए मिला काम
बहुत कम समय के लिए टिक पाता है,
लेकिन काम से मिली पहचान
जिन्दगी भर कायम रहती है।

राजकीय सेवा में रहकर इस प्रकार सम्मानित होना, सम्मान प्राप्त करना प्रत्येक कर्मचारी के लिए गौरव है। अत: समारोह को अधिक रोचक व यादगार बनाने के लिए सम्मान समारोह को दो चरणों में सम्पन्न किया गया। जिसमें 7 अलग अलग प्रकार से सम्मानित किया गया।

प्रथम चरण में प्रत्येक कर्मचारी को तिलक, माला, शॉल, श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया।

द्वितीय चरण में मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा मंत्री महोदय द्वारा सम्मानित कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र, 11 हजार रुपये का चेक व स्मृति चिह्न भेंट किया गया।

सम्मान समारोह का परिचय श्री विचित्र नारायण आचार्य (सहायक प्रशासनिक अधिकारी) द्वारा दिया गया। उन्होंने अतिथिगण का स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए कार्यक्रम से परिचय करवाते हुए बताया कि राज्य स्तरीय सम्मान समारोह का आगाज 30 मई, 1990 को तत्कालीन निदेशक श्री ललित के. पंवार के सानिध्य में हुआ तथा 2021 तक कुल 938 कार्मिकों को सम्मानित किया जा चुका है तथा इस वर्ष 39 कार्मिकों का चयन हुआ है।

इसके अलावा उन्होंने इस वर्ष 6994 कार्मिकों की ऐतिहासिक पदोन्नति होने पर माननीय शिक्षा मंत्री महोदय का शिक्षा विभाग की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त किया। इसी के साथ ही ऑडिटोरियम में उपस्थित सम्पूर्ण आगन्तुकों ने खड़े होकर तथा करतल ध्वनि के साथ माननीय शिक्षा मंत्री महोदय का इस ऐतिहासिक कार्य के लिए सादर आभार प्रकट किया।

श्रद्धा ज्ञान देती है, नम्रता मान देती है,
योग्यता स्थान देती है
पर तीनों मिल जाए तो व्यक्ति को
हर जगह सम्मान देती है।

सम्मान प्राप्त करना व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षा होती है, लेकिन इसे प्राप्त करने के लिए प्रत्येक मनुष्य को इसके योग्य बनने के लिए प्रयास करना पड़ता है। इसी क्रम में शिक्षा विभाग में प्रारंभिक शिक्षा एवं माध्यमिक शिक्षा में कुल 65000 मंत्रालयिक कर्मचारी एवं 10500 सहायक कर्मचारियों में से उत्कृष्ट कार्य करने वाले 39 कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। इसमें सम्मानित होने वाले कार्मिकों की न्यूनतम 15 वर्ष की सेवा, 07 वर्ष का वार्षिक कार्य प्रतिवेदन, राजकीय कार्य संपादन में कार्मिक की भूमिका एवं व्यवहार, सामाजिक, खेलकूद, स्वास्थ्य, पर्यावरण, साहित्य, राज्य स्तरीय एवं राष्ट्रीय स्तरीय योगदान तथा अन्य क्षेत्रों में भी अपने बेहतरीन योगदान एवं प्रदर्शन के आधार पर सम्मानित किया जाता है। राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह में सम्मानित होने का सौभाग्य प्राप्त करने वाले कार्मिकों की सूची इस प्रकार है-

1. श्री विचित्र नारायण आचार्य, सहा.प्रशा. अधिकारी मा.शि. निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर
2. श्री भुपेश आमेटा, निजी सहायक राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद उदयपुर
3. श्री सांवल सिंह, सहायक कर्मचारी संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा,कोटा
4. श्री कपिल देव शर्मा, वरिष्ठ सहायक संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, भरतपुर
5. श्री मुकेश गांधी, सहा.प्रशा. अधिकारी रा.उ.मा.वि. घोटाद, डुंगरपुर
6. श्री विनोद कुमार महात्मा, प्रशा. अधिकारी मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी सम्रग शिक्षा उदयपुर
7. श्री राजेन्द्र प्रसाद कुमावत सहा. प्रशा. अधिकारी संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, जयपुर
8. श्री जाकिर हुसैन, अति. प्रशा. अधिकारी प्रा.शि. निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर
9. श्री हरीश पालीवाल, अति.प्रशा. अधिकारी संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, उदयपुर
10. श्री हेतराम, सहायक कर्मचारी राबाउमावि. मिर्जेवाला श्रीगंगानगर
11. श्री देवेन्द्र सिंह, सहायक प्रशासनिक अधिकारी संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, भरतपुर
12. श्री संदीप मेहरा, सहायक प्रशासनिक अधिकारी जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक कोटा
13. श्री विनोद कुमार जोशी, वरिष्ठ सहायक मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी शाहपुरा भीलवाड़ा
14. श्री महावीर प्रसाद शर्मा, अति. प्रशा. अधिकारी संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, कोटा
15. श्री गौरव कुमार काठपाल, वरिष्ठ सहायक राउमावि. मलकाना कलां श्रीगंगानगर
16. श्री देवेन्द्र कुमार धनेरिया, सहा.प्रशा.

Rajasthan Education Department

अधिकारी संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, अजमेर

17. श्री कैलाश कुमार राठौड़, वरिष्ठ सहायक जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक मुख्यालय जालोर
18. श्री मनोज कुमार सैनी, सहा. प्रशा. अधिकारी मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी उमरेण अलवर
19. श्री मंछाराम, सहायक कर्मचारी मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी समग्र शिक्षा, सिरोही
20. श्री अमित गोयल, वरिष्ठ सहायक संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, अजमेर
21. श्री रामचन्द्र बांकोलिया, सहा. प्रशा. अधिकारी राउमावि. बच्छरारा रतनगढ़, चूरू
22. देवेन्द्र कुमार यादव, वरिष्ठ सहायक रामरतन जोशी राउमावि. गण्डाला बहरोड़, अलवर
23. श्री पारसमल जैन, सहा.प्रशा. अधिकारी जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय मा., टोंक
24. श्री सुरेश कुमार व्यास, वरिष्ठ सहायक राउमावि. दफ्तरी चौक बीकानेर
25. श्री शौकत अहमद अंसारी, वरिष्ठ सहायक जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय मा., झालावाड़
26. श्री पेपाराम, जमादार जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक मुख्यालय जालोर
27. श्री बृजमोहन पारीक, सहायक कर्मचारी प्रा.शि. निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर
28. श्री अशोक कुमार, वरिष्ठ सहायक जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) मा. शिक्षा, बाड़मेर
29. श्री शिवलहरी शर्मा, वरिष्ठ सहायक मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी रायपुर, पाली
30. श्री नरेश कुमार, सहा. प्रशा. अधिकारी, संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा चूरू संभाग चूरू
31. श्री अमन परिहार, वरिष्ठ सहायक, संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा,जोधपुर
32. श्री हनुमान प्रसाद व्यास, सहा. प्रशा. अधिकारी, मा.शि. निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर
33. श्री तिलक चन्द बंसल, वरिष्ठ सहायक राउमावि. करमोदा सवाईमाधोपुर
34. श्री रवि परिहार, वरिष्ठ सहायक जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा जोधपुर
35. श्री सुरेन्द्र कुमार गढ़वाल, वरिष्ठ सहायक संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा,चूरू
36. श्री रमजान खाँ पठान, अति. प्रशा. अधिकारी मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी समदड़ी, बाड़मेर
37. श्री महेश कुमार रंगा, अति. प्रशा. अधिकारी, जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय प्रा.शिक्षा, बीकानेर
38. श्री प्रदीप कुमार, सहायक प्रशा. अधिकारी मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं समग्र शिक्षा भरतपुर
39. श्री किशनलाल बंशीवाल, अति. प्रशा. अधिकारी, संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू

माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने माँ शारदा के चरणों में नमन करते हुए सम्मानित होने वाले कार्मिको के कार्य की सराहना की। उन्हें विभाग की ओर से हार्दिक बधाई व उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ शिक्षा के क्षेत्र में सरकार की तरफ से किए जाने वाले कार्य से अवगत करवाया। उन्होंने बताया कि आजकल जमाना स्वस्थ प्रतियोगिता का है इसमें जो कर्त्तव्यनिष्ठ भाव के साथ परिश्रम करता है, ये जमाना उनका है। इसी क्रम मे 39 कार्मिकों का चयन हुआ तथा इनसे सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए और जो स्वयं को इस योग्य समझते हैं उन्हें प्रयास कर अगले वर्ष के लिए इस योग्य बनावें। साथ ही डिजिटल प्लेटफार्म पर कार्य करें, कार्य को बिना रोके शीघ्र करने का प्रयत्न करें। माननीय शिक्षा मंत्री जी ने सभी को पॉजिटिव सोच रख कर कार्य करने को कहा, उन्होंने शिक्षा विभाग को ऐसा विभाग बताया जिसके कर्म, धर्म और ईमान में सेवा है तथा सभी को समर्पित भाव से निरंतर सेवा करते रहने की प्रेरणा दी। उन्होंने बताया कि 'शिक्षा विभाग तेजी से आगे बढ़ रहा है, शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए सरकार निरंतर प्रयासरत है। माननीय मुख्यमंत्री महोदय एवं तत्कालीन शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमान गोविन्द सिंह डोटासरा के प्रयासों से राजस्थान में महात्मा गाँधी विद्यालय खुले हैं, उससे एक क्रांति आई है जिससे हर बच्चे को अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने का अवसर मिला है। इस साल भी बजट घोषणा के अंतर्गत महात्मा गाँधी स्कूल खोले जाएँगे तथा लॉटरी माध्यम से बच्चों के एडमिशन होंगे इससे गरीब से गरीब बच्चों को अवसर मिलेंगे तथा आगे भी बच्चे उच्च पद प्राप्त कर पाएँगे। इसके अलावा उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में सरकार की योजनाओं से अवगत कराया। उन्होंने शिक्षा विभाग को परोपकारी विभाग कहा और कहा कि हम इस विभाग में रहकर अधिक से अधिक लोगों की सेवा कर सकते हैं। उन्होंने शिक्षा विभाग में होने वाली पदोन्नतियों के उत्कृष्ट कार्य हेतु माननीय निदेशक महोदय और सहायक अधिकारियों के कार्य की सराहना की तथा कहा कि पदोन्नतियों का कार्य निष्पक्ष रूप से मेरिट के अनुसार ही किया जाना चाहिए ताकि कोई भी कार्मिक अपने हक से वंचित न रहे।

श्रीमान् निदेशक महोदय ने अपने संबोधन में सम्मानित होने वाले कार्मिकों को बधाई देते हुए उन्हें शिक्षा विभाग के दूल्हे कहकर संबोधित किया। उन्होंने कहा सभी सम्मानित कर्मचारियों के सिर पर बंधे साफे व उनके चेहरे की मुस्कान, उनके मन में जोश और उमंग की भावना इस पूरे ऑडिटोरियम के वातावरण को ऊर्जावान बना रही है। इसके अलावा सरकार द्वारा की गई बजट की घोषणाओं तथा होने वाली आगामी भर्तियों से अवगत करवाया व विभाग में लगभग 1 लाख भर्तियाँ हो चुकी तथा अगले वर्ष के लिए भी नई भर्तियों की अर्थना भेजी जानी है तथा उन्होंने सभी से डिजिटल प्लेटफार्म पर कार्य करने की अपेक्षा की और सभी को मेहनत से आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। निदेशक महोदय ने कहा कि जिस प्रकार सरकार निरंतर शिक्षा के क्षेत्र में प्रयास कर रही है उसी प्रकार हम भी उत्साह के साथ कर्मबद्धता दर्शाते हुए कार्य कर विभाग को और अधिक उँचाई पर लेकर जाएं। आने वाले 5 साल में शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलाव आने वाले हैं, कई चुनौतियाँ आने वाली है तथा शिक्षा विभाग की प्राथमिकता बदलने वाली है जिसमें शिक्षा विभाग का ध्यान "learning out come' को बेहतर करने की तरफ हो रहा है दूसरा विद्यार्थी ठीक से सीख पाएं व शिक्षा के बढ़ते कदम योजना को आगे बढ़ाना digital learning को और अधिक विकसित करना तथा digital learning की सेवा दूर दराज के विद्यालयों तक पहुँचाना।

कार्यक्रम की स्मृतियाँ सम्मानित मंच के स्मृति पटल पर स्थायी रखने हेतु सम्माननीय मंच को स्मृति चिह्न प्रदान करके शिक्षा विभाग की तरफ से श्रीमती रचना भाटिया अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा द्वारा आभार व्यक्त किया गया। उसके पश्चात कार्यक्रम में शामिल हुए सभी अतिथियों व आगन्तुकों द्वारा एक साथ राष्ट्रगान गाया गया।

अंत में सभी सम्मानित होने वाले मंत्रालयिक कर्मचारियों द्वारा मुख्य अतिथि के साथ मंच पर सामूहिक फोटो खिंचवाकर इस गौरवान्वित लम्हें को कैमरे में कैद कर यादों के रूप में संजोया गया। ये दृश्य बेहद मनोरम व प्रोत्साहित करने वाला था। इसी के साथ ही सम्मान समारोह का शुभ समापन हुआ।

मंच व कार्यक्रम का संचालन श्रीमती प्रीति जलापिया, श्री दिलीप परिहार एवं श्री मदन मोहन मोदी ने किया।

कनिष्ठ सहायक
शिक्षा निदेशालय प्रा.शि. बीकानेर
(राज.)
मो. 7792021609

Rajasthan Education Department

उपलब्धियाँ और आलोचना एक दूसरे के पूरक हैं

❒ डॉ. राकेश कटारा

आलोचना वह मनोवैज्ञानिक मानवीय संसाधन है जो व्यक्ति के कर्मों को शुचिता के साथ उपलब्धि के निर्बाध पथ पर सतत् गतिमान रहने का अवसर उपलब्ध करवाती है। बशर्ते आलोचक व आलोचना ग्रहण कर्त्ता दोनों का उद्देश्य पूर्वाग्रह मुक्त हो।

संत कबीर वाणी में स्पष्ट किया गया है –

निन्दक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिनु पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।

यहाँ निंदक से अभिप्राय समालोचक से है। व्यक्ति को आलोचनाकर्त्ता के फीडबैक, सुझाव, राय, मार्गदर्शन आदि को सकारात्मकता से लेना चाहिए।

सकारात्मकता पूर्वक ग्रहण की गई आलोचना हमारे स्वभाव, व्यक्तित्व व प्रकृति को निर्मल बना देती है। निर्मल व्यक्ति अहंकार व कर्त्ता भाव से मुक्त हो जब कार्य करता है तो वह उपलब्धि के निकट होता है। मनोविज्ञान में उपलब्धि को अभिप्रेरणा भी माना गया है। जो कि आलोचना के गर्भ से जन्म लेती है। अतः उपलब्धियाँ बढ़ने पर आलोचना भी बढ़ती है। अपने व्यक्तित्व का विकास चाहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को आलोचना व उपलब्धि को परस्पर मित्रवत ही समझना चाहिए। आलोचना उपलब्धि की प्राणवायु है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को राजनीतिक जीवन में अनेक आलोचनाओं को सहन करना पड़ा लेकिन यही आलोचनाएँ एक नए आंदोलन को खड़ा करने में और उस आंदोलन के प्रभाव की उपलब्धि को साम्राज्यवादी व्यवस्था के मानस में स्थित करने में कामयाब रही। दूसरी ओर बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर को अपने सामाजिक जीवन में न जाने कैसी-कैसी आलोचना को सुनने एवं सहन करने का मौका मिला लेकिन उस प्रत्येक आलोचना से न केवल वे उपलब्धियों के शिखर पर पहुँचे अपितु न जाने कितने शोषित और वंचित वर्ग के लोगों को उपलब्धियों तक पहुँचाने के लिए प्रेरणा मार्ग तैयार किया।

विद्यालय विद्यार्थी को निखारने का सबसे पुरातन एवं सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान है। जहाँ विद्यार्थी को कई बार अपने मित्रों की कई आलोचनाओं का शिकार होना पड़ता है तो कई बार कई विषय अध्यापकों की आलोचना का भी शिकार होना पड़ता है। कुछ विद्यार्थी इसे स्वाभिमान पर ठेस मानते हैं एवं नकारात्मक प्रवृत्तियों का शिकार हो जाते हैं लेकिन वहीं दूसरी ओर थोड़ी सी समझदारी दिखाने वाले विद्यार्थी उस आलोचना को अपने लिए एक चुनौती मानते हैं और उस चुनौती के सहारे स्वयं को सही साबित करने के लिए निरंतर लक्ष्य एवं उद्देश्य आधारित कर्म में निरत हो जाते हैं। फलस्वरूप उपलब्धियाँ उनका स्वागत करती हैं। विद्यार्थी जीवन आलोचनाओं को गंभीरता से सुनने और उसमें छिपे हुए सुझावों को समझने की बहुत ही महत्त्वपूर्ण अवस्था है। वास्तव में विद्यार्थियों की आलोचना करने वाले उनके सहपाठी उनके विरोधी नहीं होते हैं। वह अपने मित्र में कुछ गुण और जोड़ना चाहते हैं। इसी प्रकार विद्यालयी जीवन के विभिन्न शिक्षक विद्यार्थियों के कुछ कम विकसित कौशलों को विकसित करने के लिए, उन्हें कुशल बनाने के लिए तथा उनकी कमियों को दूर करने के लिए समय-समय पर कुछ आलोचनात्मक वाक्य बोलते हैं जो कि विद्यार्थी के जीवन की दिशा और गति दोनों में ही बदलाव लाते हैं। धन्य होते हैं वे विद्यार्थी जो इन आलोचनाओं में छिपे हुए मर्म को समझते हुए सत्कर्म की ओर अपना मार्ग प्रशस्त करते हैं और उपलब्धियों को प्राप्त करने का मार्ग सुगम बना लेते हैं।

व्यक्ति जीवन भर सीखने वाला सामाजिक प्राणी है। जो व्यक्ति सामाजिक पर्यावरण में प्राप्त हो रही आलोचनाओं को सुधारात्मक दृष्टि से देखता है। वह निस्संदेह अपने भीतर क्रांतिकारी परिवर्तन ले आता है। वह क्रांतिकारी परिवर्तन ना केवल उसे विविध आयामों की उपलब्धियाँ प्रदान करते हैं अपितु उसके व्यक्तित्व में अन्य लोगों को आकर्षित करने का गुण भी भर देते हैं। सामाजिक जीवन में आलोचनाओं को स्वीकार कर सुधार लाने वाला व्यक्ति- 'सर्वे भवंतु सुखिनः सर्व संतु निरामया सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कश्चित् दुख भाग्भवेत्' की पंक्तियों को अपने नैतिक जीवन में भी अपना लेता है; यह एकाकार उस व्यक्ति को सामाजिक जीवन की उपलब्धियों के साथ नैतिक जीवन एवं आध्यात्मिक जीवन की उपलब्धियाँ भी प्रदान करवा देती हैं।

आलोचना को स्वीकार करके व्यक्ति चुनौती को अपनाता है और यह चुनौती उसमें आत्मविश्वास को बढ़ाती है। बढ़ा हुआ आत्मविश्वास व्यक्ति को संघर्ष के लिए तैयार करता है एवं दूसरों पर निर्भरता कम करते हुए सतर्क करता है। उसके चिंतन में तार्किकता आने लगती है और यह तार्किकता उसे उपलब्धि की ओर लेकर जाती है। इस घटनाक्रम पर यदि हम विचार करें तो वास्तव में आलोचना और उपलब्धि एक दूसरे के मित्र दिखाई देते हैं। इसलिए यदि जीवन में आप की उपलब्धियाँ बढ़ रही हैं तो यकीनन आलोचनाएँ भी बढ़ेगी और यह आलोचना निश्चित रूप से आपको आगामी उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए प्रेरणा स्रोत बनेगी।

आलोचना से उपलब्धि के मार्ग में सबसे महत्त्वपूर्ण कारक होता है –

संकल्प की दृढ़ता– जो व्यक्ति अपने लक्ष्य के लिए उस संकल्प को मजबूत बना लेता है वह निश्चित रूप से आलोचनाओं से विचलित नहीं होता और उपलब्धि प्राप्त हो जाने पर अनावश्यक हर्षित नहीं होता। सम्यकता का यह भाव व्यक्ति को निश्चित रूप से विभिन्न प्रकार के संवेगों को एवं मनोभावों से सुरक्षित रखते हुए उपलब्धि पूर्ण लक्ष्य की ओर गतिमान रहने के लिए प्रेरित करता है।

आलोचनाओं को सहज स्वीकार करने वाला व्यक्तित्व निश्चित रूप से उस दशा को प्राप्त कर लेता है जिसे वर्णित करते हुए कबीर कहते हैं कि–

कबीरा खड़ा बाजार में, सबकी मांगे खैर।
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर।

तटस्थता का यह भाव नकारात्मक आलोचनाओं से बचाता हुआ, सकारात्मक आलोचनाओं में छिपे हुए ज्ञान व सीख को समझकर व्यक्ति सभी के प्रति समता का भाव रखता है एवं समत्व के इस भाव से उपलब्धियों के द्वार उसके लिए सदैव के लिए खुल जाते हैं।

उपलब्धियों के पिपासु व्यक्तियों के लिए आलोचना एक आहार की तरह होती है। यह हर व्यक्ति को ऊर्जावान बनाती है तथा वही ऊर्जा उससे उपलब्धियों के राजमार्ग पर आगे लेकर चलने का सामर्थ्य जगाती है। जो व्यक्ति आलोचनाओं से घबरा जाता है वह निश्चित रूप से कई उपलब्धियों से जुड़े हुए अवसरों को गंवा देता है। किसी शायर ने बहुत खूब कहा है कि जो लोग आलोचनाओं से घबराते रहते हैं, वह वास्तव में एक बहुत बड़े रोग से ग्रसित रहते हैं।

सबसे बड़ा रोग, क्या कहेंगे लोग– स्वामी दयानंद सरस्वती ने सामाजिक पुनरुत्थान और पुनर्जागरण के जिस मानवतावादी युग को प्रारंभ किया। उसके लिए उन्हें तत्कालीन समय

Rajasthan Education Department

में उस समाज से न जाने कितनी आलोचनाओं को सुनने और सहन करने का अवसर आया किंतु आर्य समाज की स्थापना और सत्यार्थ प्रकाश जैसे ग्रंथ की रचना के माध्यम से उनकी उपलब्धियाँ आज सैकड़ों वर्ष बाद भी समाज में जीवंत हैं। भगवान गौतम बुद्ध अष्टांगिक मार्ग की उद्घोषणा करते हुए सम्यक् ज्ञान से सम्यक् समाधि के जिस मार्ग पर हमें अग्रसर करते हैं। वह मार्ग वास्तव में आलोचनाओं को सुनने की क्षमता विकसित करने का ही मार्ग है जो हमें सांसारिक उपलब्धियों से परे की उपलब्धियों को भी प्राप्त करने की क्षमता जागृत करने का अवसर देता है।

आलोचना या समालोचना को स्वीकार कर स्वयं में सुधार लाने का प्रयास करने वाला व्यक्ति अपने चरित्र के महत्त्वपूर्ण गुणों को प्रदर्शित करता हुआ निश्चित रूप से उपलब्धि का वर्णन करता है। अतः हमें विद्यार्थी में वह दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए जो उसे आलोचनाओं को स्वस्थ मस्तिष्क से स्वीकार करते हुए उपलब्धियों की ओर अग्रसर करने के लिए तैयार करता है। विद्यालय में इसके बहुत सारे अवसर उपलब्ध होते हैं। जो दैनिक शिक्षण के साथ-साथ पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियों से भी जुड़े हुए हो सकते हैं। हमें उन स्थलों को खोजना चाहिए और विद्यार्थियों में समालोचनात्मक चिंतन का गुण विकसित करते हुए आलोचना को स्वीकार करते हुए उपलब्धियाँ प्राप्त करने हेतु सीख देनी चाहिए। यह स्थल क्रमशः- प्रार्थना सभा में विद्यार्थियों की समय पाबंदी, स्वच्छता और बेहतर प्रदर्शन को लेकर हो सकते हैं, वहीं दूसरी ओर वाद विवाद प्रतियोगिता के रूप में हो सकते हैं अथवा खेल के मैदान में विविध खेलों को खेलते हुए भी हो सकते हैं। लेखन शैली में सुधार, या उच्चारण क्षमता के कौशल विकास की ओर भी हो सकते हैं। छोटी-छोटी आलोचनाओं के यह अणुव्रत निश्चित रूप से विद्यार्थी को उपलब्धि का शिखर प्रदान करते हैं। आइए हम विद्यार्थियों में एक ऐसा भाव विकसित करें जहाँ वह उपलब्धियों का मूल स्रोत आलोचना को महसूस कर सके और उस आलोचना के सहारे अपने जीवन को नव निर्माण की ओर ले कर चल सके। जिसमें उसके अंतर्निहित शक्तियों के विकास के उत्तम अवसर मौजूद हो।

केशव विहार, साकेत नगर, रामगंज पुलिस थाने के पीछे, अजमेर (राज.)-305001
मो.न.: 9829249371

संस्कार युक्त हो विद्यालयी शिक्षा

❐ सन्जू शृंगी

शिक्षा वस्तुतः एक सतत् प्रवाह है जो विद्यार्थी जीवन को व्यवहारिकता और संप्रेषण कला से जोड़ता है। जहाँ कहीं इस संप्रेषण में कोई बाधा उत्पन्न होती है तो स्पष्ट हो जाता है कि कहीं ना कहीं जीवन मूल्यों और नैतिक आदर्शों को समुचित रूप से आत्मसात करने में कोई कमी रह गई है। शिक्षा मात्र एक डिग्री नहीं अपितु ज्ञान, दर्शन और नैतिक संस्कारों का अभीष्ट आकलन भी है। वर्तमान समय में यदि शिक्षा की निष्पत्ति चरित्र निर्माण या व्यक्तित्व निर्माण नहीं है तो वह शिक्षा त्रुटिपूर्ण और निरर्थक है।

संस्कार युक्त शिक्षा से तात्पर्य- संस्कार युक्त शिक्षा से तात्पर्य है कि शिक्षा सर्वतोमुखी और ग्राह्य हो जो विद्यार्थी को सहिष्णुता, ईमानदारी, दायित्व बोध, व्यापक दृष्टिकोण और सकारात्मक चिंतन की ओर प्रेरित करे। बालकों में पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त जीवन मूल्यों, श्रम निष्ठा, साहसिकता एवं उत्साह का समावेश करना ही संस्कार युक्त शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। गाँधी जी का इस संबंध में मत है कि "चरित्र विहीन शिक्षा एक विकृति है।" अतः यह कहना पूर्ण रूप से तार्किक होगा कि गाँधीजी भी व्यवहारिक शिक्षा के पक्षधर थे। शिक्षा का मूल उद्देश्य आत्मिक व बौद्धिक शक्तियों का विस्तार करके उसमें ज्ञान और चेतना का भाव जागृत करना है। ताकि बालकों की सुप्त अंतर्निहित योग्यताओं का सहज और स्वाभाविक विकास हो और वह समाज का एक सभ्य और सुसंस्कृत नागरिक बने।

संस्कार युक्त शिक्षा का प्रयोजन-आज हम निरंतर अपनी सभ्यता और संस्कृति से विलग होकर अव्यवस्थित और दूषित मानसिकता के शिकार होते जा रहे हैं। नवीन आस्थाओं और बुद्धिवाद ने मानवीय मूल्यों और आदर्शवादिता को विचलित कर मनुष्य को संवेदनहीन बना दिया है। अतः वर्तमान समय में शिक्षा का अर्थ मात्र सूचनाओं का आदान-प्रदान ही नहीं रह जाता अपितु शिक्षा का अर्थ प्रतिभा का असीम विस्तार और सहकारिता का उद्भव है। मानवीय मूल्यों और आदर्शों के अभाव में हमारा समाज आज पीड़ा, अनाचार, आतंक एवं व्यभिचार का सामना कर रहा है। इस भयावह स्थिति से मुक्ति पाने का एकमात्र उपाय है कि बालकों में प्रारंभ से ही नैतिक गुणों का आविर्भाव और समावेश किया जाए और तिरोहित हो रहे मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना की जाए।

कैसे दें संस्कार युक्त शिक्षा - आज के इस वैज्ञानिक और तकनीकी युग में संस्कार युक्त शिक्षा की परिकल्पना कठिन एवं दुष्कर अवश्य है परंतु असंभव नहीं। इस हेतु आवश्यक है कि प्रारंभ से ही बालकों में नवीन स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास हो और पुरानी जीर्ण-शीर्ण मानसिकता को खंडित और अस्वीकार किया जाए। इस उद्देश्य विहीन शिक्षा को उपयोगी और प्रामाणिक बनाने के लिए विभिन्न सहशैक्षिक गतिविधियों का संचालन किया जाए। कहा जाता है कि बालक की प्रथम पाठशाला उसका परिवार है अतः संस्कार और चरित्र निर्माण में परिवार की महती भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। परंतु विद्यालय भी परिवार का ही संशोधित स्वरूप है जहाँ उसे पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त व्यवहारिक और सकारात्मक शिक्षा का भी अर्जन करना होता है। इसके लिए सर्वप्रथम आवश्यक है कि सभी शिक्षक गण इस यथेष्ट की पूर्ति हेतु पूर्णतः समर्पित और कृत संकल्प हों। प्रत्येक विषय स्वयं में संपूर्ण होता है अतः प्रत्येक विषय अध्यापक बालक को अपने अपने विषय से संबंधित ज्ञान को अनूठे रूप में प्रदान कर उसमें वसुधैव कुटुंबकम् के उच्च आदर्शों को समाविष्ट करे। पर्यावरण विषय के माध्यम से बालकों में सहजीवन, सहअस्तित्व की भावना सहज ही जागृत की जा सकती है और विज्ञान विषय जिज्ञासा, परोपकार और उदारवादिता का पाठ पढ़ाता है। पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त बालकों में सरलता और सहिष्णुता समन्वित कर उसके हृदय में सत्यम् शिवम् सुंदरम् का दृष्टिकोण विकसित करना ही शिक्षा और शिक्षक का मूल उद्देश्य है।

संस्कार युक्त शिक्षा का महत्त्व- वर्तमान शिक्षा मात्र भुलावा ना हो और भावी पीढ़ी को दिग्भ्रमित ना करें, इस हेतु संस्कार युक्त शिक्षा नव आयाम स्थापित कर सकती है। आज शिक्षा को नए प्रयोगों, नए अनुसंधानों और उपकरणों की आवश्यकता है जो बालकों के भीतर केवल सजावट नहीं अपितु बनावट का निर्माण करें। बालकों का केवल बौद्धिक विकास ही पर्याप्त नहीं बल्कि आध्यात्मिक विकास, नैतिक विकास और उसके अंतःकरण का विकास भी महत्त्वपूर्ण है। आचरण हमारे नैतिक चरित्र की प्रयोगशाला है जो छात्रों को सुसंस्कृत और तेजस्वी बनाकर उनके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाती है। संवेदनशील और अनुशासित विद्यार्थी समाज के स्वस्थ विकास में निःसंदेह महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। एक सुखी, भयमुक्त सामाजिक वातावरण और एक उदार और मजबूत राष्ट्र के लिए भी संस्कार युक्त शिक्षा अति आवश्यक है।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रोझाना, डग, झालावाड़ (राज.)

मानवीय जीवन और सामाजिक संबंधों का समुच्चय है समाज

❒ बुलाकी शर्मा

हम पूरे विश्वास से स्वयं को सोशल यानी सामाजिक कहते रहे हैं किंतु वास्तव में हम कितने सामाजिक है, इस पर विचार कम ही करते हैं। समाज को सामान्यत: 'मनुष्य की समष्टि' अर्थात 'व्यक्तियों का समूह' समझा जाता है। मैकाइवर, पेज आदि समाजशास्त्रियों ने समाज को सामाजिक संबंधों का जाल कहा है। तात्पर्य यह कि समाज मात्र व्यक्तियों का समूह नहीं है वरन उनके मध्य सामाजिक संबंधों का आधार रहना आवश्यक है। सामाजिक संबंध से अभिप्राय एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के साथ संबंध से है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के अस्तित्व को ध्यान में रखते हुए आचरण करता है। व्यक्ति का यह आचरण ही समाज के आविर्भाव का मूलाधार है।

वैसे देखा जाए तो पशु और व्यक्ति के मध्य विभेद का मूलाधार भी उसका आचरण ही है। व्यक्ति और पशु के दैनिक जीवन में अनेक समानताएं लक्षित होती है। भोजन, शयन आदि दोनों करते हैं। मानव की ही भांति पशु अपना हित -अहित अच्छी तरह समझता है। गोस्वामी तुलसीदास ने कहा भी है -'हित अनहित पशु पक्षिहु जाना।' ऐसे में स्पष्ट है कि पशु और व्यक्ति के मध्य विभेद रेखा है उसका आचरण। वह ज्ञान प्राप्त करके अपने को संस्कारित करता है और उसका आचरण समाज के हित और कल्याण में सन्निहित होता है। तब ही तो समाज को ऐसा संगठन माना गया है जो व्यक्ति के आचरण का नियमन और पथ प्रदर्शन करता है। सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य समाज से पूर्णत: जुड़ा हुआ है। उसका हित, कल्याण, उन्नति पूर्णतः समाज पर निर्भर है। अतः जहाँ मानवीय जीवन है, वहाँ सामाजिक संबंध हैं और जहाँ सामाजिक संबंध है, वहाँ ही समाज का अस्तित्व है। ऐसे में कह सकते हैं कि व्यक्ति समाज की केंद्रीय इकाई है इसलिए समाज में रहकर वह जैसी क्रियाएँ करेगा, उसके संबंध वैसे ही स्थापित होंगे। तात्पर्य यह कि मानवीय जीवन और सामाजिक संबंध का समुच्चय है समाज।

गीता में कहा गया है- 'आत्मवत् सर्वभूतेषु य: पश्यति स: पंडित:' अर्थात जो मनुष्य समस्त संसार को अपनी आत्मा के समान समझता है वही पंडित यानी ज्ञानी है। जब सभी अपनी आत्मा है, अपने ही हैं फिर किसके साथ प्रतिहिंसा और कैसा प्रतिशोध? इस भाँति के विचार आत्मसात करने से हमारी आत्मिक शुद्धि होती है और हमें सच्चे सुख और शांति की अनुभूति होती है।

जिस व्यक्ति में सामाजिक चेतना है यानी सामाजिक कार्यों के प्रति अभिरुचि है, सही मायने में वही सामाजिक प्राणी और समाज की केंद्रीय इकाई है। चेतना, चेतन मानस की वह शक्ति है जो आंतरिक और बाह्य तत्त्वों, वस्तुओं, विषयों, व्यवहारों का ज्ञान अनुभव कराती है। चेतना को उस ज्ञानात्मक मनोवृत्ति, ज्ञानात्मक दृष्टिकोण अथवा विवेक शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है जो मनुष्य को आंतरिक और बाह्य तत्वों को देखने, समझने, सुनने अथवा उनके प्रति जागरूक होने की क्षमता प्रदान करती है। 'चेतना' मनुष्य को उचित और अनुचित का अभिज्ञान कराती है जिससे उसकी निर्णय शक्ति निर्मित और विकसित होती है। मन और आत्मा की गुत्थी को सुलझाने और खोलने, जीवन के प्रति आस्था, उन्नति के लिए आकांक्षा, गंतव्य के निर्धारण की क्षमता, संकल्प की पूर्ति चेतना शक्ति द्वारा ही संभव है।

सामाजिक चेतना मानवीय चेतना का सामाजिक रूप है। समाज ऐसी नियामक संस्था है जो सभी के हित और संपूर्ण विकास के लिए निर्मित हुई है तथा चेतना वह ज्ञानात्मक दृष्टिकोण अथवा मनोवृति है जो मनुष्य को आंतरिक और बाह्य तत्वों के प्रति जागरूकता प्रदान करती है। कह सकते हैं कि सामाजिक चेतना से तात्पर्य सामाजिक जागरूकता से है। जब समाज मनुष्य के प्रति अपने भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, राजनीतिक आदि कर्त्तव्यों का निर्वहन नहीं कर पाता तब समाज में अज्ञानता, शोषण, अंधविश्वास, बाह्य आडंबर, रूढ़ियाँ, आर्थिक विषमता, छुआछूत, वर्ण-वर्ग भेद, राजनीतिक- सांस्कृतिक- नैतिक हनन, मानवता का ह्रास आदि अनेकानेक राग-द्वेष उत्पन्न हो जाते हैं। इनकी क्रिया-प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न भावात्मक, ज्ञानात्मक और क्रियात्मक परिवर्तनों की संपूर्ण चेतना ही सामाजिक चेतना है।

सामाजिक चेतना की उत्पत्ति अनुभव के आधार पर होती है। विचार, विवेक, विज्ञान मनुष्य को समाज की विसंगतियों के प्रति चेतना संपन्न बनाते हैं। मनुष्य अपने भौतिक धरातल पर अच्छे और बुरे के प्रति अपनी क्रिया- प्रतिक्रिया व्यक्त करता है, वही व्यक्ति- चेतना है। वैयक्तिक स्तर पर उत्पन्न चेतना का विस्तार सामाजिक स्तर पर हो जाता है तब वह सामाजिक चेतना कहलाती है। सामाजिक संदर्भ में सामाजिक चेतना के मानदंड सामाजिक विसंगतियों, वैवाहिक समस्याओं, धार्मिक मिथ्याचारों का विरोध, रूढ़ियों का प्रतिरोध, कलुषित नैतिकता के प्रति आक्रोश आदि है। कह सकते हैं कि सामाजिक चेतना से युक्त मनुष्य उदात्त भावना के साथ सर्वजन हिताय कार्य करता है। सब के उत्थान, विकास और कल्याण का भाव उसमें सन्निहित रहता है। ऐसा चेतना संपन्न व्यक्ति, गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में कहें तो सबसे बड़ा धर्म परोपकार को मानता है- परहित सरिस धर्म नहिं भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई।

वह परहित यानी परोपकार को सर्वोपरि धर्म मानते हुए सबके हित के लिए समर्पित भाव से कार्य करता है। 'स्व' और 'पर' का विभेद ही सांसारिक उलझन है। हम अधिकांश कार्य 'स्व' यानी अपने लिए करते हैं किंतु जब 'स्व' की संकीर्ण मनःस्थिति से मुक्त होकर 'पर' यानी अन्य के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने को तत्पर हो जाते हैं, सही अर्थों में तब ही हम सामाजिक चेतना संपन्न बनते हैं। कवि रहीम ने भी कहा है-

'यों रहीम सुख होत है, उपकारी के संग।
बांटन बारै के लगे ज्यों मेहंदी को रंग।'

परोपकार से हमें आत्मिक सुख, संतोष और शांति का अनुभव होगा। सामाजिक कार्य मांगलिक भावना से युक्त, स्वार्थ रहित, सर्वजन हिताय होते हैं, जिन्हें सच्चिदानंद स्वरूप माना गया है जिनमें सत्, चित्त और आनंद विद्यमान हैं। सत् अर्थात सामाजिक यथार्थ, चित्त अर्थात श्रेष्ठतम के चयन का विवेक और आनंद अर्थात आत्मलिप्सा रहित सामूहिक जनकल्याण की भावना। सत्, चित्त और आनंद की भावना से ओतप्रोत होकर कार्य करना ही सही मायने में हमारा सामाजिक होना है।

सीताराम द्वार के सामने, जस्सूसर गेट के बाहर, बीकानेर (राज.)-334004
मो.न.: 9413939900

सद्प्रयासों व संघर्ष का परिणाम है सफलता

❐ सीताराम गुप्ता

29 दिसंबर, सन् 2022 को महान फुटबॉल खिलाड़ी पेले का निधन हो गया। खेल जगत के लिए यह एक बहुत बड़ी क्षति है। फुटबॉल में पेले की उपलब्धियों को देखते हुए पेले को सफलता का पर्याय कहा जा सकता है। उनके निधन पर एक समाचार पत्र में पेले से संबंधित आलेख से पहले सफलता के विषय में उनका एक कथन उद्धृत किया गया था जिसका पहला वाक्य था- सफलता कोई दुर्घटना नहीं है। यह उनके द्वारा कहे गए वाक्य 'सक्सेस इज़ नो एक्सिडेंट' का हिंदी अनुवाद है। एक्सिडेंट का एक अर्थ दुर्घटना भी होता है लेकिन हिंदी भाषा में सफलता के संदर्भ में एक्सिडेंट का अर्थ दुर्घटना लिखना उचित नहीं कहा जा सकता। एक्सिडेंट एक अनेकार्थक शब्द है जिसके अर्थ हैं दुर्घटना, हादसा, वारदात, इतेफाक, संयोग, अप्रत्याशित अथवा आकस्मिक घटना आदि। संयोग अथवा अप्रत्याशित घटना को दुर्घटना नहीं कहा जा सकता। सफलता के संदर्भ में तो बिलकुल नहीं क्योंकि सफलता एक सकारात्मक, उत्साहजनक व प्रसन्नतादायक स्थिति है जबकि दुर्घटना एक निराशाजनक स्थिति है। सफलता ही नहीं असफलता को भी दुर्घटना नहीं कहा जा सकता क्योंकि असफलताएँ भी सफलता का मार्ग ही प्रशस्त करती हैं।

सफलता वास्तव में क्या है? सफलता सकारात्मक उदात्त जीवन मूल्यों का समुच्चय है जो दुर्घटना तो छोड़िए आकस्मिक अथवा अप्रत्याशित घटना भी नहीं हो सकती। सफलता के लिए अपेक्षित सकारात्मक उदात्त जीवन मूल्यों व कुशलताओं को विकसित किया जाता है। सफलता संघर्ष का ही दूसरा नाम है क्योंकि बिना संघर्ष के सफलता असंभव है। जिसके लिए हमने कभी कोई संघर्ष ही नहीं किया उसे सफलता कैसे कह सकते हैं? हम किसी उपहार अथवा अनुदान को अपनी सफलता नहीं कह सकते। सफलता के विषय में पेले आगे कहते हैं- ''इट इज़ हार्ड वर्क, पर्सिविरेंस, लर्निंग, स्टडिंग, सैक्रिफ़ाइस एंड मोस्ट ऑफ़ ऑल, लव ऑफ़ वाट यू आर डूइंग ऑर लर्निंग टु डू।'' ये कठिन परिश्रम, अध्यवसाय, प्रशिक्षण, अध्ययन, त्याग और सबसे बढ़कर, आप जो कर रहे हो अथवा सीख रहे हो, उससे प्यार करना है। क्या कोई दुर्घटना कठिन परिश्रम, अध्यवसाय, प्रशिक्षण, अध्ययन, त्याग और प्यार जैसी क्रियाओं का परिणाम हो सकती है? कदापि नहीं। यदि परिश्रम की बात करें तो बिना कठिन परिश्रम के सफलता असंभव है। एक खिलाड़ी को ही लीजिए बिना पर्याप्त अभ्यास के कोई खिलाड़ी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

एक खिलाड़ी अत्यंत कठिन परिश्रम करता है तभी सफलता प्राप्त करता है। जीवन भर साधना करने के उपरांत ही कोई योग्य अथवा महान संगीतकार या कलाकार बन पाता है। अब प्रश्न उठता है कि हम साधना अथवा परिश्रम क्यों और कब करते हैं? साधना अथवा परिश्रम भी हम तभी करते हैं जब हमने कुछ पाने का संकल्प लिया हो। तो सफलता के लिए दृढ़ संकल्प भी अनिवार्य है। संकल्प भी कोई अप्रत्याशित घटना अथवा संयोग नहीं हो सकता। संकल्प भी हमारा स्वयं का चुनाव होता है। सही संकल्पों और उन पर डटे रहने के कारण ही हम सफलता की ओर अग्रसर होते हैं। शिवसंकल्प सूक्त में कहा गया है कि तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु। यजुर्वेद के चौंतीसवें अध्याय में छह मंत्र मिलते हैं जिन्हें शिवसंकल्प सूक्त के नाम से जाना जाता है। इन मंत्रों में मन की विशेषताएँ बतलाने के साथ-साथ हर मंत्र के अंत में प्रार्थना की गई है-'तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु' अर्थात् ऐसा हमारा मन शुभ संकल्पों वाला हो। शुभ संकल्प से तात्पर्य सकारात्मक सोच व कल्याणकारी संकल्प से ही है। आजकल जिस सकारात्मक सोच को विकसित करने की बात की जाती है वे वास्तव में शुभ संकल्प ही होते हैं। इसलिए हमारे संकल्प शुभ अर्थात् सकारात्मक हों।

हम जैसे भी संकल्प लेते हैं उन्हीं के अनुसार सफलता व असफलता मिलती है इसलिए संकल्पों का सही होना और उन पर दृढ़ रहना दोनों बातें अनिवार्य हैं। किसी भी कार्य की सफलता में संकल्प के साथ-साथ अध्ययन और प्रशिक्षण का बहुत अधिक महत्त्व होता है। निरंतर अध्ययन द्वारा ही हम नई-नई चीज़ें सीखते हैं और उनके द्वारा संसार की जानकारी प्राप्त करके जीवन में आगे बढ़ते हैं। अध्ययन अथवा स्वाध्याय के साथ-साथ प्रशिक्षण का भी बहुत अधिक महत्त्व है। उचित प्रशिक्षण के अभाव में हम कुछ चीज़ें सीख ही नहीं सकते। यदि हम तैरना सीखना चाहते हैं तो उसके लिए अध्ययन नहीं प्रशिक्षण अनिवार्य है। इसी प्रकार से यदि हम खेल अथवा अन्य क्रिया-कलापों की बात करें तो उनके लिए प्रशिक्षण व नियमित रूप से अच्छा प्रशिक्षण भी अनिवार्य है। उचित प्रशिक्षण के अभाव में कार्यों में उत्कृष्टता प्राप्त करना असंभव है और उत्कृष्टता कोई संयोग अथवा अप्रत्याशित रूप से घटित होने वाली घटना नहीं होती। एक खिलाड़ी, कलाकार अथवा रचनाकार निरंतर अभ्यास और प्रशिक्षण के द्वारा ही उत्कृष्टता और उत्कृष्टता से सफलता प्राप्त कर महान बन पाता है।

जीवन के अन्य क्षेत्रों में ही नहीं सफलता में भी त्याग का बहुत महत्त्व होता है। अच्छे स्वास्थ्य अथवा रोगमुक्ति के लिए कई बार हमें अपनी पसंदीदा खाने-पीने की चीज़ों को त्यागना पड़ता है। दिनचर्या अथवा जीवनचर्या में परिवर्तन करके सुख-सुविधाओं का त्याग करना पड़ता है। इसी प्रकार से आराम का त्याग किए बिना हम कठिन परिश्रम नहीं कर सकते। एक खिलाड़ी को नियमित रूप से व्यायाम व खेल का अभ्यास करना पड़ता है। एक संगीतकार को

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

नियमित रूप से घंटों रियाज़ करना होता है। जब हम किसी महान उद्देश्य के लिए समर्पित हो जाते हैं तो हमें आराम का ही नहीं निरर्थक बातों का भी त्याग करना पड़ता है। हमें बहुत सारी चीजें और कार्य पसंद होते हैं। यदि हम केवल अपनी पसंद के कार्यों अथवा कम महत्त्वपूर्ण व बेकार की बातों में ही समय नष्ट करते रहेंगे तो हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपेक्षित कार्य करने का समय कैसे मिल पाएगा? हम व्यस्त रहें लेकिन उपयोगी व सार्थक क्रिया-कलापों में। हम बहुत कुछ और बहुत अच्छा कर सकते हैं लेकिन तभी जब हम सब कुछ करने का विचार त्याग दें। इसके लिए कुछ प्राथमिकताएँ निश्चित करना अनिवार्य है और सबसे महत्त्वपूर्ण बात ये है कि हम जो कर रहे हैं उससे प्यार करें न कि उसे बोझ समझें।

प्यार के अभाव में तो हमारे आपसी संबंध भी बोझ बनकर रह जाते हैं। एक सात-आठ साल की कमज़ोर और दुबली-पतली लड़की अपने से दो-एक साल छोटे एक हष्ट-पुष्ट बच्चे को गोद में उठाकर तेज़ी से चली जा रही थी। एक राहगीर ने जब ये देखा तो उसने उत्सुकतावश लड़की से पूछा, ''बेटा इतना बोझ उठा कर भी तुम इतनी तेज़ी से कैसे चल लेती हो?'' 'बोझ नहीं ये मेरा भाई है,' लड़की ने राहगीर को जवाब दिया और ख़ुशी-ख़ुशी अपने मार्ग पर आगे बढ़ गई। वस्तुत: जिस व्यक्ति, वस्तु अथवा कार्य को हम मन से प्यार करते हैं, वह हमें बोझ नहीं लगता। सफलता के लिए भी अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित होना और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले प्रयासों से प्यार करना अनिवार्य है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले प्रयासों अथवा कार्यों से प्रेम करना भी आकस्मिक घटना नहीं अपितु इसे विकसित व अर्जित किया जाता है। इन सब बातों को जीवन में उतारने पर ही हम सफलता की ओर अग्रसर हो सकते हैं इसमें संदेह नहीं। सफलता किसी भी प्रकार का शॉर्टकट, संयोग अथवा दुर्घटना नहीं अपितु व्यक्ति द्वारा किए गए सद्प्रयासों, त्याग, संघर्ष व प्रतीक्षा का सुखद परिणाम है।

ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,
दिल्ली-110034
मो.न.: 9555622323

दयनीय स्थिति : बदलाव अपेक्षित है

❐ **प्रदीप कुमार पारीक**

कुपोषित शरीर, पीली आँखें, खुरदरा बदन, सूखे बाल, मिट्टी से सने हुए बदन पर फ़टे पुराने वस्त्र मानो सारी विपरीत परिस्थितियां इनसे रूबरू होने के लिए आतुर हो। खुले आसमान के नीचे बसेरा, आज यहाँ, कल का पता नहीं। शाम होते ही पिता शराब के नशे में, माता-पिता का आपस में झगड़ा, न खाने पीने का प्रबंध। नहाना धोना तो यहाँ त्योहार की तरह होता है।

जी हाँ मैं बात कर रहा हूँ राजस्थान में निवास करने वाले घुमंतू बागरिया समुदाय के बच्चों की इन बच्चों को विद्यालय से जोड़ना हमारे लिए टेढ़ी खीर साबित हुआ है। कई बार अभिभावकों का पलायन हो जाता है तो कई बार प्राकृतिक कारण इन्हें विद्यालय आने से रोक देते हैं। सामान्य से दिखने वाले बालकों के सामने जन्म से असामान्य सी परिस्थितियाँ विद्यमान है। अपनी रुचि का कोई अवसर इनके पास नहीं है। इनका जन्म तो होता है, लेकिन जीवन नहीं पाते। कई बार उनके निवास स्थान जिनको डेरा कहा जाता है, वहाँ जाने का अवसर प्राप्त हुआ। ये लोग, गाँव से एक-दो किलोमीटर दूर सुरक्षित स्थान पर रहते हैं। जब हमारा वहाँ जाना हुआ तो हमें भी ये संदेह की दृष्टि से ही देख रहे थे। जब हमने अपने आने की वजह बताई और विद्यालय का हवाला दिया तो इन्हें विश्वास ही नहीं हुआ क्योंकि विद्यालय के अध्यापक तो क्या साधारण व्यक्ति भी इनके डेरे में नहीं आता है। जब विद्यालय इनके अभिभावकों से बच्चों को विद्यालय में भेजने के लिए आग्रह करता है तो ये सहसा बोल पड़ते हैं। गुरुजी, क्या मिलेगा? ऐसे बालक जब विद्यालय में आते हैं, तो अन्य बालकों के लिए हास्य का पात्र होते हैं। सोचिए सामान्य बालकों के साथ स्वयं को समायोजित करना कितना कठिन होता होगा।

राज्य सरकार के वांछनीय दस्तावेजों का अभाव लिए ये बच्चे दर बदर होने को विवश है। इनका बचपन कब आता है, कब निकल जाता है इसकी भनक तक नही लगती। जब इनको विद्यालय से जोड़ने का प्रयास किया गया तो बालकों और विद्यालय दोनों के पास विकट परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गई। माता-पिता बालकों से प्रायः मजदूरी करवाते हैं। जिसमें खेतों के काम ज्यादातर शामिल है। इनसे घर वालों को थोड़ी आमदनी हो जाती है और बच्चों को विद्यालय से मुक्ति। इनके माता-पिता भी इतने शिक्षित नहीं कि वे बच्चों के लिए विद्यालय का महत्त्व समझ पाए।

जब मैंने एक बालक से पूछा कि बेटे तुम नहाकर क्यों नहीं आते? तो बालक का जवाब सुन मैं स्वयं स्तब्ध था। बालक का जवाब था कि हमारे पास पानी ही नहीं है, हम पीने के लिए पानी 2 किलोमीटर दूर से लाते हैं। ऐसे में नहाने के लिए पानी कोढ़ में खाज सा प्रतीत होता है।

यह समुदाय बालिकाओं के जन्म पर प्रसन्न तो अवश्य होता है लेकिन यह प्रसन्नता उनके निजी स्वार्थ के लिए होती है। क्योंकि बालिका के व्यस्क होने पर मनमाफिक कीमत लेकर उसका सौदा एक शादी के रूप में कर दिया जाता है। अपने घर की बेटियों का तो परायों की तरह पालन-पोषण करते हैं और व्यस्क होने पर शादी के रूप में उसका सौदा कर देते हैं। इनके माता-पिता भौतिक सुख-सुविधाओं पर ध्यान नहीं देते।

भामाशाह इनका हर प्रकार से सहयोग करने के लिए तत्पर है लेकिन बालक है कि विद्यालय से मोह कर ही नहीं पाते। राज्य सरकार की महत्त्वाकांक्षी योजनाएँ इनकी अज्ञानतावश इनके जीवन का आधार नहीं बन पाती है।

मन करता है कि चौबीस घंटे इन्हें विद्यालय में ही रखा जाए इन्हें आत्मिक लगाव के साथ स्नेह दिया जाए। अब इन बच्चों को हमें बालक होने का अहसास कराना होगा। यदि भारत में बालकों का एक वर्ग शिक्षा, स्वास्थ्य और सामान्य सुविधाओं से वंचित रह जाएगा तो विश्व पटल पर भारत को उच्च वरीयता प्राप्त करने में बाधाएँ उत्पन्न होगी। वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा भी मिथ्या प्रतीत होगी। इनको मुख्यधारा में लाना होगा और तुलसीदास जी की यह उक्ति चरितार्थ करनी होगी।

परहित सरिस धर्म नहिं भाई,
परपीड़ा सम नहीं अधमाई।

अध्यापक लेवल प्रथम
राजकीय प्राथमिक विद्यालय मालियों की ढाणी पांचवा,
कुचामन सिटी, नागौर (राज.)
मो.न.: 9001127500

Rajasthan Education Department

भारतीय महिलाओं का प्रभुत्व

❒ राकेश ढाका

प्राचीनकाल से देखें तो हम पाएँगे कि नारी सदैव पूजनीय रही है उसको आदर मिला है तिरस्कार नहीं, सम्मान मिला है अपमान नहीं क्योंकि परिवार में पुरुष के समान महिला भी उतनी ही सहयोगी है। हमारे पुरखों ने तो यहाँ तक कह दिया था कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' अर्थात जहाँ नारी पूज्य है, उसका मान सम्मान होता है, ऐसे घर में देवता भी रमण करने को लालायित रहते हैं। महिलाओं का काम चूल्हे-चॉकी व पानी लाने तक सीमित नहीं है। घर की चारदीवारी में कैद रहकर जीवनयापन करने की मजबूरी नहीं है आज आवश्यकता से समझे, साक्षर बनें, बराबरी का हक समझें तथा परम्पराओं, लोकाचारों को तोड़ दें, अंधविश्वास से नाता तोड़ लें। बिना साक्षर हुए आज की नारी समाज में अपना वर्चस्व कायम नहीं रख सकती। अनपढ़ नारी में झिझक होती है, कुछ नया करने, समझने की प्रवृति में पीछे रहती है।

सृष्टि के रचयिता ने भी महिलाओं को वर्चस्व प्रदान किया है, ऐश्वर्य व वैभव लुटाया है, कौमार्या एवं माधुर्य संजोया है, आकर्षक सुषमा और सौन्दर्य का ताज पहनाया है, शक्ति और भक्ति का ताना बाना बुना है। हमारे देवगण उतने शक्ति सम्पन्न नहीं जितनी देवियाँ है। धन की देवी लक्ष्मीजी, विद्या की देवी सरस्वतीजी, शौर्य की प्रतिमा दुर्गाजी इत्यादी शक्ति सम्पन्न देवियाँ है। इनकी भक्ति करनी आवश्यक है। माँ वैष्णों ने भैरव का वध किया। राम-रावण युद्ध के दौरान श्रीराम ने आदिशक्ति की आराधना की। बिना भवानी कृपा के कोई योद्धा विजयी नहीं हो पाया। सती सावित्री, पतिव्रता अनुसुइया की कोई बराबरी नहीं कर पाया क्योंकि महिला में सत्यं शिवं सुन्दरं का भाव होता है व प्रतिमूर्ति होती है। हमारा समाज पुरुष प्रधान है इसलिए महिलाओं को या तो देवी बनाकर पूजता है या दासी बनाकर रखता है किन्तु उसे बराबरी का दर्जा देने में हिचकता है। समता का पलड़ा कभी बराबर रहता ही नहीं। या तो महिला बहुत सुखी है, ऐश-आराम की धनी है या फिर घर के चक्रव्यूह में फंसी हुई है, दु:खी है। बराबर तो केवल कुछ क्षणों के लिए रहती है। प्राचीन काल में हमारे शिक्षा केन्द्रों में नालंदा व तक्षशिला में, नवदीप व विक्रमशिला में कितनी महिलाओ नें ज्ञानार्जन करने का अवसर पाया। हाँ, कुछ ऋषि आश्रमों में थोड़ी बहुत शिक्षा अर्जित कर ली, किन्तु उस समय में गार्गी और मैत्रेयी जैसी महाविदुषी मातृशक्तियों को हम विस्मृत नहीं कर सकते हैं। हमारा देश गाँवों का देश है, कृषि प्रधान देश है, यहाँ की आत्मा गाँवों में बसती है क्योंकि देश की एक अरब आबादी में से आज भी 70 करोड़ लोग गाँवों में बसते हैं।

महिला नीति के तहत ग्राम सभाओं के साथ-साथ महिला ग्राम सभाओं के भी आयोजन किए जा रहे हैं ताकि गाँव में प्राकृतिक संसाधनों, पर्यावरण एवं अन्य प्रबंधन में उनकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके महिलाओं की सत्ता में भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से आरक्षण कोटा बढ़ा दिया गया है। ऐसा करने से समाज में, परिवार में महिलाओं का वर्चस्व, दबदबा बढ़ा है वे पुरुषों से आगे निकल रही है काम के मामले में साफ व स्वच्छ प्रशासन में।

हमारे समाज में महिला पुरुष का दायित्व बंटा हुआ है किन्तु जीवन के चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में स्त्री की सहभागिता परमावश्यक है कोई भी धार्मिक यज्ञ, अनुष्ठान आदि में स्त्री की उपस्थिति जरूरी है इंसान अर्थ इसीलिए जुटाता है कमाता है, पसीना बहाता है कि परिवार का जीवनयापन हो जाए सुखी जीवन जीने के लिए महिला-पुरुष परस्पर सहयोग समर्पण भाव सामंजस्य का होना जरूरी है। आजादी के समय से पहले की बात करें तो हम देखेंगे कि भारतीय महिलाओं ने ऐसे कार्य कर दिखाए जिन्हें हम भुला नहीं सकते हैं। मध्यकाल में रजिया सुल्तान ने देश की बागडोर संभाली, नूरजहां ने जहांगीर को नजर अंदाज करके शासन चलाया, मुमताज महल ने अपने प्रेम की अनुपम सौगात ताजमहल का शाहजहां से निर्माण करवाया, भक्ति रस की अनन्य साधिका मीरा बाई ने अपनी पहचान बनाई, माता जीजाबाई ने अपने विवेक व कौशल से छत्रपति शिवाजी के व्यक्तिव को संवारा, स्वाभिमान व देश प्रेम को सिंचित किया। अपनी महकती सांसों से, शौर्य और तेजस्विनी की धरोहर लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के खिलाफ जंग लड़ी। अमर शहीद वीरांगना का गौरव हासिल किया। 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।' प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 में अवध की बेगम हजरत महल ने क्रांतिकारी बाना पहन कर भाग लिया, अनुपम सौन्दर्य की स्वामिनी महारानी पद्मिनी ने जौहर में इहलीला समेट दी किन्तु अलाउद्धीन खिलजी की घृणित आंकाक्षाओं को साकार नहीं होने दिया। पन्ना धाय के त्याग व बलिदान से आँखें डबडबा जाती है। चांदबीवी के शौर्य की गाथा उत्साह भरती है। महिलाओं ने बुद्धि, बल, त्याग और शक्ति के क्षेत्र में कीर्तिमान बनाए है। घर को संवारा भी है तो उसकी रक्षा भी की है, सिंहनी जैसी वीरता भी दिखलाई है तो साध्वी बन कर ज्ञान गंगा प्रवाहित की है। सत्यं शिवं सुन्दरं की त्रिवेणी बनी है। संस्कृति व मर्यादा का पालन किया है, श्रेष्ठता का परचम लहराया है। आजादी के बाद महिलाओं में नवचेतना आई है। अब महिलाओं का हर क्षेत्र में प्रभुत्व व वर्चस्व बढ़ा है। जीवन की हर गतिविधि से लेकर प्रत्येक क्रियाकलाप में महिलाएँ आगे आई है। शिक्षा, चिकित्सा या सुरक्षा हो, घर प्रबंधन हो, व्यवहार दफ्तर हो या परिवार, विज्ञापन हो या कारोबार, राजनीति हो या नीति धर्म का क्षेत्र महिला हर जगह व्याप्त है। प्रभुत्व के साथ कायम है। आज उनकी सहभागिता से चहुँओर समृद्धि, हरियाली व खुशहाली नजर आ रही है।

स्वाधीनता के समय नागालैण्ड की रानी गदनलिओं ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का बिगुल बजाया। वहीं सुभाष बोस की आजादी हिंद फौज की महिला टुकड़ी की कमान लक्ष्मी सहगल ने संभाली। आजादी के पश्चात सरोजिनी नायडू ने अहम भूमिका निभाई। एनीविसेंट ने समाज सेवा तथा मदर टेरेसा ने दूसरों के जीवन को सुंदर बनाने में अपना सम्पूर्ण जीवन खपा दिया। उन्होंने गरीबों, पीड़ितों, असहायों और कोढ़ियों की उम्रभर हंसते हुए

Rajasthan Education Department

सेवा करने वाली महिला सफल निष्काम नारी का दायित्व निभाया। विजयलक्ष्मी पंडित ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर भारत का गौरव बढ़ाया। इंदिरा गाँधी, प्रतिभा पाटिल, द्रोपदी मूर्मू ने राजनीति के क्षेत्र में विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाई व देश का कुशल नेतृत्व किया।

जीवन के हर क्षेत्र में आज महिलाओं का वर्चस्व बढ़ रहा है। राजनीति में अनेक महिलाएँ प्रभुत्व जमाए बैठी है। आज महिलाएं बौद्धिक रूप से बराबर क्षमता रखती है। संविधान में भी महिलाओं को बराबरी के अधिकार दिये गये है। शिक्षा के माध्यम से उसे आर्थिक रूप से सशक्त किया जाना चाहिए। इससे अनेक समस्याओं का समाधान निकलेगा। जो महिलाएं कम शिक्षित है उन्हें कुछ प्रशिक्षण देकर स्वावलम्बी बनाया जाए। इन प्रयत्नों से महिलाओं को आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। नारी शक्ति के सशक्तिकरण से ही राष्ट्र की समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होगा। साहित्य में लेखिका, संपादक, कलाकार है चूल्हे से लेकर गृहस्थ प्रबंधन से सरोकार है। संत्री से मंत्री तक, एम.एल.ए. से एम.पी. तक, पी.ए. से सेक्रेटी तक, राज्यपाल से राष्ट्रपति तक है वह कारोबार, कम्प्यूटर, व्यापार, विज्ञापन, मॉडलिंग, पर्यटन के क्षेत्र में तैनात है। कार्यालयों में बाबू से चेयरमैन तक एवं कर्मचारी से अधिकारी तक कार्यरत है। वह शासन में, प्रशासन में, सुरक्षा-अनुशासन में, शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षिका, अध्येता सभी कुछ है। भारतीय एवं राज्य प्रशासनिक सेवाओं में तैनात है। पत्रिकाओं का संपादन, समाचारों का संचयन, दूरदर्शन पर समाचारों का वाचन कर रही है। खेल, प्रेस, प्रेम, सौन्दर्य प्रतियोगिता, पत्रकारिता में आगे है। जीवन संगिनी है, निर्मात्री है, नायिका, सितारा, एयर होस्टेस, उड़नपरी, विश्वसुंदरी है। आज महिलाएँ जागरूक हो रही है हर क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित कर रही है। साक्षर बनने मे होड़ मंची है, वास्तव में आज महिलाओं का पूर्ण वर्चस्व व प्रभुत्व बढ़ रहा है। जीवन में हर ओर सकारात्मक नजरिए के साथ सुखद स्थिति है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मारिगसर,
झुंझुनूं (राज.) **मो. न.: 9413547530**

नेतृत्व का परमादर्श - रानी लक्ष्मी बाई

❐ पुष्पा यादव

'रानी भी क्या रानी थी-काठ को हाथ लगाती तो फौलाद बन जाता, मिट्टी को हाथ लगाती तो सोना बन जाता-ऐसी परम श्रद्धा जिस पर थी, रण रागिनी, स्वातंत्र्य लक्ष्मी, रानी लक्ष्मीबाई-भारत की जोन ऑफ आर्म जैसे गीत जिसके लिए हर भारतीय के दिल से गाए जाते हैं, कविताएँ लिखी जाती हैं, साहस, शौर्य, पराक्रम, वीरता, स्वाभिमान, बलिदान, भारत की आजादी के लिए अंग्रेजों से लड़ने वाली बहादुर रानी लक्ष्मीबाई हमारे भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं गौरव की, नेतृत्व की परम आदर्श हैं। आज फिर से हमारी बहिनों, बालिकाओं, माताओं में वह स्वाभिमान खिलखिला उठे कि शिक्षा के साथ-साथ स्वयं का निर्माण ऐसा करें कि भारत देश के वैभव एवं संस्कृति को चार चाँद लग जाए। रानी लक्ष्मीबाई क्यों है आज भी हमारी नारी शक्ति का प्रतीक, नेतृत्व कर्ता? उनके जीवन के कुछ संस्मरण जैसा बहुत सी पुस्तकों में अंकित भी है-लिख रही हूँ। प्रत्येक विद्यालय में प्रार्थना स्थल पर यदि दो-तीन मिनट की प्रेरक कहानियाँ या शनिवार नो बैग डे दिवस को हम ऐसा अनुकरणीय कार्य करें कि प्रेरक कहानी, लघुनाटिका द्वारा विद्यार्थियों को बताएं, दिखाएं, वास्तव में एक सशक्त समाज एवं राष्ट्रप्रेम की भावना विद्यार्थियों के मन में पैदा होती है। बुंदेले हरबोलो के मुँह से हमने सुनी कहानी थी खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी। मन को मोह लेने वाली, प्रेरणादायक कविता अंश हरबोले-बुंदेलखण्ड में एक जाति है जो गीत गाकर भीख माँगती है।

झाँसी में रानी के साहस और शौर्य आज भी उपमान बने हैं-कहते हैं अरी! वह तो झाँसी की रानी बन गई-साहस, पराक्रम, शौर्य का प्रतीक।

रानी का जन्म- श्री मोरो पंततांबेके कुल में हुआ जैसे पवित्र क्षेत्र में-गंगामाता का ही एक नाम मन कर्णिका-रखा गया, प्यार से मनु कहते थे।

रानी की शिक्षा- मराठी, हिन्दी, संस्कृत भाषा का ज्ञान रानी के पिताजी ने कराया। बालबोध, देवनागरी, मोड लिपि भी सीखी।

युद्ध कौशल-घुड़सवारी, तलवार बाजी, शिवाजी पेशवाओं की गौरव गाथा से प्रेरणा लेकर स्वाभिमान से रण कौशल की शिक्षा ग्रहण की।

रानी का कुशल प्रशासक प्रबंधन- लार्ड डलहौजी ने दत्तक पुत्र को शासकीय स्वीकृति नहीं दी। परन्तु रानी लक्ष्मीबाई ने बड़ी हिम्मत एवं धैर्य से कहा-''मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।'' अपनी प्रजा के लिए बेहतरीन निर्णय किए एवं कुशलता से सैनिकों को संगठित कर अंग्रेजों की सेना का कड़ा मुकाबला किया, यही एक अच्छी प्रबंधक क्षमता है जो आज के परिवेश में अति आवश्यक है कि महिलाएँ अपने स्वाभिमान के साथ राष्ट्र सम्मान में भी वृद्धि करें।

1857 के स्वतंत्रता आंदोलन की प्रणेता- कमल का फूल और रोटी 1857 की क्रांति में सूचना प्रेषण प्रतीक के रूप में तय किए गए क्योंकि कमल फूलों का राजा जो विष्णु का जन्म स्थान व पालनकर्ता है जिसमें सरस्वती की सुंदरता, कोमलता, महानता एवं लक्ष्मी की विशालता और संगठन का प्रतीक है। पंखुड़ियाँ एक नाल से जुड़ी हैं तब तक वह फूल है अन्यथा उसका सौंदर्य आदि नष्ट हो जाता है। वैसे ही हमारी एकता में हमारे देश का सौष्ठव एवं सौंदर्य समाया है। यह युद्ध एक महान क्रांति थी, रक्तरंजित थी फिर भी अपने धर्म, समाज एवं राष्ट्र के हित के लिए थी अतः कमल सी मंगल थी। रोटी रक्षा का प्रतीक थी। रानी ने सैनिकों का नेतृत्व कर बहादुरी से अंग्रेज सेना का सामना किया एवं देश के लिए लड़ते वीरगति को प्राप्त हो गई। शेष रही उनकी अमर गाथा जिसको आज भी हर भारतवासी गाता है खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी। इसी प्रेरणा पुंज से प्रकाशित विचारों की शिक्षा विभाग की योजना-लक्ष्मीबाई आत्मरक्षा प्रशिक्षण सभी महिला शिक्षिकाओं एवं बालिकाओं को विद्यालय में दक्ष प्रशिक्षकों द्वारा प्रतिवर्ष दिया जा रहा है जो राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग में एक अद्‌भुत नवाचार एवं अनुकरणीय पहल है। सभी एकात्मक रूप से इसमें जुड़े ताकि सशक्त बालिका सशक्त राष्ट्र में सर्वांगीण विकास की नई कहानी लिखें। हम सब मिलकर एक सकारात्मक प्रभावी नेतृत्व के गुणों का अर्जन करे और रानी लक्ष्मीबाई के जीवन चरित्र को आत्मसात करें।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अजरका,
मुण्डावर, अलवर (राज.)
मो.न.: 9413068956

बालकों में स्वअध्ययन और गतिशीलता

❐ शशिप्रभा छाबड़ा

संसार में सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य को माना गया है क्योंकि उसके पास है बुद्धि और उसके दो स्वतंत्र हाथ। मनुष्य स्वभावगत गतिशील रहा है, वह अपनी रुचि से सीखता है, अध्ययन करता है चाहे साधारण अध्ययन हो या फिर विशेष अध्ययन। मनुष्य को इससे आनन्द की प्राप्ति होती है, जिस प्रकार पहाड़ों की कोख से निकलते झरने, कलकल छलछल करती नदियाँ, किल्लोल करता सागर, उफनती समुद्र की लहरें या फिर गरजती बरसती सावन की घटाएँ हो, हमारे भीतर एक उन्माद भर देती है, हमें जीवन में गतिशीलता की प्रेरणा देते हुए नये जोश से कार्य करने की मादकता प्रदान करती है और हमें आनन्द की प्राप्ति होने लगती है। ठीक इसके विपरीत गतिशीलता के अभाव में ठहरा हुआ पानी चाहे बरसाती गड्ढा हो, पोखर या फिर ताल – तलैया हमारे जीवन में नीरसता ला देता है।

हमारे पड़ौस में रहने वाली एक दादी-माँ अत्यधिक लाड़-प्यार में डूबकर अपने पौत्र को नीचे ही नहीं उतारती थी, वहीं दूसरी ओर काम काजी माँ को अपने पुत्र के लिए वक्त ही न था। नतीजा गतिशीलता के अभाव में बालक पंगु बनकर रह गया, स्वास्थ्य भी दिनों-दिन गिरता चला गया, जब दादी माँ को इस ओर ध्यान दिलाया गया तो उन्होंने बालक को स्वतंत्र छोड़ दिया। कुछ समय बाद ही 'करके सीखने की विद्या' में पारंगत होकर बालक हष्ट-पुष्ट बनकर खेलने खाने लगा।

आज के इस तकनीकी युग में बालक मात्र 'मशीन मैन' बनते जा रहे हैं। संस्कार विहीन बालक, गिरते मानवीय मूल्यों को देखकर तो हमें सोचने पर मजबूर कर दिया है। आए दिन समाचार पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं में छपी दिल-दहलाने वाली घटनाएँ वाकई हमारे लिए चिन्ता का विषय हैं। घर, परिवार, शिक्षक व समाज प्रबुद्ध लोगों का यह दायित्व बन जाता है कि बालकों को सही दिशा दी जाए। उनमें सुसंस्कारित बीजों का रोपण कर स्वअध्ययन की आदतों का विकास किया जाए ताकि देश की कमान इन हाथों में सुरक्षित रहें।

साथियों मेरा तो यह मानना है कि इन नौनिहालों को जितना अधिक प्रकृति से रूबरू करवाएंगे, उतना ही वह प्रफुल्लित होकर प्रकृति की गोद में खेलकर सीखने लगेगा और हमेशा उसमें गतिशील बनकर सीखने की लालसा बनी रहेगी। बचपन से ही इन बालकों को रंग-बिरंगी सचित्र कथाओं के माध्यम से स्वअध्ययन की आदत डाल दी जाए तो निश्चय ही बालक इसमें गहन रुचि लेकर गतिशील बना रहेगा और आनन्द उठाने लगेगा।

शिक्षा शास्त्रियों ने जीवन को गतिशील बनाये रखने के लिए अच्छी पुस्तकों को ही मनुष्य का सच्चा मित्र माना है, उनका कहना है कि इन तकनीकी संचार साधनों से बालकों पर ज्ञान तो थोपा जा सकता है लेकिन उनमें कल्पनाओं, मौलिकता का विकास नहीं किया जा सकता।

आज के इस तकनीकी साधनों के रहते, पुस्तकों के प्रति रुचि जागृत कर गतिशील बनाए रखना हमारे लिए एक चुनौती पूर्ण कार्य तो है पर हमें इस चुनौती को स्वीकार करना ही होगा।

एक अच्छे शिक्षक को जीवनपर्यन्त अध्ययनशील होने के साथ-साथ गतिशील रहना बहुत आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों का प्रयोग करते रहना चाहिए, ताकि वे बच्चों को नवीनतम जानकारियाँ उपलब्ध करवा सके। शिक्षक स्वयं गतिशील रहकर शिक्षण कार्य को सरल, सुगम व सुरुचिपूर्ण बना सके।

एक बार मुझे प्राथमिक कक्षाओं का अवलोकन करने का अवसर मिला, मैंने देखा कि कक्षा पाँच में गणित विषय के अध्यापक बहुत ही सरल व सहज तरीके से स्वनिर्मित शिक्षण- अधिगम सामग्री एवं नवाचारों का प्रयोग करते हुए गणित विषय पढ़ा रहे थे। कक्षा के सभी छात्र गहन रुचि लेकर पढ़ रहे थे। खेल-खेल में गुरुजी ने सवालों को ऐसे समझाया कि सभी बालकों में सर्वप्रथम सवालों को हल करने की होड़ सी मच गई। सचमुच बड़ा मजा आ रहा था, एक घंटे का समय कैसे बीता पता ही नहीं चला। शाला के प्रधानाचार्य जी से बातचीत करने पर पता चला कि वे प्रत्येक दिन बालकों को ऐसे ही पढ़ाते हैं। गुरु-शिष्यों के बीच ऐसा संबंध गतिशीलता का एक अनूठा उदाहरण था। उन्होंने प्रत्येक बालक की एक छोटी पॉकेट-डायरी बनवा रखी थी, जिसमें गणित के महत्वपूर्ण सूत्र लिखवाते थे, ताकि यदि कोई बालक सूत्र भूल जाए तो तुरंत उसी समय डायरी को खोलकर याद कर ले।

हमें चाहिए कि प्रत्येक बालक को बाल्यावस्था से ही दैनदिंनी भरने की आदत डलवा देनी चाहिए, जिससे बालकों में लिखने की आदत बनी रहे। शाला की दीवारों के साथ ही साथ घर में भी बच्चों के कक्ष में महापुरुषों के नीचे उनके स्लोगन अंकित कर चित्र लगवाने चाहिए जिससे बालक उनके बारे में जानकर उनके आदर्शों को जीवन में उतार सके। बालकों को बचपन से ही छोटी-छोटी कहानियाँ व कविताएं लिखने के लिए प्रेरित करते रहे जिससे वे अध्ययनशील बने रहे। इसके अलावा छोटी-छोटी वर्ग-पहेलियाँ बना कर बच्चों को भरने के लिए कहे जिससे उनके शब्द-कोश में वृद्धि के साथ-साथ गतिशील भी बने रहे। छोटे-मोटे जादुई विज्ञान के प्रयोग, पहेलियाँ इत्यादि के माध्यम से भी बच्चों को निरन्तर गतिशील बनाया जा सकता है।

यदि हम बाल्यावस्था से ही इन बालकों में सुसंस्कारित बीजा रोपण कर दे तो निश्चय ही हमारे देश का भविष्य इन नन्हें पौध रूपी बालकों के हाथों में सुरक्षित हो जाएगा। और ये बालक आनन्द का रस्वादन करने के साथ ही जीवन के हर क्षेत्र में सफल होकर जीवन यापन कर बुलंदियों की सीढ़ियों को निश्चय ही छू लेंगे। साथियों आपके अथक प्रयासों से ये बालक-
कर हलचल ताल-तलैया को तरंगित कर दें।
और जीवन की इस बगिया को, सुमनों से महका दें।

व्याख्याता (IASE)
राजकीय उच्चअध्यन शिक्षा संस्थान,बीकानेर
मो.न. : 9460617084

Rajasthan Education Department

जीवन में ज्ञान रूपी यज्ञ की महत्ता

❒ रामचन्द्र

'यज्ञ शिष्टामृतभुजो'-यज्ञ जिसकी सृष्टि करता है, जिसे अवशेष छोड़ता है, वह है अमृत। उसकी प्रत्यक्ष जानकारी ज्ञान है। उस ज्ञानामृत को भोगने अर्थात प्राप्त करने वाले योगी जन 'यान्ति ब्रह्मा सनातनम्' शाश्वत सनातन परब्रह्मा मे प्रवेश दिला देती है। यज्ञ न करे तो आपत्ति क्या है, श्री कृष्ण कहते हैं कि यज्ञ रहित पुरुष को पुन: यह मनुष्य लोक अर्थात् मानव शरीर भी सुलभ नही होता, फिर अन्य लोक कैसे सुखदायी होंगे? उसके लिए तो तिर्यक् योनियाँ सुरक्षित है, इससे अधिक कुछ नही अत: ज्ञान रूपी यज्ञ करना मनुष्य मात्र के लिए नितान्त आवश्यक है।

यज्ञ वेद की वाणी में कहे गए हैं, ब्रह्मा के मुख से विस्तारित है। प्राप्ति के पश्चात महापुरुषों के शरीर को परब्रह्मा धारण कर लेता है। ब्रह्मा से अभिन्न अवस्था वाले उन महात्माओं की बुद्धि मात्र यंत्र होती है। उनके द्वारा वह ब्रह्मा ही बोलता है। उनकी वाणी में इन यज्ञों का विस्तार किया गया है।

यज्ञ को 'कर्मजान विधि' कर्म से उत्पन्न हुआ जान अर्थात् ज्ञान रूपी यज्ञ करके जिनका पाप नष्ट हो चुका हो, वही यज्ञ के यथार्थ ज्ञाता है।

प्राय: लोग कहते हैं कि संसार में कुछ भी किया जाए, हो गया कर्म। कामना से रहित होकर कुछ भी करते जाओ, हो गया निष्काम कर्मयोग। कोई कहता है कि अधिक लाभ के लिए विदेशी वस्त्र बेचते हैं तो आप सकामी है। देश-सेवा के लिए स्वदेशी बेचे तो हो गया निष्काम कर्मयोग। निष्ठापूर्वक नौकरी करे। हानि-लाभ की चिन्ता से मुक्त होकर व्यापार करें, हो गया निष्काम कर्म योग। जय-पराजय की भावना से मुक्त होकर युद्ध करें, हो गया निष्काम कर्मयोग। वस्तुत: ऐसा कुछ भी नहीं है अर्थात् निर्धारित कर्म को कर। यज्ञ की प्रक्रिया ही कर्म है। यज्ञ क्या है? श्वास-प्रश्वास का हवन, इन्द्रियों का संयम, यज्ञ स्वरूप महापुरुष का ध्यान, प्राणायाम प्राणों का निरोध यही मन की विजितावस्था है। सारांशत: मन का प्रसार ही जगत है। चराचर जगत ही हवन-सामग्री के रूप में है। मन के सर्वथा निरोध होते ही जगत का निरोध हो जाता है। मन के निरोध के साथ ही यज्ञ का परिणाम निकल आता है।

यज्ञ जिसकी सृष्टि करता है, उस ज्ञानामृत का पान करने वाला पुरुष सनातन ब्रह्मा में प्रविष्ट हो जाता है। यह सभी यज्ञ ब्रह्मास्थित महापुरुषों की वाणी द्वारा कहे गए हैं। ऐसा नही कि अलग-अलग सम्प्रदायों के साधक अलग-अलग प्रकार के यज्ञ करते हैं, बल्कि ये सभी एक ही साधक की ऊँची-नीची अवस्थाएँ हैं। यह यज्ञ जिससे होने लगे, उस क्रिया का नाम कर्म है। प्राय: यज्ञ का नाम आने पर लोग बाहर एक यज्ञ वेदी बनाकर तिल, जौ लेकर 'स्वाहा' बोलते हुए हवन प्रारम्भ कर देते हैं। यह एक धोखा है। द्रव्य यज्ञ दूसरा है। पशुबलि, वस्तु-दाह इत्यादि से इसका कोई संबंध नहीं है।

सांसारिक द्रव्यों से सिद्ध होने वाले यज्ञ की अपेक्षा ज्ञान यज्ञ श्रेयस्कर है। परमकल्याणकारी है। सम्पूर्ण कर्म ज्ञान में शेष हो जाते हैं, 'परिसमाप्यते' भली प्रकार समाहित हो जाते हैं। ज्ञान यज्ञ की पराकाष्ठा है। उसके पश्चात कर्म किए जाने से न कोई लाभ है और न छोड़ देने से उस महापुरुष की कोई क्षति ही होती है।

इस प्रकार भौतिक द्रव्यों से होने वाले यज्ञ भी यज्ञ है, किन्तु उस यज्ञ की तुलना में जिसका परिणाम साक्षात्कार है, उस ज्ञानयज्ञ की अपेक्षा अत्यन्त अल्प है। आप करोड़ों का हवन करें, सैंकड़ों यज्ञवेदी बना लें, सत्पथ पर द्रव्य लगावें, साधु-सन्त-महापुरुषों की सेवा में द्रव्य लगावें, किन्तु इस ज्ञानयज्ञ की अपेक्षा अत्यन्त अल्प है। वस्तुत: यज्ञ श्वास प्रश्वास का है, इन्द्रियों के संयम का है, मन के निरोध का है। इस यज्ञ को प्राप्त कहाँ से किया जाए? उसकी विधि कहाँ से सीखें? मन्दिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों में मिलेगा या पुस्तकों में? तीर्थ यात्राओं में मिलेगा या स्नान करने से मिलेगा? नहीं उसका तो एक ही स्रोत है तत्वस्थित महापुरुष।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानम् ज्ञानिनस्तत्तव दर्शिन:।।

अर्थात् तत्वदर्शी महापुरुष के पास जाकर भली प्रकार प्रणत होकर (दण्डवत- प्रणाम करके, अहंकार त्यागकर, शरण होकर), भली प्रकार सेवा करके, निष्कपट भाव से प्रश्न करके आप उस ज्ञान को जानों। वे तत्व को जानने वाले ज्ञानीजन आपके लिए उस ज्ञान का उपदेश करेंगे। साधना पथ पर चलाएँगे। समर्पित भाव से सेवा करने के उपरान्त ही इस ज्ञान को सीखने की क्षमता आती है। तत्वदर्शी महापुरुष परमतत्व परमात्मा का प्रत्यक्ष दिग्दर्शन करने वाले हैं। वे यज्ञ की विधि विशेष के ज्ञाता है और वही आपको भी सिखाएँगे। यदि अन्य यज्ञ होता, तो ज्ञानी-तत्वदर्शी की क्या आवश्यकता थी?

स्वयं भगवान कृष्ण के सामने ही तो अर्जुन खड़े थे, भगवान उनको तत्वदर्शी के पास क्यों भेजते हैं? वस्तुत: श्रीकृष्ण एक योगी थे। उनका आशय है कि आज तो अनुरागी अर्जुन मेरे समक्ष उपस्थित है, भविष्य में अनुरागियों को कहीं भ्रम न हो जाए कि श्रीकृष्ण तो चले गए, अब किसकी शरण में जाए। इसलिए उन्होंने स्पष्ट किया कि तत्वदर्शी के पास जाओ। वे ज्ञानीजन तुझे उपदेश करेंगे और उस ज्ञान को उनके द्वारा समझकर आप इस प्रकार फिर कभी मोह को प्राप्त नही होंगे। उनके द्वारा दी गयी जानकारी के द्वारा उस पर चलते हुए आप अपनी आत्मा के अन्तर्गत सम्पूर्ण भूतों को देखेंगे अर्थात सभी प्राणियों में इसी आत्मा का प्रसार देखेंगे। जब सर्वत्र एक ही आत्मा के प्रसार को देखने की क्षमता आ जाएगी, उसके पश्चात आत्मा परमात्मा में प्रवेश करेगी। अत: उस पर आत्मा को पाने का साधन 'तत्वस्थिति महापुरुष' के द्वारा है और तत्वस्थित महापुरुष ज्ञान रूपी यज्ञ द्वारा है। इस प्रकार से कह सकते हैं कि सभी यज्ञों में ज्ञान यज्ञ सर्वश्रेष्ठ एवं कल्याणकारी है।

वरिष्ठ अध्यापक (हिन्दी)
राज्य स्तरीय सम्मानित शिक्षक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय 961RD
मुख्य नहर, बज्जू, बीकानेर (राज.)
मो.न.: 9660723691

Rajasthan Education Department

बच्चों का लिखना-पढ़ना और मेरा सीखना

❒ हंसराज तंवर

मैं प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाने वाला शिक्षक हूँ। मुझे बच्चों को वर्णों की पहचान व उनकी आकृतियाँ बनवाने में बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था। ऐसे में मैंने सभी बच्चों को एक दिन चित्र बनाने के लिए कहा। सभी बच्चों ने अपने-अपने मन से अलग-अलग चित्र बनाए। किसी ने पेड़, चूहा, पतंग, तिरंगा झंडा, चूल्हा, बाल्टी, फूल, आम का चित्र बनाया। इसके बाद मेने बच्चों से उन चित्रों पर खूब सारी बातें करना शुरू किया।

बच्चे बातचीत में बहुत रुचि ले रहे थे। मैंने उनको चित्र के रंग, उपयोग, गुण व विशेषता पर खूब सारी बात की। कुछ बच्चों के चित्र स्पष्ट नहीं बने थे। मैंने उन चित्रों को लेकर बच्चों से कई तरह की बातचीत की जैसे यह आपने क्या बनाया है? यह क्या काम आता है? तुमने इसको कहाँ देखा है आदि प्रश्नों से मैंने जाना कि यह आड़ी तिरछी दिखने वाली रेखाएँ, छोटे-बड़े गोल, चपटे-गोले, चाहे मेरे लिए कुछ मायने नही रखते हो पर बच्चों के लिए उन चित्रों में लोहे का चक्कर था, गाय की पूंछ थी, भैंस का सींग था, दादी का चश्मा था वगैरह-वगैरह चीजें थी। बच्चों के उत्तरों से मुझे भी बड़ा आनंद आया। मेरा भी सीखना हुआ। मैंने बच्चों को शाबाशी दी। उनको और नए-नए चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। मैंने चित्रों के माध्यम से बच्चों की कल्पना शक्ति, मन के विचार जाने। इस कार्य से बच्चों में अपनी बात कहने का हौंसला व आत्मविश्वास पैदा हुआ। मौखिक अभिव्यक्ति के अवसर मिले। इस प्रक्रिया में वे बच्चे भी शामिल हो गए जो कक्षा शिक्षण के दौरान ज्यादा समय चुपचाप ही रहते थे। बातचीत में उनकी भी सहभागिता बढ़ी।

बच्चों द्वारा चित्रों पर खुली चर्चा करने से मैं बड़ा खुश था क्योंकि मैं जानता था यह सब काम बच्चों को पढ़ना-लिखना सीखने में मेरी मदद करने वाला होगा। चित्र पर चर्चा के बाद मैंने उन चित्रों के नाम लिखकर बच्चों से वर्ण/अक्षर की पहचान करवाई तो बच्चे आनंद के साथ पहचान करने लगे। इस तरह कार्य करने से बच्चों ने कम समय में ही अधिक अक्षरों की पहचान करना सीख लिया। फिर मैंने बच्चों को समान ध्वनि वाले, प्रथम अक्षर की ध्वनि वाले, अंतिम अक्षर की ध्वनि वाले शब्दों का मौखिक व लिखित अभ्यास करवाया।

अब मुझे बच्चों में पढ़ने के लिए आत्मविश्वास जगाना जरूरी लगा। इसके लिए मैंने कुछ परिवेश की वस्तुओं के नाम बच्चों से पूछ-पूछ कर ब्लेक बोर्ड पर लिखकर उनसे भी स्वर, व्यंजन, मात्रा की पहचान करवाई। बच्चों से तुक वाले शब्द भी बुलवाए। इस प्रक्रिया में बच्चों के साथ-साथ मुझे भी आनंद आने लगा। साथ ही बच्चे भी बड़ी सहजता के साथ सीख रहे थे। फिर मैंने चित्रों पर तीन चार वाक्य लिखवाना शुरू किया।

बच्चों ने शुरुआत में दो-दो शब्दों के छोटे-छोटे वाक्य ही लिखे। पर लगातार मेरे द्वारा इसी तरह का कार्य करवाने से बच्चे बाद में चार-पाँच वाक्य भी लिखने लगे। शुरूआती समय में मैंने बच्चों की मात्रा संबंधी गलतियों को नजरअंदाज किया क्योंकि बच्चों को लिखने का आनंद आए, इस समय मेरा यही उद्देश्य था। बच्चे अपने मन से लिखने लगे, अपने मौलिक विचार प्रकट भी करने लगे। मैंने मेरे काम को थोड़ा और आगे बढ़ाने के लिए बच्चों से छोटी-छोटी कविताओं को आगे बढ़ाने का कार्य शुरू करवाया, अधूरी कहानियों को पूरा करवाने का काम शुरू किया। इस तरह के कार्यों में बच्चों का उत्साह देखकर मुझे बड़ा संतोष मिलता क्योंकि उत्साह ही सीखने के लिए प्रेरित करता है। ऐसा मेरा मानना है। कक्षा में पुस्तक पढ़ाते समय बच्चे ज्यादा आनंदित नहीं होते थे।

इसलिए मैंने मेरे काम के तरीके को बदलकर कक्षा 3, 4, 5 के बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखाया। इस प्रक्रिया से बच्चों ने सारे स्वर, व्यंजन, मात्राएँ नहीं पढ़ी, उससे पहले ही पढ़ना-लिखना सीख लिया। बाद में विद्यालय में मनाए जाने वाले उत्सव/पर्व का प्रतिवेदन भी बच्चे ही लिखने लगे थे।

बच्चों को निरंतर पढ़ने, स्वाध्याय करने के ज्यादा से ज्यादा अवसर कैसे उपलब्ध हो? मैं इसके बारे में सोचने लगा। मैंने विद्यालय में स्थित पुस्तकालय में से छोटे बच्चों के लिए उपयोगी कहानियों की पुस्तकें लेकर बच्चों को रोज कक्षा में एक कहानी सुनाने लगा। गडरिया की कहानी, लालची कुत्ता, मेरी गुड़िया, चिड़िया और चूहा, दो बैल, बूढ़ी काकी, इंसाफ, ईमानदार बच्चा आदि। बच्चों को कहानियाँ सुनाने के पीछे मेरा उद्देश्य बच्चों में पुस्तकें पढ़ने की जिज्ञासा पैदा करना था। मैं बहुत हद तक इस उद्देश्य में सफल भी हुआ। बच्चे मुझसे पुस्तकें पढ़ने के लिए मांगने लगे। मुझे अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन पुस्तकालय के बारे में जानकारी थी। मैं एलआरसी पर गया। एलआरसी संदर्भ व्यक्ति को मैंने मेरी आवश्यकता बताई।

वहाँ से मुझे कुछ बच्चों की पत्रिकाएँ चंपक, नंदन, सत्य कथा इत्यादि प्राप्त हुई।

साथ ही उन्होंने मुझे थैला पुस्तकालय के बारे में भी बताया। पाँच थैलों में अलग-अलग 25 पुस्तकों के सेट थे। एलआरसी पर कार्यरत संदर्भ व्यक्तियों ने मुझे बताया कि आप बच्चों को यह पुस्तकें पढ़ने के लिए दे सकते हैं।

आप जितने दिन भी काम करना चाहें, उतने दिन इनको अपने पास रख सकते हैं। साथ ही आप बारी-बारी से थैलों को बदलकर सभी पुस्तकों का उपयोग बच्चों के लिए कर सकते हैं। मैं थैला लेकर बड़ा खुश और उत्साही था।

मै। बच्चों के साथ कहानी व छोटी-छोटी कविताओं पर काम करने लगा। पहले मैं बच्चों को पूरी कहानी हाव-भाव के साथ सुनाता। कहानी के बीच में बच्चों को जोड़े रखने के लिए व कल्पना शक्ति के विकास हेतु कुछ प्रश्न भी करता। कहानी पूरी होने के बाद बच्चों को पढ़ने के लिए किताबें देता। बच्चे कहानी की किताबें जब तक पढ़ते, तब तक मैं कहानी लिखे चार्ट को कक्षा-कक्ष में बच्चों की पहुँच में दीवार पर चिपका देता।

जब बच्चे कहानी को पढ़ लेते। फिर मैं चार्ट पर उंगली रखते हुए कहानी पठन करवाता था। बच्चों को मौखिक कहानी कहने का अवसर देता। कुछ बच्चे नहीं बोलते, उनको छोटे समूह में अपने शब्दों में कहानी कहने के लिए प्रोत्साहित करता। यह सारा काम करने के बाद कहानी को अपने शब्दों में कॉपी में लिखवाता था। कहानियों के माध्यम से बच्चों में कई तरह की क्षमताओं का विकास मुझे परिलक्षित होता दिख रहा था। जैसे-

1. दूसरों की बात को ध्यान से सुनना(सुनकर समझना)।
2. अपनी बारी आने पर ही बात करना(धैर्य)।
3. सुनी हुई बात में से प्रश्न बनाना (प्रश्न बनाना)।

Rajasthan Education Department

4. कहानी के पात्रों के स्थान पर खुद को रख कर, अपने मन के विचार करना (स्वयं निर्णय लेना)।
5. कहानी की शिक्षा स्वयं ही तय करना(कल्पना शक्ति विकास)
6. कहानी को आगे बढ़ाना(सृजनशीलता)।
7. कहानी के पात्रों के अनुरूप हाव-भाव करना (अभिनय कला का विकास) आदि।

इन सबके परिणामस्वरूप बच्चे विद्यालय में आयोजित होने वाले वार्षिक उत्सव, पर्व, जयंतियों, बाल सभा आदि कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी भी करने लगे थे।

इन कार्यक्रमों में उनके अभिभावक, शिक्षक जब आते और छोटे-छोटे बच्चों के मुँह से कहानी, गीत, कविता सुनते तो उनको बहुत अच्छा लगने लगा। छोटे बच्चों के काम को देखकर कक्षा 6, 7, 8 के बच्चे भी मेरे पास पुस्तकें पढ़ने के लिए मांगने आने लगे थे। सात-आठ दिनों में जब बच्चे पुस्तकें पढ़कर वापस लाते, तो मैं उनको पुस्तक में क्या-क्या पढ़ा? क्या-क्या अच्छा लगा? उनके अनुभव प्रार्थना सभा में सब बच्चों को सुनवाता।

उनको पुस्तक की कोई कहानी याद होती, तो उसको भी सब बच्चों को सुनवाता। इस तरह की गतिविधियों से बच्चों में आत्मविश्वास पैदा होने लगा। बड़े बच्चों में भी बोलने की झिझक, संकोच खत्म हुआ। कक्षा 8 की 2-3 बच्चियाँ कविताओं की पुस्तकें पढ़कर तुकबंदी भी करने लगी थी। यहाँ पर कुछ कविताएँ जो बच्चों ने तुकबंदी की वो प्रस्तुत है-

बरसात

हो रही है बरसात,
चलो आज करते हैं बात।
बारिश ने मन की कर ली,
पृथ्वी हरी -भरी कर दी।
वस्तुएं भीगी, मनुष्य भीगे
जानवर भीगे,
नदियाँ, तालाब भरे, बांध भरे,
कोई नही रहा बारिश से परे।
गीला है चारों तरफ,
हवा से बढ़ी है शरद।
होते है बारिश से परेशान,
पर बारिश बिन हो जाए शमशान।
चार महीने होती है बरसात,
सावन, भाद्रपद है उसमें खास,
सात रंगों का इंद्रधनुष बनाती,
बरसात है बहुत ही खास।

पैसों का कमाल

क्या कमाल का है पैसा,
अग्नि की ज्वाला जैसा।
रिश्तों को जलाकर करता है राख,
जिसमें गांधीजी जी रहे हैं झांक।
यदि पैसा है तो,वस्तु पर है अधिकार।
वरना सब कुछ है बेकार।
पैसे वालों का ही करते हैं सम्मान,
पैसा नहीं तो मिलता है अपमान।
ईमानदार की ईमानदारी नहीं देखी जाती,
सबको बस पैसों की माया भाती।
सभी पैसों का गुणगान गाते,
घुमा फिरा कर बात पैसों पर लाते।
पैसा तो हाथों का मेल है,
आज है कल नही।
पर इंसानियत रहनी चाहिए वही।
तिजोरी भरने का लालच मत करो,
दिल से लोगों का भला करो।

इस तरह की तुकबंदी की कविताएँ बच्चे करने लगे थे। उनका यह कार्य देखकर मुझे बहुत खुशी होती और मेरा कार्य करने का उत्साह दोगुना हो जाता है।

इसी प्रकार मैंने छोटे बच्चों से कहानी को आगे बढ़ाने, अधुरी कहानी को पूरा करना, कविता को आगे बढ़ाना आदि कार्य भी कक्षा कक्ष में बच्चों के साथ शुरू किए।

मैं बच्चों से चुनिंदा शब्द लेकर उनसे कहानी बनाने का काम भी करवाता था। कहानी की तरह बच्चे कविता भी लिखने लगे कुछ उदाहरण है-

आम

आम कितना सुंदर है।
आम पीला होता है।
आम का जूस मिलता है।
आम को सब खाते,
आम मीठा होता। **-संजू कक्षा 5**

गाड़ी आई

छुक- छुक कर गाड़ी आई,
आगे से हट जाना भाई।
काला काला धुआं उड़ाती,
छुक-छुक करके शोर मचाती,
गाड़ी आई गाड़ी आई। **-कैलाश कक्षा 5**

कोयल रानी

कोयल रानी आओ ना,
अपना गीत सुनाओ ना।
सबके मन भाती है,
डाल-डाल पर गाती है।
फूलों को खाती है,
हरियाली में आती है।
दीपावली पर जाती है,
अच्छे गीत सुनाती है।
बगिया में पाती है,
अच्छे पेड़ पर बैठती

-गणपत कक्षा 5

बच्चों की तुकबंदी मेरे लिए प्रेरणा का कार्य कर रही थी। कुछ बच्चों ने चित्र बनाकर उस पर अपने विचार भी तीन-चार वाक्यों में लिखना शुरू कर दिया था। एक लड़के ने लड़की का चित्र बनाकर उसमें रंग भरकर लिखा है-

यह लड़की है।
यह लड़की अच्छी है।
यह लड़की पढ़ने आती है।
लड़की को पढ़ना अच्छा
लगता है।

इसी प्रकार दूसरे बच्चे ने पेड़ का चित्र बनाकर उसमें रंग भरकर लिखा है।

यह आम का पेड़ है।
पेड़ हमें छाया देते हैं।
पेड़ो से हमे हवा मिलती है।

इस तरह बच्चों के काम को देख कर मेरी भी रोज कुछ न कुछ लर्निंग हो रही थी। जब इस तरह स्कूल में मेरे को शिक्षण का काम करवाते हुए अभिभावकों ने भी देखा तो उन्होंने भी बहुत सराहा।

अभिभावक मेरे काम के लिए कहते थे यो मास्टर जबरो है भाई, बच्चा न सीखाबा वास्त न्यारो न्यारो काम कराव छः। (ये शिक्षक जोरदार है, बच्चों को सिखाने हेतु अलग-अलग तरीकों से काम करवाता है।)

उनके यह शब्द मुझे शक्कर से भी ज्यादा मीठे लगते थे और मेरे लिए किसी बड़े पुरस्कार से कम नही थे।

अभिभावकों की प्रेरणा से

मैं लगातार मेरे शिक्षण कार्य के तरीकों में बदलाव करता रहा। मैं शिक्षा में नवाचारों का पक्षधर हूँ।

अब मेरा परंपरागत शिक्षण के तरीकों के बजाय संदर्भ पद्धति से बच्चों के साथ काम करने में दिनों दिन विश्वास पक्का होता जा रहा है।

अध्यापक
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय बनेठा,
ब्लॉक-उनियारा, टोंक (राज.)
मो.न.: 9829434517

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

मेरी अपनी जुबान मेरे अपने लोग

❐ भंवरलाल पुरोहित

मुझे मिट्टी में खेलने दो खेतों की मिट्टी की सौंधी-सौंधी खुशबू लेने दो, मेरी अपनी भू मेरी अपनी माटी में घरोंदे बनाने दो, मुझे मेरे आई-बापा की गोदी में खेलने दो।

मेरी अपनी जुबान को अपनी मातृभाषा में सीखने दो, सुनो-सुनो मेरे मारसा- मैडम मुझे कोयल की कुहु-कुहु, पपिये की टेर गानै दो, मैं कपोल कल्पित नहीं हूँ। प्रकृति की गोद में पला-बढ़ा हूँ। मुझे पक्की चार दीवारी स्लेट, पेन की आवश्यकता नहीं है, मैंने पहाड़ों पर बकरी चराते हुए वृक्षों-लताओं, फलों का ज्ञान प्राप्त कर लिया है। मैंने जामुन, सीताफल, केर, सांगरी, एवं बेरों का स्वाद भी चख लिया है। खेलते-खेलते गाय बकरी के दूध का रसास्वादन भी याद है। केवल याद नहीं तो मुझे बदलती दुनिया की चकाचौंध याद नहीं।

ये उद्‌गार है 1984 में आदिवासी बहुल गाँव रामावि. भीमाना (पाली) में छात्र जो कक्षा 6 में पढ़ता था। सब कुछ याद आया 2022 में जब मुझे SCERT उदयपुर में प्रोटोटाईप कन्टेन्ट डेवलपमेंट इन मदर टंग/लोकल डायलेक्ट नई शिक्षा नीति 2020 में जाने का अवसर प्राप्त हुआ और एक दोहे की रचना गरासिया मातृभाषा में की गई।

सतौलिया रा खेल मा, दटी बणे है खम्भ
इण पेल भाटा जमें, दटी पड़े भम्म

कितनी स्वभाविक भाषा जिसमें बच्चा अपनत्व का भाव अनुभव करता है और त्वरित आगे बढ़ने का प्रयास करता है। बहुभाषा शिक्षण, अपनी मातृभाषा (मदर टंग) से स्थानीय परिवेश की भाषा के माध्यम से राष्ट्रभाषा एवं अंग्रेजी टंग की ओर बढ़ने का अच्छा प्रयास है।

मुझे मधुर रागिनी जिसमें अपनी भाषा की मीठी राग एवं अपनी संस्कृति के आहार-विहार की सौंधी सुगन्ध के साथ सेमीनार में ये पंक्तियाँ भी याद आते हुए गुनगुनाने लगा जिसमें अपनत्व का भाव है।

केट गेमोणी
वो घट्टी रो पीसणो

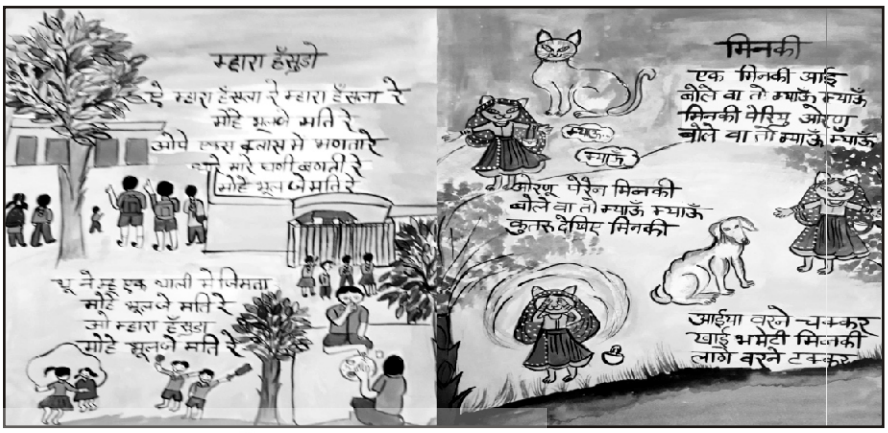

वा सूला री आग
घट्टी तो होबारवती प्रभाते री राग
सूली सीखवतो लीली पीली आग

सीखने-सिखाने की सुन्दर परम्परा को हम अपने परम्परागत शिक्षण में करते हुए अपने संस्कारों को जिंदा रखें। स्थानीय परिवेश, खेलगीतों, रचनाओं के आधार पर बालक को परम्परागत शिक्षण विद्या से जोड़ने में बहुआयामी शिक्षण सार्थक हो सकता है।

भाषा भावनात्मक संबंधों को जोड़ कर आपस में समन्वय करती है। अत: विद्यालय में आने वाले प्रत्येक बच्चे से आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करने हेतु उसे उसकी मातृभाषा में संवाद करना होगा।

विषय अध्यापन कोई भी हो बालक की भाषा में अध्यापन करवा कर उसका ठहराव सुनिश्चित किया जा सकता है। जब तक उसमें अपनत्व एवं आत्मीयता पैदा नहीं होगी। नई शिक्षा नीति 2020 की यह नई पहल छात्र-छात्राओं एवं अध्यापकों हेतु सार्थक सिद्ध होगी।

थोरो बोलनार न थोवला खोणार

जितना मातृभाषा में बच्चे के साथ संवाद होगा तो बालक को भी अनुभव होगा कि मेरी अपनी भाषा का भी अपना गौरव है। मेरी भाषा के माध्यम से अपनी प्रतिभा को ऊँचाई पर ले जा सकने में समर्थ होगा।

समर्थ निज भाषा समृद्ध ज्ञान।
प्रतिष्ठा निज गौरव है शिक्षा की आन।।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के अनुसार मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना एवं इसका अध्ययन करना बालक की अभिव्यक्ति विकसित करने तथा उसकी सामाजिक कार्यकुशलता बढ़ाने की दृष्टि से आवश्यक है। विद्यालय समाज का प्रतिबिम्ब है अत: मातृभाषा संस्कार चारित्रिक विकास समाज में जुड़े पहलुओं को विद्यालय में आत्मसात करवा बालक का उत्थान किया जा सकता है। परिवेशीय गीतों, खेलों एवं स्थानीय दोहे-चौपाइयों तथा मातृभाषा में आने वाले मूल्य शिक्षा को जोड़ते हुए राष्ट्रभाषा की ओर प्रेरित कर हम बालकों को समृद्धि की ओर ले जाने का प्रयास करें तथा विद्यालय में बालक को घर जैसा आभास हो और वह घर जाकर कह सके कि मेरा विद्यालय तो मेरे घर जैसा है।

मन रमे, मन जीते, जीत हो इंसानियत की।
कही आड़े नहीं आई, जात-पात, भाषा,
विकलांगता की।

शिक्षक वृंद अपनी अलौकिक कल्पना की उड़ान से धरती अम्बर में, बाल मन में उथल-पुथल मचाने की इस विधा को आकार देकर सौंधा-सौंध मृदुल स्मृति में पहचान बनाएँ।

उपनिदेशक शिक्षा (सेवानिवृत)
पुरोहित वास, नई धनारी,
पोस्ट-धनारी, रेल्वे स्टेशन सरूपगंज,
सिरोही (राज.)-307022
मो.न.: 9414767779

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

आदेश-परिपत्र : मार्च, 2023

1. व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता।
2. साइबर अपराध की रोकथाम के लिए विद्यालयों/कॉलेजों में साइबर क्लब बनाए जाने के संबंध में।
3. ई-फाइलिंग/राजकाज एप्लीकेशन लागू किए जाने के प्रमाण-पत्र के संदर्भ में।

1. व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/हि.नि./28129/2022-2023 दिनांकः 20.02.2023 ● समस्त संयुक्त निदेशक, समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा), समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा), समस्त प्राचार्य डाइट, समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ ● विषयः व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता। ●संदर्भ : इस कार्यालय का परिपत्र शिविरा/मा/हि.नि./28129/2022-23 दिनांक 21.11.2022

उपर्युक्त विषय में लेख है कि निदेशालय के संदर्भित पत्र दिनांक 21.11.2022 जारी कर व्यावसायिक शिक्षा में कार्मिकों के बच्चों के अध्ययनरत होने के कारण आवेदन पत्र आमंत्रित किए गए। जिसकी प्राप्ति की अंतिम तिथि दिनांक 28.12.2022 को समाप्त हो चुकी है, देखने में आया है कि अग्रेषण अधिकारी उक्त दिनांक एवं परिपत्र दिनांक 21.11.2022 को ध्यान में रखे बिना लगातार अग्रेषित कर रहे हैं, जिसका अब कोई औचित्य नहीं है।

अतः इस पत्र के जरिए पुनः निर्देशित किया जाता है कि इस विषयक आवेदन पत्र निरर्थक अग्रेषण नहीं करे।

● **(रिछपाल सिंह)**, उप निदेशक प्रशासन एवं सचिव हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. साइबर अपराध की रोकथाम के लिए विद्यालयों/कॉलेजों में साइबर क्लब बनाए जाने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/विविध(25)/वो-2/2022-23 दिनांकः 08.02.2023 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा ● विषयः साइबर अपराध की रोकथाम के लिए विद्यालयों/कॉलेजों में साइबर क्लब बनाए जाने के संबंध में। ● प्रसंगः शासन उप सचिव, शिक्षा (ग्रुप-6) विभाग, जयपुर का पत्रांक : प.24 (3)शिक्षा-6/2018 जयपुर दिनांक : 27.01.2023 Rajkaj Ref. No. 301110 एवं शासन उप सचिव, गृह, गृह (ग्रुप-5) विभाग, जयपुर की अशा. टीप क्रमांक : प.19(44)गृह-5/2019 जयपुर, दिनांकः 01.12.2022 मय संलग्न।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि Additional Secretary (CIS) Ministry of Home Affairs, New Delhi द्वारा प्रदत्त निर्देश पत्र क्रमांकः Do No. 22003/26/2020-14C 12 September, 2022 बाबत साइबर अपराध की रोकथाम के संबंध में आप अपने क्षेत्राधिकार में समस्त विद्यालयों में साइबर क्लब बनाए जाने तथा साइबर क्लब के संचालन हेतु प्रत्येक उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय में नोडल अधिकारी/शिक्षक चिह्नित किए जाने तथा उक्त सूचनाएँ संबंधित जिला पुलिस अधीक्षक से साझा करने के हेतु प्रदत्त निर्देशों की पालना सुनिश्चित करावें।

● संलग्न : यथोक्त।

● **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

साइबर अपराध की रोकथाम के लिए विद्यालयों/कॉलेजों में साइबर क्लब बनाए जाने के संबंध में।

● शिक्षा (ग्रुप-6) विभाग, राजस्थान सरकार ● क्रमांक : प.24(3) शिक्षा-6/2018 जयपुर दिनांक :27.01.2023 ●निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● विषय : साइबर अपराध की रोकथाम के लिए विद्यालयों/कॉलेजों में साइबर क्लब बनाए जाने के संबंध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत शासन उप सचिव, गृह (ग्रुप-5) विभाग से प्राप्त अ.शा. टीप क्रमांक : प.19(44) गृह-5/2019 दिनांक : 01.12.2022 की प्रति संलग्न कर निर्देशानुसार लेख है कि विद्यालयों/महाविद्यालयों में साइबर क्लब बनाए जाने तथा साइबर क्लब के संचालन हेतु नोडल अधिकारी के मनोनयन हेतु नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही कर की गई कार्यवाही से कृपया इस विभाग को अवगत कराने का श्रम करावें।

● **(आकाश रंजन)** शासन उप सचिव ।

साइबर अपराध की रोकथाम के लिए विद्यालयों/कॉलेजों में साइबर क्लब बनाए जाने के संबंध में।

●गृह (ग्रुप-5) विभाग, राजस्थान सरकार ●अ.शा.टीप क्रमांकः प.19(44) गृह-5/2019 जयपुर, दिनांक : 01.12.2022 ● अतिरिक्त मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग; शासन सचिव, उच्च शिक्षा विभाग ● विषय : साइबर अपराध की रोकथाम के लिए विद्यालयों/कॉलेजों में साइबर क्लब बनाए जाने के संबंध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत अतिरिक्त सचिव, गृह मंत्रालय नई दिल्ली से प्राप्त अर्द्धशासकीय पत्र क्रमांक 22003/26/2020-14C दिनांक 12.09.2022 की छायाप्रति संलग्न कर निर्देशानुसार निवेदन है कि साइबर अपराध की रोकथाम के संबंध में विद्यालयों/महाविद्यालयों में साइबर क्लब बनाए जाने तथा साइबर क्लब के संचालन हेतु प्रत्येक

Rajasthan Education Department

माध्यमिक स्तर के स्कूल/कॉलेज में एक नोडल अधिकारी/शिक्षक चिह्नित किए जाने तथा संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा उक्त सूचनाएँ जिला पुलिस अधीक्षक से साझा किए जाने बाबत पालना करवाए जाने हेतु आपके अधीनस्थ अधिकारियों को अविलम्ब निर्देशित कर, इस विभाग को भी अवगत कराने का श्रम करावें।

● संलग्न : उपरोक्तानुसार

● **(मुकेश पारीक)** शासन उप सचिव, गृह

3. ई-फाइलिंग/राजकाज एप्लीकेशन लागू किए जाने के प्रमाण-पत्र के संदर्भ में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/कम्प्यूटर/ई-फाइल/2022-23/002 दिनांकः 24.02.2023 ● समस्त संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मु.) प्रा. एवं मा. शिक्षा, समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, समग्र शिक्षा, समस्त अनुभाग अधिकारी, माध्यमिक व प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय ● विषयः ई-फाइलिंग/राजकाज एप्लीकेशन लागू किए जाने के प्रमाण-पत्र के संदर्भ में। ● प्रसंगः शिविरा/माध्य/कम्प्यूटर/ई-फाइल/2022-23/02170/001 दिनांक 30.01.2023

माध्यमिक एवं प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय के अधीन समस्त कार्यालयों में राजकाज एप्लीकेशन पर ई-फाइल सिस्टम 30.01.2023 से लागू किया जा चुका है एवं माध्यमिक एवं प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय इससे पहले से ई-फाइल मॉड्यूल अपना चुके हैं। उक्त के क्रम में समस्त संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला शिक्षा अधिकारी मा. एवं प्रारंभिक शिक्षा तथा मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि निदेशालय से किए जाने वाले समस्त पत्राचार ई-फाइल के माध्यम से ई-साइन का प्रयोग करते हुए ही किए जाए। निदेशालय के समस्त अनुभाग अधिकारियों को भी निर्दिष्ट किया जाता है कि उच्चाधिकारियों को ई-फाइल मॉड्यूल के जरिए प्रेषित की जा रही समस्त पत्रावलियों में अधीनस्थ कार्यालयों के 30.01.2023 के उपरांत जारी पत्र ई-साइन के द्वारा जारी शुदा हों, यदि अधोहस्ताक्षरकर्ता के संज्ञान में आता है कि अनुभाग अधिकारियों द्वारा अधीनस्थ कार्यालयों से बिना ई-साइन के ऑफलाइन 30.01.2023 के बाद जारी पत्र निदेशालय की ई-फाइल पर प्रोसेस किए गए हैं तो इस संदर्भ में संबंधित अनुभाग अधिकारी की जिम्मेदारी सुनिश्चित की जा सकेगी। यहाँ उल्लेखनीय है कि न्यायालय/वादकरण संबंधी पत्रावलियों एवं जाँच संबंधी मामलों की पत्रावलियों को भी यथासंभव ई-फाइल प्रणाली के माध्यम से प्रस्तुत किया जाए।

शिक्षा विभाग के समस्त जिला एवं ब्लॉक स्तर कार्यालयों के कार्यालयाध्यक्ष संलग्न प्रपत्र में उनके कार्यालय में ई-फाइल सिस्टम लागू किए जाने के संदर्भ में दिनांक 27.02.2023 सायं 3 बजे तक प्रमाण-पत्र संबंधित संयुक्त निदेशक एवं मंडल स्तरीय नोडल अधिकारी (ई-फाइल मॉड्यूल) को प्रस्तुत करेंगे एवं समस्त संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा अधोहस्ताक्षरकर्ता को अपने अधीनस्थ कार्यालयों (ब्लॉक एवं जिला स्तरीय कार्यालय) के संदर्भ में इस आशय का एक समेकित प्रमाण-पत्र दिनांक 27.02.2023 सायं 5 बजे तक प्रस्तुत करेंगे। उक्त निर्देशों की अनुपालना के संदर्भ में समस्त सयुंक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा की एक रिव्यू मीटिंग दिनांक 28.02.2023 को जरिए गूगल मीट, सायं 4.30 बजे की जाएगी। अतः निर्देशों को गंभीरतापूर्वक लेवें।

● **(गौरव अग्रवाल)** निदेशक, माध्यमिक एवं प्राथमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

प्रमाण-पत्र

(शिक्षा विभाग के समस्त कार्यालयों में ई-फाइल मॉड्यूल (राजकाज एप्लीकेशन) लागू किए जाने के संदर्भ में जिला एवं ब्लॉक स्तरीय कार्यालयों के कार्यालयाध्यक्षों के लिए)

मैं.....(नाम).....(पदनाम)..... (कार्यालय का नाम) के कार्यालयाध्यक्ष होने के नाते प्रमाणित करता/करती हूँ कि मेरे कार्यालय में समस्त पत्र/पत्रावलियाँ ई-फाइल मॉड्यूल (राजकाज एप्लीकेशन) पर ही प्रोसेस की जा रही है। न्यायालय/वादकरण संबंधी पत्रावलियों एवं जाँच संबंधी मामलों की पत्रावलियों को भी यथासंभव ई-फाइल प्रणाली के माध्यम से प्रोसेस किया जा रहा है।

दिनांक.....

स्थान.....

प्रमाण-पत्र प्रस्तुतकर्ता के हस्ताक्षर

नाम.....

पदनाम.....

प्रमाण-पत्र

(समस्त संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा द्वारा शिक्षा विभाग के समस्त कार्यालयों में ई-फाईल मॉड्यूल (राजकाज एप्लीकेशन) लागू किए जाने के संदर्भ में प्रस्तुत किए जाने योग्य मंडल स्तरीय समेकित प्रमाण-पत्र)

मैं.....(नाम).....(पदनाम)..... (कार्यालय का नाम) ई-फाइल मॉड्यूल हेतु मंडल स्तरीय नोडल अधिकारी होने के नाते प्रमाणित करता/करती हूँ कि मेरे अधीनस्थ शिक्षा विभाग के समस्त जिला एवं ब्लॉक स्तरीय तथा मेरे स्वयं के मंडल स्तरीय कार्यालय में समस्त पत्र/पत्रावलियाँ ई-फाइल मॉड्यूल (राजकाज एप्लीकेशन) पर ही प्रोसेस की जा रही हैं। न्यायालय/वादकरण संबंधी पत्रावलियों एवं जाँच संबंधी मामलों की पत्रावलियों को भी यथासंभव ई-फाइल प्रणाली के माध्यम से प्रोसेस किया जा रहा है।

दिनांक.....

स्थान.....

प्रमाण-पत्र प्रस्तुतकर्ता के हस्ताक्षर

नाम.....

पदनाम.....

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

माह : मार्च, 2023	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम	प्रसारण समय : दोपहर 12.35 से 12.55 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री
01.03.23	बुधवार	कोटा (जयपुर)	12	अंग्रेजी अनिवार्य	–	परीक्षामाला	मंजूषा यादव
02.03.23	गुरुवार	जोधपुर	12	गणित	–	परीक्षामाला	डॉ शशि नैन
03.03.23	शुक्रवार	जोधपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	–	परीक्षामाला	सीमा खत्री
04.03.23	शनिवार	जोधपुर	नो बेग डे गैर पाठ्यक्रम आधारित				
08.03.23	बुधवार	जयपुर	8	गणित	–	परीक्षामाला	तृप्ति शुक्ला

कार्यदिवस–05 ● पाठ्यक्रम आधारित–04 ● गैर पाठ्यक्रम आधारित–1
(इन्द्रा सोनगरा) प्रभागाध्यक्ष शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान, अजमेर

शिविरा पञ्चाङ्ग

मार्च-2023					
रवि		5	12	19	26
सोम		6	13	20	27
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरु	2	9	16	23	30
शुक्र	3	10	17	24	31
शनि	4	11	18	25	

मार्च 2023 ● कार्य दिवस–23, रविवार–04, अवकाश–04, उत्सव–04 ● 03 मार्च : विश्व श्रवण दिवस (समग्र शिक्षा)। **06 मार्च :** होलिका दहन (अवकाश)। **07 मार्च :** धुलण्डी (अवकाश)। **15 मार्च :** विश्व उपभोक्ता दिवस (उत्सव)। **23 मार्च :** चेटीचण्ड (अवकाश–उत्सव)। **30 मार्च :** रामनवमी (अवकाश–उत्सव), राजस्थान दिवस (उत्सव)। **मार्च–2023 :** (1) मा.शि.बोर्ड राजस्थान, अजमेर की माध्यमिक/प्रवेशिका एवं उच्च माध्यमिक/वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षाओं का आयोजन। (2) बोर्ड परीक्षा आयोजन के कारण सामुदायिक बाल सभा का आयोजन स्थगित रखा गया है। ● प्रत्येक मंगलवार–IFA नीली गोली (कक्षा 6–12), IFA गुलाबी गोली (कक्षा 1–5) (समग्र शिक्षा) ● प्रत्येक शनिवार–विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन–अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी। सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAY यानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें। ● DAG की पंचम बैठक का आयोजन इस माह में किया जाना है।

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उदयपुर
प्रभाग -4 , शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान ,अजमेर
March - 2023
Monthly telecast schedules for 12 TV channels (One Class, One Platform) of PM eVidya

S.No.	Class	Link for Monthly schedule	QR Code	S.No.	Class	Link for Monthly schedule	QR Code
1.	Class I	https://bit.ly/41tVldw		7	Class VII	https://bit.ly/3mczgQt	
2	Class II	https://bit.ly/3ZrJQBQ		8	Class VIII	https://bit.ly/3xUDf6X	
3	Class III	https://bit.ly/3Z75Di8		9	Class IX	https://bit.ly/41xFj2k	
4	Class IV	https://bit.ly/3xYfAm6		10	Class X	https://bit.ly/3ZmKnVt	
5	Class V	https://bit.ly/3Z67X9k		11	Class XI	https://bit.ly/41udc48	
6	Class VI	https://bit.ly/3mdbHHi		12	Class XII	https://bit.ly/3Y6gWWs	

Rajasthan Education Department

प्राचीन वाङ्मय में समुद्री ज्ञान-संपदा

❒ डॉ. शंकरलाल शास्त्री

हमारी धरती माँ की अपार संपदाओं में सागरों की अद्भुत जलराशि का वर्णन हमें वैदिक काल से ही देखने को मिलता है।

सरसामस्मि सागर (गीता10.24)

गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं, जलाशयों में मैं समुद्र हूँ।

अमूर्या उप सूर्येयाभिर्वा सूर्य: सह।
ता नो हिन्वन्त्वध्वरम्।।
(अथर्ववेद 1.1.4.19)

अर्थात् सागर से उठा जल वाष्पीकृत होकर सूर्य ताप के प्रभाव से शुद्ध होकर अमृत बनता है और वृष्टि करता है। वह जल अमृत रूप बनता है। जल में औषध से आयुवृद्धि के साक्ष्य देखने को मिलते हैं। समुद्र के क्षारीय जल को वाष्पीकृत करने के लिए सूर्य द्वारा परिशुद्ध कर समुद्री जल को काम में लेने की सलाह वैदिक वाङ्मय में बहुत से स्थलों पर दी गई है। वहीं सूर्य की किरणों से हमारे शरीर की जीवनी शक्ति का विकास होता है। जैसा कि अथर्ववेद के अपां भेषज सूक्त में कहा है-

आप: पृणीत भेषजं वरुथं तन्वे ३ मम।
ज्योक् च सूर्यं दृशे ।।

अर्थात् हे जल समूह! (समुद्र) आप जीवन की रक्षा करने वाली औषधियों को हमारे शरीर में स्थित करें जिससे हम निरोग होकर सुदीर्घकाल तक सूर्य देव का दर्शन करते रहें। समुद्री जल का सूर्य की किरणों के साथ घनिष्ठ संबंध है। सूर्य के जल अर्पण का तात्पर्य मुखमंडल (चेहरे) पर ओज और कान्ति का होना है। यह न केवल एक प्रार्थना स्तुति का ही द्योतक है बल्कि समुद्र से उठने वाले जल और सूर्य की ऊर्जा, वाष्पीकरण पद्धति और समुद्र में समाई अपार औषधी संपदा का भी रहस्योद्घाटन करता है। जल समूह (सागर) में सभी औषधियाँ समाहित हैं। जल में ही सर्वसुखकारी अग्नि तत्व समाहित है। सभी औषधियाँ जलों से प्राप्त होती हैं। जल अमृत है।

अप्स्व अन्तरमृतमप्सुभेषज्मपा..।

बादल बनने की वैज्ञानिक पद्धति का वर्णन हम कालिदास के मेघदूत खंड काव्य में

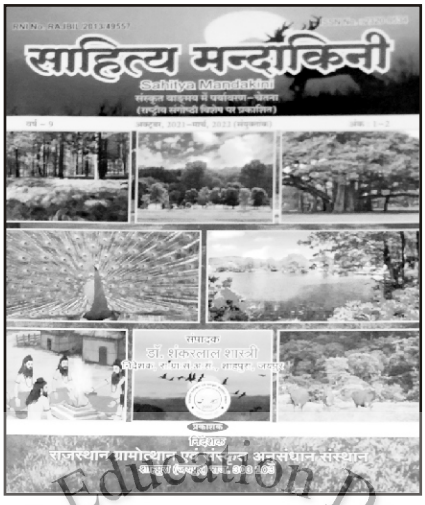

देख सकते हैं -

धूमज्योति: सलिलमरुता सन्निपात: क्व मेघ:।

अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में कहा गया है कि मानव समुद्र, नौका व यान आदि के माध्यम से जनहित में अपना महनीय योगदान दे सकता है। ऐसे में वे निश्चय ही श्रेष्ठ पद के अधिकारी होते हैं-

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यापन्नं कृष्ट्य संबभून:।

यहाँ पर वैज्ञानिक दृष्टि से समुद्र में नौका आदि के क्षेत्र में प्रवीणता की बात पर आमजन के कल्याण हेतु ऐसी तकनीकों को आगे बढ़ाते हुए देश हित में अपने योगदान की बात कही गई है।

अथर्ववेद के प्रथम कांड में वेदनाव: समुद्रिय: (1.25.7) समुद्र में जिस मार्ग से जहाज चलते हैं ऐसे यानों का पूर्ण ज्ञान जल के अधिपति वरुण को है। वशिष्ठ और वरुण की समुद्री यात्रा, यात्रा में कारीगरी व इसी प्रकार के बहुत से दृष्टांत हमें वैदिक वाङ्मय में देखने को मिलते हैं। इतना ही नहीं ऋग्वेद में समुद्र में उठने वाली लहरों, अश्विनी कुमारों, चक्रवात व रत्नगर्भा कही जाने वाली धरा पर स्थित समुद्री एवं वहाँ की बहुमूल्य जीवनदायिनी औषधियों के महत्त्वपूर्ण पक्षों को अपने सूक्तों के माध्यम से ऋषियों के कंठों से गूंजी वाणी में गूंथा गया है। ऋग्वेद में बहुत से स्थलों पर वरुण देव नौका द्वारा समुद्री यात्रा के साथ अथर्ववेद में भी नौकाओं व पोतों के साक्ष्य मिलते हैं। हमें जल प्रदूषण के साथ वैचारिक प्रदूषण से भी बचें रहने की बात अथर्ववेद में कही गई है-

यत्पिबामि सं पिबामि समुद्र इव संपिब।
यत्गिरामि सं गिरामि समुद्र इव संगिर:।।

अथर्ववेद में सभी के कल्याण के लिए वर्णित आठ प्रकार के जलों में शं ते सन्त्वनूप्या (अथर्ववेद 19.2)

कहकर सागर के जल व उसके उपयोग की बात कही है।

याज्ञवल्क्य ने समुद्री यात्रा व पोतों का उल्लेख कर प्राचीन ज्ञान-संपदा के कई महत्त्वपूर्ण संदर्भों का उल्लेख किया तो वहीं काश्मीरी कविराज सोमदेव ने कथासरित्सागर में समुद्री ज्ञान कौशल का परिचय दिया है। पुराणों में समुद्र को देव रूप में माना है। हमारी भारतीय नौसेना का आदर्श ध्येय वाक्य 'शन्नो वरुण:' अर्थात् वरुण देव सदा हमारा कल्याण करें। रामायण में समुद्र का वर्णन बहुत से स्थलों पर मिलता है तो वहीं समुद्र में आने वाले ज्वार 1.48.3 (ऋग्वेद), ऋग्वेद 7.47 हवाओं, समुद्री गतिविधियों, नौकाओं व पोतों के साक्ष्य मिलते हैं। वाल्मीकि रामायण में रावण के समुद्री पोतों का उल्लेख मिलता है। अयोध्या काण्ड में समुद्र से जुड़े प्रसंग वर्णित हैं। आचार्य चाणक्य जिन्होंने चाणक्य नीति लिखी और कौटिल्य अर्थशास्त्र का निर्माण किया उन्होंने समुद्री पोतों के अधीक्षण, जल मार्ग रीति-नीति की चर्चा की है। वाल्मीकि रामायण में मेघगर्जना के साथ तड़ित उत्पन्न होने व सागर की लहरों से जुड़ा पक्ष प्रस्तुत किया है-

सागरस्योर्मिजालानामुरसा शैलवर्ष्मणाम्।
अभिघ्नंस्तुमहावेग: पुपुवे स महाकपि:।।
सागरंभीमनिर्हादं कम्पयामासतुर्भृशम् ।

वहीं तड़ित से सूक्ष्म कीटाणुओं का खात्मा भी बताया गया है तो वहीं दूसरी ओर आकाशीय बिजली गिरने की कई अप्रिय घटनाएँ घटती हैं साथ ही समुद्र में कई प्राकृतिक घटनाएँ प्रकृति से छेड़छाड़ के कारण बढ़ती जा रही है। अथर्ववेद 1.6.33 में जल से विद्युत निर्माण के

Rajshan Education Department

साथ, सूर्य व वड़वानल जैसे प्रसंगों का वर्णन कर जल से सबके मंगलमय जीवन की कामना की गई है।

अथर्ववेद के अनुसार सूर्य की किरणें समुद्र के खारे जल को पीकर वर्षा के माध्यम से पुनः पृथ्वी पर शुद्ध जल पहुँचाती हैं। सूर्य की किरणों से चिकित्सा की जाती है। समुद्री जल का मेघ के माध्यम से वृष्टि होने पर इन्द्रधनुष के प्रतीक रूप में ऐसी किरणें नेत्रविकार के निदान में लाभकारी मानी गई हैं। ऐसा साक्ष्य अथर्ववेद देता है–

सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य।
योरुष्केशं विच क्षणम् ।।
(अथर्ववेद 13.2.23.20)

सर्वस्नावामालयं वरुणस्य च।
नागानामालयं रम्यमुत्तमं सरितां पतिम्।।

अर्थात् नदियों का स्वामी वह महासागर निखिल बहुमूल्य रत्नों की खान के प्रतीक वरुण निवास स्थान और नागों का रमणीय उत्तम गृह है। पांचजन्य शंख को तो रत्नों का आकर माना गया है–

पाञ्चजन्यस्य जननं रत्नाकरमनुत्तमम्।

बर्लिन विश्वविद्यालय सहित कई शोधों ने यह सिद्ध किया है कि शंख ध्वनि से कीटाणुओं का खात्मा होता है। समुद्री शंख के बजाने से फेफड़े मजबूत होते हैं। शैवाल व समुद्री वनस्पति जो अल्जाइमर (भूलने की बीमारी, न्यूरो संज्ञानात्मक विकार) व कई अन्य बीमारियों में उपयोगी मानी गई है। समुद्र मंथन के साथ ही समुद्री शंख सीपी बहुत उपयोगी माना गया है। उल्लेखनीय है कि समुद्री जीव ही ऐसा प्राणी है जो हानिकारक अपशिष्ट को भी मोती के रूप में बदल देता है। वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण करें तो पाते हैं कि मोती में सर्वाधिक कैल्शियम होता है या यों कहें कि यह कैल्शियम का अद्भुत भंडार है। अंडमान-निकोबार जैसे क्षेत्रों में मोती के क्षेत्र में भरपूर अवसर है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि सीपी न केवल पानी की गंध को दूर कर नाइट्रोजन की मात्रा को ही कम करता है बल्कि ऑक्सीजन के स्तर को भी बढ़ा देता है। अंडमान-निकोबार में सीप के क्षेत्र में बड़ी क्रांति का सूत्रपात कर रोजगार के भरपूर साधन तलाशे जा सकेंगे। सीपी जल को तो शुद्ध करता ही है। अपशिष्ट रूप में छोड़े जाने वाले पदार्थों को मोतियों के रूप में परिवर्तित भी करता है। आज विदेशों तक मोतियों की माँग बढ़ी है। समुद्री गतिविधियों का वर्णन हम सिंधुघाटी सभ्यता, मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई के साक्ष्यों में भी देख सकते हैं।

समुद्र का तात्पर्य संस्कृत में एक विशाल जलराशि से लिया गया है। हमें जीवन में भी सागर की भांति गंभीर और धैर्यवान बने रहने की सीख दी जाती है। प्रकृति के चितेरे चित्रकार महाकवि कालिदास का विश्व प्रसिद्ध नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम के चतुर्थ अंक में महर्षि कण्व शकुंतला को जलाशय तक ले जाकर जीवन का जो अनूठा संदेश दिया है वह आज की युवतियों के लिए जीवन मंत्र है। महर्षि कण्व का जलाशय से बेटी की विदाई का तात्पर्य समुद्र की जल राशि का महत्त्व समझाकर जल संरक्षण का संदेश देना है। हमारे वैदिक वाङ्मय के साथ ही वराह मिहिर कृत बृहत्संहिता में समुद्री ज्ञान के साथ भूगर्भीय जल से जुड़े कई आश्चर्यचकित कर देने वाले सिद्धांत दिए हैं।

वराह मिहिर ने बृहत्संहिता में समुद्री जल के स्वाद व खारेपन को दूर करने सहित जलशुद्धि के लिए महत्त्वपूर्ण संदर्भ एवं उपाय बताए हैं–

कलुषंकटुकं लवणंविरसं
सलिलं यदि वाशुमगन्धि भवेत्।
तदनेन भवत्यमलं सुरसं
सु-सुगन्धिगुणैरपरैश्च युतम्।
(वृहत्संहिता58.122)

वराह मिहिर जैसे वैज्ञानिक ने यह सिद्ध किया कि दीमक और पौधे धरती के गर्भ में छिपी अपार जल-संपदा के संकेतक हो सकते हैं।

वराह मिहिर ने अपनी सुप्रसिद्ध रचना बृहत्संहिता में भूगर्भीय जल और वृष्टि विज्ञान जो कि समुद्र आदि माध्यमों से वाष्पीकरण द्वारा बादलों की वृष्टि, भूमि पर गिरने वाले जल व उसकी उपयोगिता पर अपनी इस रचना में महत्त्वपूर्ण पक्षों को उजागर किया है।

हम कल्पना करें कि समुद्र न होते तो हमारी पृथ्वी के तापमान की स्थिति क्या होती? आज नौतपा जैसी न जाने कितनी ही घटनाएँ देखने को मिलती हैं। ऐसे में प्राणी मात्र के जीवन को बचाने के लिए सागरों का योगदान अंकनीय है। ऋग्वेद में हमें चार समुद्रों के साथ-साथ बहुत से साक्ष्य देखने को मिलते हैं–

रायः समुद्रांश्चतुरोऽस्मभ्यं सोम विश्वस्तः।
आ पयस्वसहस्रिणः।
(ऋग्वेद9.33.6)

हमारी प्राचीन विद्याओं में प्रकृति की ओर लौटो का शाश्वत सर्वत्र महनीय संदेश दिया गया है।

विशिष्टं ज्ञानमेव विज्ञानम्। विशेष ज्ञान ही विज्ञान है। आज विज्ञान ने अपनी अभूतपूर्व क्रांति का सूत्रपात करते हुए जलाशयों में समाई अपार संपदाओं, उपयोगी औषधियों व जल का वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से देशहित में किए जा रहे कार्यों से सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः का भाव जागृत हो सकेगा तो आइए हम सभी समुद्री संपदा के संरक्षण का संकल्प लें और वर्षा जल की बूंद-बूंद को अमृत स्वरूप मानते हुए इसे अपने जीवन का पर्याय कहे जाने वाले जल को बचाने का संकल्प लें। तभी सच्चे अर्थों में जल बचाएँ, जीवन बचाएँ की सार्थकता सिद्ध हो सकेगी।

निदेशक
राजस्थान ग्रामोत्थान एवं संस्कृत अनुसंधान संस्थान
शाहपुरा, जयपुर (राज.)

स्तृणीत बर्हिरानुषग्घृतपृष्ठं
मनीषिणः।
यत्रामृतस्य चक्षणम्।।

–ऋग्वेद (1.13.5)

भावार्थ–

विद्वान् लोग अग्नि में जो घृत आदि पदार्थ छोड़ते हैं, वे अन्तरिक्ष को प्राप्त होकर वहाँ के ठहरे हुए जल को शुद्ध करते हैं, और वह शुद्ध हुआ जल सुगन्धि आदि गुणों से सब पदार्थों को आच्छादन करके सब प्राणियों को सुखयुक्त करता है।।

भाष्यकार–स्वामी दयानंद सरस्वती

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

मानसिक स्वास्थ्य

❐ डॉ. कुलदीप पंवार

विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा दी गई परिभाषा के मुताबिक दैहिक, मानसिक और सामाजिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ होना ही स्वास्थ्य है। स्वास्थ्य सिर्फ बीमारियों की अनुपस्थिति का नाम नहीं है अर्थात मानसिक स्वास्थ्य भी शारीरिक स्वास्थ्य जितना ही जरूरी है। लैंसेट साइकियाट्री के एक सर्वेक्षण के मुताबिक वर्ष 2017 में 197.3 करोड़ भारतीय मानसिक रोग से पीड़ित थे (पूरी जनसंख्या का 14.3 % भाग) और यदि समस्त बीमारियों को बोझ डेली (DALY) अर्थात विकलांगता-समायोजित जीवन वर्षों में निकाला जाए तो इसमें मानसिक बीमारियों का योगदान 1999 से लेकर वर्ष 2017 तक 2.5% से बढ़कर 4.7% हो गया है। इस सर्वेक्षण में मानसिक बीमारियों का वाई एल डी (YLD) अर्थात विकलांगता के साथ जिए गए वर्ष सबसे ज्यादा 14.5% पाए गए।

मानसिक स्वास्थ्य क्यों जरूरी है ?

1. किसी भी व्यक्ति को अपनी सामाजिक और आर्थिक जिम्मेदारी को वहन करने के लिए मानसिक रूप से स्वस्थ होना जरूरी है, क्योंकि ज्यादातर मानसिक बीमारियों का इलाज लंबा चलता है इसलिए मानसिक बीमारियों से सामाजिक एवं आर्थिक संकट उत्पन्न होता है और दूसरी तरफ सामाजिक और आर्थिक संकट होने से भी मानसिक बीमार होने का खतरा बढ़ जाता है, अर्थात दोनों एक दूसरे को बढ़ावा देते हैं।
2. मानसिक रोगों से जुड़ी सामाजिक शर्म और झिझक के कारण मरीज अस्पताल जाने से कतराते हैं।
3. बहुत सी मानसिक बीमारियों में मरीज को अन्तर्दृष्टि नहीं होती इस कारण मरीज को एहसास नहीं होता कि वो बीमार है, मेडिकल भाषा में इसे साइकोसिस कहा जाता है। इस कारण मरीज अपना इलाज करवाने के लिए खुद अस्पताल नहीं जा पाते और ना ही वो इलाज करवाने के लिए सहमत होते हैं उन्हें यह लगता है कि वो सम्पूर्ण रूप से स्वस्थ है।

प्रमुख मानसिक बीमारियाँ और उनके लक्षण– लैंसेट साइकिएट्रिक जर्नल के मुताबिक भारतीय वयस्क जनसंख्या में मानसिक रोगों की व्यापकता कुछ इस प्रकार है अवसाद 3.3 % एंजायटी डिसऑर्डर 3.3%, बायपोलर डिसऑर्डर 0.55 % और स्किजोफ्रेनिया 0.25% और बच्चों में इडियोपथिक मानसिक विकासीय और बौद्धिक अशक्तता 4.5%, कंडक्ट डिसऑर्डर 0.8 % , अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिस्ऑर्डर 0.42% और ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर 0.35 % ।

अवसाद– अवसाद किसी भी आयु में हो सकता है, इसके तीन प्रमुख लक्षण है मन का हर समय और हर परिस्थिति में उदास होना, जिन कार्यों को करना पहले अच्छा लगता था उनमें मन ना लगना और शरीर में थकावट होना। अगर इन तीन में से दो मौजूद है तो ये अवसाद के लक्षण हो सकते हैं।

इसके अलावा कई और लक्षण जैसे पछतावा होना, बेबसी महसूस होना, निराश होना, अपने आप को नाकाबिल महसूस करना, आत्महत्या के खयाल आना, नींद कम आना और भूख कम लगना इत्यादि अवसाद के लक्षण है। भारत में आत्महत्या की दर जवान लोगों में अधिक है बाकी जनसंख्या के अनुपात में और अवसाद इसका एक प्रमुख कारण है। इसलिए अवसाद को नजरअंदाज करना और मानसिक चिकित्सक से संपर्क समय पर ना करना अत्यधिक हानिकारक हो सकता है।

एंजायटी डिसऑर्डर– इन बीमारियों के प्रमुख लक्षण है अकारण मन में घबराहट, बेचैनी होना, दिल की धड़कन महसूस होना और बढ़ जाना, छोटी-छोटी बातों पर चिंता होना, ध्यान लगाने में दिक्कत होना, दिमाग सुन्न हो जाना, मुँह सूखना अत्यधिक पसीना आना, हाथ पाँव सुन्न हो जाना और उनमें कंपन होना इत्यादि है। फोबिया, जनरलाइज एंजायटी डिसऑर्डर, पनिक डिसऑर्डर इत्यादि इसके कुछ प्रकार है।

स्किजोफ्रेनिया– मानसिक रोगों की कुछ गंभीर बीमारियों में से एक इस प्रमुख बीमारी के लक्षण कुछ इस प्रकार है भ्रम और विभ्रम (delusion and hallucination)।

इस बीमारी में ज्यादातर मरीजों को कुछ ऐसी आवाजें सुनाई देती है जो वास्तविक रूप में होती नहीं है और साथ ही ऐसे मरीज दूसरों पर शक, वहम करना शुरू कर देते हैं। इसके अलावा अप्रासंगिक बात करना, अपनी साफ-सफाई का ध्यान नहीं रखना, चेहरे पर उचित हाव-भाव का नहीं आ पाना इत्यादि इस बीमारी के अन्य कई लक्षण है। इस बीमारी में मरीज को अपनी बीमारी के प्रति अन्तर्दृष्टि नहीं होती और इस कारण इलाज थोड़ा कठिन होता है क्योंकि मरीज को कभी ये महसूस नहीं होता कि वो बीमार है।

व्यसन एवं विश्व में बढ़ती हुई एक नई बीमारी इंटरनेट गेमिंग डिसऑर्डर– किशोरावस्था व्यसन के प्रति अधिक संवेदनशील होती है। व्यसन किसी मादक पदार्थ का भी हो सकता है और किसी आदत/व्यवहार का भी हो सकता है, जैसे आजकल इंटरनेट गेमिंग और सोशल नेटवर्किंग साइट्स की लत। हैरान कर देने वाली बात तो यह है कि दोनों में व्यसन के प्रमुख 6 सिद्धांत लगते हैं- व्यसन को करने की मानसिक बाध्यता, स्वयं को रोक ना पाना, व्यसन को करने से ना कर पाने पर विथड्रावल के लक्षण आना, समय के साथ व्यसन का बढ़ जाना, दूसरी सभी अभिरुचियों का खत्म हो जाना और व्यसन उनके शरीर के लिए खतरनाक है। ये जानते हुए भी उसे करते रहना। सुनने में थोड़ा अजीब लगता है पर यह बिल्कुल सच है। इंटरनेट और सोशल नेवर्किंग साइट्स की लत बिलकुल मादक पदार्थ जैसे शराब की लत की तरह खतरनाक और जानलेवा हो सकती है और इससे ना केवल पढ़ाई खराब होती है वरन् बच्चों का मानसिक और शारीरिक विकास पूरी तरह बाधित हो जाता है।

बायपोलर अफेक्टिव डिसऑर्डर एवं उन्माद– आई.सी.डी. 11 के वर्गीकरण के मुताबिक उन्माद का एक एपिसोड होना भी बायपोलर अफेक्टिव डिसऑर्डर माना जाता है। इस बीमारी में अलग-अलग समय एक ही रोगी में दोनों ध्रुव (बायपोल यानी दो ध्रुव) एक तरफ अवसाद और दूसरी तरफ उन्माद के लक्षण मिल सकते हैं। उन्माद के लक्षण कुछ इस प्रकार है- मन का हर समय हर परिस्थिति हर जगह अकारण प्रसन्नचित अथवा चिड़चिड़ा रहना, स्वभाव और गतिविधि में तेजी आ जाना, अकारण ज्यादा बोलना, बोलने की गति तेज होना, अनजान लोगों से ऐसे बात करना जैसे

Rajasthan Education Department

उन्हें पहले से जानते हो, भव्य भ्रम होना अर्थात अपने आप को पहचान, क्षमता और उद्देश्य के संदर्भ में बड़ा समझना, छोटी-छोटी बातों पर उत्तेजित होना एवं मारपीट करना बहुत ज्यादा खर्चा एवं दान करना इत्यादि।

अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिस्ऑर्डर (ADHD)– 6 साल से कम उम्र में शुरू होने वाली इस बीमारी के 2 प्रमुख लक्षण है ध्यान केंद्रित ना कर पाना और अति सक्रियता होना इन बच्चों को किसी भी काम में ध्यान केंद्रित के लिए दिक्कत होती है खासकर जिसमें संज्ञानात्मक भागीदारी हो, ऐसे बच्चे अपने काम को अधूरा छोड़ दूसरे और दूसरे से तीसरे काम में लग जाते हैं। इसके साथ ही बहुत ज्यादा बेचैनी होना एक जगह टिक कर नहीं बैठ पाना बहुत ज्यादा शोर मचाना इस बीमारी के लक्षण है और इन सब लक्षणों के कारण उनका बर्ताव आवेगशील और लापरवाह हो जाता है और अक्सर उनको कक्षा में इस कारण सजा भी मिलती है और कई बार ऐसे बच्चे अपने को चोटिल भी कर लेते हैं।

मनोग्रसित बाध्यता विकार (ऑब्सेसिव कंपल्सिव डिसऑर्डर)– इस बीमारी में मरीज के मन में अपनी इच्छा के विपरीत बार-बार कुछ ऐसे खयाल आते हैं जो तनाव और बेचैनी उत्पन्न करते हैं और जब तक मरीज उन खयालों से जुड़े कार्य कर न ले तब तक बेचैनी कम नहीं होती। अपने हाथों में गंदगी लगने का बार-बार खयाल आना तथा बार-बार हाथ धोने पर बाध्य होना इसका एक उदाहरण है।

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिस्ऑर्डर– इस समूह में कुल पाँच बीमारियाँ शामिल है ऑटिस्टिक डिस्ऑर्डर, अस्परगर डिस्ऑर्डर, चाइल्डहुड दिसिंट्रग्रेटीव डिस्ऑर्डर, रेट्ट सिंड्रोम और पी. डी. डी.एन.ओ.एस। बच्चों में पाई जाने वाली इन बीमारियों के लक्षण पहले वर्ष से ही दिखाई देने लग जाते हैं, इनमें प्रमुख तौर पर तीन लक्षण होते हैं-

1. पारस्परिक सामाजिक संपर्क का ना होना जैसे कि माँ को देखकर बच्चे का ना मुस्कुराना, माँ से भावनात्मक जुड़ाव ना हो पाना, दूसरे बच्चों के साथ ना खेलना इत्यादि।
2. संचार कौशल का विकास ना हो पाना, भाषा का विकास बाधित होना, आँख से आँख ना मिला पाना इत्यादि।
3. प्रतिबंधित, रूढ़िबद्ध और दोहरावदार व्यवहार का होना, जैसे खाना खाने से लेकर सोने तक एक ही अनुसूची से चलना और ना करने पर चिड़चिड़ा हो जाना, असामान्य खिलौने के साथ जुड़ाव होना जैसे लकड़ी के कुछ टुकड़े इकट्ठे करना और उन्हीं से हर समय खेलना।

डिमेंशिया– इन बीमारियों के समूह में मरीज की संज्ञानात्मक शक्ति कम हो जाती है जिस कारण मरीज के सोचने समझने की बौद्धिक शक्ति, निर्णय करने की शक्ति, याद्दाश्त सभी प्रभावित होती है। ज्यादातर ये बीमारियाँ बढ़ती है और उम्र के साथ बढ़ती है। अल्जाइमर पिक्स डिजीज वास्क्युलर डिमेंशिया इत्यादि बीमारियाँ इस समूह में आती है।

अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के लिए कुछ सलाह

1. अपनी दिनचर्या को बनाए रखना, जरूरी चीजों को इसमें शामिल करना जैसे रोज व्यायाम करना इससे शरीर में एंडोर्फिन और एंकेफलिन बढ़ते हैं और हमे अच्छा महसूस होता है। स्ट्रेस मैनेजमेंट तकनीक जैसे मेडिटेशन करना, योग करना, अपने काम और अभिरुचियों में बैलेंस बनाए रखना इत्यादि।
2. अपनी स्लीप हाइजीन को बनाए रखना। स्लीप हाइजीन का मतलब है एक निश्चित समय पर सोना, कम से कम 6 घंटे लगातार रात को सोना, दिन में 1 घंटे से ज्यादा न सोना एक निश्चित स्थान पर सोना, अपने बिस्तर पर खाने की कोई चीज, काम से संबंधित कोई चीज, मोबाइल इत्यादि कुछ भी ना रखना, सोने से पहले कोई भी उत्तेजक पदार्थ जैसे कॉफी, चाय इत्यादि का सेवन ना करना, सोने से पहले मोबाइल फोन का उपयोग ना करना इत्यादि।
3. मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित कोई भी लक्षण महसूस हो तो जल्द से जल्द अपने नजदीकी चिकित्सालय में संपर्क करना, सामाजिक शर्म और झिझक से बचना।
4. परिवार का सहयोग सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है किसी भी मानसिक बीमारी से उबरने के लिए सामाजिक और पारिवारिक सहयोग बहुत ही जरूरी है।

प्रथम वर्ष जूनियर रेसिडेंट
मानसिक स्वास्थ्य संस्थान
राजकीय मानसिक चिकित्सालय अमृतसर, पंजाब
मो.न.: 9402655165

संदर्भ कक्ष

❐ **गगनदीप पारीक**

सन्दर्भ कक्ष क्या है:– राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् के तत्वावधान में प्रत्येक ब्लॉक पर एक सन्दर्भ कक्ष होगा जिसका संचालन ब्लॉक के किसी राजकीय विद्यालय में हो सकता है जो पीईईओ हो। इसका उद्देश्य राजकीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 12 तक अध्ययनरत विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं को आवश्यक शैक्षणिक एवं थेरेपेटिक सम्बलन प्रदान कर उनकी अन्तर्निहित क्षमताओं को उजागर करना है। सन्दर्भ कक्ष के अधीनस्थ ब्लॉक के समस्त राजकीय व निजी विद्यालयों में बच्चों को सन्दर्भ कक्ष पर स्क्रीनिंग, असेसमेन्ट एवं सम्बलन प्रदान किया जाता है। विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं की विविध आवश्यकताओं के प्रति बेहतर समझ विकसित करने के लिए उनके अभिभावकों हेतु परामर्शदात्री कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, तथा फिजियोथैरेपी एवं स्पीच थैरेपी कैम्प वर्ष में दो बार आयोजित किए जाते हैं। साथ ही असेसमेन्ट कैम्प में चिकित्सकों की अनुशंषा के अनुसार चयनित बालक/बालिकाओं को प्राथमिकता के आधार पर अंग उपकरण वितरित किए जाते हैं एवं विभाग के आदेशानुसार अनेक सुविधा मुहैया करवायी जाती है।

प्रत्येक सन्दर्भ कक्ष पर दो सन्दर्भ व्यक्ति कार्यरत होते हैं जो कि विभागीय नियमावली के अनुसार प्रत्येक सप्ताह में तीन दिवस सन्दर्भ कक्ष पर आने वाले विशेष आवश्कता वाले बालक-बालिकाओं एवं तीन दिवस जिन विद्यालयों में विशेष आवश्कता वाले बालक-बालिकाएँ अध्ययनरत हैं वहाँ संबलन देने हेतु जाना रहता है। ये क्रम चलता रहता है। जिस हेतु सन्दर्भ केन्द्र प्रभारी को प्रस्तावित यात्रा कार्यक्रम महीने के शुरुआत में देना होता है। सन्दर्भ केन्द्र के माध्यम से राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विशेष आवश्कता वाले बालक-बालिकाओं को परिवहन एवं एस्कोर्ट भत्ते, अंधता से ग्रसित बालक को रीडर एवं बालिकाओं को स्टाईपेड भत्ता का भुगतान किया जाता है।

संदर्भ व्यक्ति (CWSN)
संदर्भ केन्द्र रा.उ.मा.वि. बासनी, नागौर
मो.न.: 8432246500

Rajasthan Education Department

Innovative Approaches At MGGS Rudawal, Bharatpur

❐ Rajendra Goyal

The flagship scheme of the Government of Rajasthan to provide quality education in English medium to the deprived sections of society through Mahatma Gandhi Government Schools has really proved benevolent and beneficiary to them. The concept, conceived and executed in 2019 at block level first and further extended to the Panchayat level schools in the coming years, has been the talk of the town because of its success at various levels. In this series, the Mahatma Gandhi Government School, Rudawal, Block Roopwas (Bharatpur) came into existence in the session 2022-23.

Since July 2022, Mahatma Gandhi Government School Rudawal, along with providing quality education through its well-trained teaching staff, has been in news because of its innovative approaches. A few innovative approaches can be mentioned below:

1. The Principal of the Day

Undoubtedly, the role of the Principal or the Head of the Institute is just like a captain who can steer away its ship anywhere in the ocean, and can lead it to a safe zone in the stormy waves. To inculcate the same sense in all the staff members, I have initiated this concept in my school. Every individual teacher has been assigned the role of the principal on a particular day and has been consistently guided to discharge the respective duties in an efficient manner. What gives me more satisfaction is that all the teaching staff members have adopted this innovative approach whole-heartedly and developed a sense of accountability and responsibility among themselves. It has yielded good results and developed leadership qualities in all. The teachers now better understand the role played by the principal with greater sense of compliance.

2. The Concept of Tutor-Guardian

Though, every teacher is naturally a guardian to students in an idealistic way, I have put this concept of Tutor-Guardian at MGGS, Rudawal in practice. Every teacher is given the responsibilities of 30 students, who takes care of their academic, social, emotional and mental development and well being, while solving all their problems readily. This concept has fused a sense of confidence among the students of MGGS, Rudawal who now feel more secure and guided. This approach is welcomed by both the teachers and guardians. This initiative trains the guardian to be more helpful to their wards when it comes to maintain students' punctuality and self study at home. The resonance among the trio: Teacher - Taught – Guardian; turns into a vehicle of change for good.

3. Ten Innovative, Interesting and Positive Facts Daily in the School Assembly

In the assembly sessions, every morning when the mind is readily open to accept new positive things, the time is effectively used for infusing positive thoughts and innovative approaches in ideas among students. Through this activity not only students get the knowledge of the innovations, inventions of the day to day life in the outer world, they also feel motivated to be a part of the same and contribute to society by adopting scientific and innovative approach in their minds.

The students reciprocated this initiative by taking active participation through presenting their own interesting facts that they collect in the small diaries given to them. This whole exercise towards positivity and general awareness among the students makes them comfortable in the study of social science at upper primary and secondary standard and political science at senior secondary standard. The students appear to be preparing for the competitive exams they are to get into post 12th class.

4. Collection of details of the students of the school.

To respect the individuality of the students and to guide them as per their inclination for their career, I framed some four dozen points that render maximum information about a student and help explore the possibilities hidden to be manifested.

1. Best Behaved students
2 Career guidance to all
3 Child Labor survey
4 Child marriage survey
5 Class monitors
6 CWSN students
7 Aptitude in Dancing
8 Most Disciplined students
9 Students Laden with domestic work
10 Aptitude in Drawing
11 Exploitation anywhere in anysense
12 Students Full of Ideas
13 Use of Garima petika
14 Gender equality
15 Health issues: self/Parents
16 Insulate against all abuses
17 Most intelligent academically
18 Irregular students & reason
19 Issues of adolescence
20 Issues on the way home & back
21 Showing leadership qualities
22 Use of Sanitary Napkin
23 Father indulged in Drinking, gambling
24 Miscellaneous issues that hinder study.
25 Students who create Nuisance
26 Most Obedient Students
27 Fully/partially Orphan Students
28 Aptitude in painting
29 Poor/BPL students
30 Those who love Reading most
31 Regular students
32 Students from Rich families
33 Students showing Sensibility
34 Aptitude in Singing
35 Aptitude in Speaking
36 Aptitude in Sports
37 Superstitions,& prejudices
38 Regular consumption of Iron, Folic acid Tablets
39 Violence, Negligence at home
40 Voter students
41 Students from war widows
42 Students who are weak in study
43 Students who work on farm
44 Writing aptitude.
45 Students interested in preparing models

5. Collection of details of the teachers of the school.

Likewise Teachers have been served with the following questionnaire that guides as well as motivates to perform better-

Rajasthan Education Department

Deptt/ Charges/ responsibilities: allotted to you in the school	Board Result in Present School	Outstanding Performance : Mention The Field			Award Received	Punishment Received	Proud of: Mention the areas	Initiative Taken for School Development	Ideas/ Suggestions/ solutions Submitted for school development
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10

Co curricular Activities Conducted	Performance of students in sports	Compliance Scale: Prompt/ Medium/ Poor	Full Compliance Of Order No 601-620: Y/N	Contact with Guardians	Do you Have Updated Mobile Numbers of your students ? Y/ N	Have you updated these mobile numbers on Shala Darpan?	How much time do you take in marking attendance in classroom	Minutes within which you find yourself ready to teach in classroom after shift of period	How have you implemented the 'No Bag Day" as per directions?
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20

What do you Read/ Study regularly that helps your students	Assistance from the community mustered	% of period purely used for effective teaching-Learning process in each period	What do you do to improve your Ability, Skill, Efforts, Intentions, Compliance, Accountability, preparedness to do more for the students?	Do You Have Your Daily Do List for the school?	What have you done to improve students' general awareness, Manners, ration, intellect, skill, competency for life	Do you have the list of students who are fatherless/ motherless/ orphan/ whose parents are severely sick, suffering from any addiction that hinders the study of the student concerned?
21	22	23	24	25	26	27

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

6. No Bag Day Turned into Language Development Activities.

With the shift of medium from Hindi to English, Situations creation was the basic task for the learners to attain linguistic proficiency. Various activities suitable to local surroundings were first planned then executed. For example- "Touch an object and name it" for lower primary students. The result has been more than satisfactory.

7. Massive Resources coming from the society specially the school alumni.

The constant interaction with the community and the work being done within the premises of the school is attracting massive assistance from all box of life. Jersey, Topa, Shoes and socks for 550 students worth Rs Three Lac have been distributed as Sankranti Bonanza. Construction of 4 th Hall within my short tenure of 7 months is on and it is satisfactory. A Toilet cum Urinal in 500 square feet area with Rs 2 lac has been constructed by my ex student Mr Tushar Mittal. The construction work is constantly on since my joining the school and I myself have promised to donate Rs One Lac per annum to my school.

These are a few examples of innovative approaches that I have initiated in my school since taking charge in July 2022. I feel contented and satisfied when I see my staff members accepting these approaches readily, honestly and whole heartedly. The results of these innovations give us further motivation.

I am very much thankful to my staff members and the department to give me an opportunity to be a part of this initiative.

Jai Hind!

Principal
MGGS, Rudawal
Bharatpur
Mob.: 9982953061

रपट

अब्दुल कलाम व्यक्तित्व विकास योजना भ्रमण

❒ कंचन जांगिड़

रे गिस्तान के छोटे से गाँव से तय किया कन्याकुमारी के समुद्र तक का सफर– भारत भ्रमण मेरे लिए किसी सपने के पूरा होने जैसा।

मैं कंचन कुमारी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बाडेट, ब्लॉक–अलसीसर, जिला झुंझुनूं में कक्षा 9 की छात्रा हूँ। हाल ही में मेरा चयन ए.पी.जे. अब्दुल कलाम व्यक्तित्व विकास उन्नयन भ्रमण के लिए हुआ और उसके तहत मैंने पूरे भारत का भ्रमण किया है। इस भ्रमण के दौरान मैंने जो सीखा, अपने देश के विभिन्न राज्यों की भिन्न–भिन्न संस्कृति से मेरा जो परिचय हुआ उस पर मैं अपने विचार आप लोगो से साझा करना चाहूँगी।

सर्वप्रथम हम दिनांक 04 जनवरी, 2023 को घर से चूरू की कस्तूरबा गाँधी विद्यालय में पहुँचे उसके बाद रात को हमें वहाँ पर सब्जी–पूरी और दाल का स्वादिष्ट खाना दिया गया फिर अगले दिन हम 9:00 बजे वहाँ से अंतर राज्य भ्रमण के लिए रवाना हो गए।

दिनांक 5 जनवरी, 2023 को हमने सबसे पहले सालासर बालाजी के दर्शन किए। उसके बाद हमने वहाँ पर होटल में नाश्ता किया, उसके बाद हमने अंजनी माता के दर्शन किए फिर हमें वहीं पर एक धर्मशाला में दोपहर का खाना खिलाया गया फिर हम वहाँ से पुष्कर जी के लिए रवाना हो गए। फिर रात को हम पुष्कर में ब्रह्मा जी के मंदिर के दर्शन के लिए गए किंतु वहाँ मंदिर तो बंद था फिर हमने ब्रह्म घाट के दर्शन किए, फिर हम होटल में वापस आ गए और रात का खाना खाकर सो गए।

दिनांक 6 जनवरी, 2023 को हम सब सुबह जल्दी ही नाश्ता करके चित्तौड़गढ़ के लिए रवाना हो गए वहाँ पहुँचकर हमने सबसे पहले चित्तौड़गढ़ का किला देखा वहीं पर विजय स्तंभ, कीर्ति स्तंभ, रानी पद्मावती का महल, सती का द्वार, जौहर कुंड और गौमाता का टैंक भी देखा जिसे पहले सास–बहू का टैंक भी कहा जाता था। हम सबको वहाँ एकत्र कर सब स्थानों के बारे में बताया गया जैसे कि यह महल किसने

बनवाया था, किले का निर्माण किसने करवाया था। विजय स्तंभ में कितनी सीढ़ियाँ थी और कितना फिट ऊँचा है। कीर्ति स्तंभ के बारे में भी इसी प्रकार हमें बताया गया फिर हम वहाँ से रवाना हो गए। विजय स्तंभ को देखकर और चित्तौड़गढ़ के किले को देखकर हमारा मन अभिभूत हो गया। हमें राजस्थान की जो प्राचीन गौरवशाली संस्कृति है उसे अपनी आँखों से देखने का मौका मिला। यह हमें बहुत अच्छा लगा। इसके बाद हम मध्य प्रदेश मंदसौर के लिए रवाना हो गए। मंदसौर में हमने पशुपतिनाथ का मंदिर देखा और वहाँ शेषनाग भी देखें। वहाँ सुंदर–सुंदर वस्तुओं के मेले लगे थे, जहाँ पर वहाँ के स्थानीय कलाकृतियाँ बिक रही थी। जहाँ से हमने भी अपनी पसंद की कई वस्तुएँ खरीदी फिर हमने होटल में रात को खाना खाया और हम सभी महाराष्ट्र के औरंगाबाद के लिए रवाना हो गए।

दिनांक 7 जनवरी, 2023 को हम सुबह नाश्ता करके औरंगाबाद की गुफा देखने के लिए रवाना हुए सभी लोग गुफाएँ देखने के लिए एक जगह एकत्र हुए। फिर हम सभी को गुफाओं के बारे में बताया गया कि कैसे इनका निर्माण हुआ और फिर हमने वह गुफा भी देखी जिसको हम हमारे बीस रुपए के नोट के पीछे देखते हैं। उस गुफा को देखकर मेरा रोम–रोम पुलकित हो उठा फिर हम सबने एलोरा की गुफाएँ देखी। सभी को गुफाएँ बहुत पसंद आई। घृष्णेश्वर मंदिर के दर्शन के लिए भी जम गए लेकिन देर होने के कारण हम बाहर से दर्शन करके वापस आ गए। फिर हमने खाना खाया और महाराष्ट्र के नांदेड़ के लिए रवाना हो गए। दिनांक 8 जनवरी, 2023 को हम सुबह 5:00 बजे नांदेड़ पहुँचे वहाँ हमें होटल में ठहराया गया और वहाँ सुबह हम नाश्ता करने के बाद गुरुद्वारे के दर्शन के लिए रवाना हो गए जहाँ साफ–साफ यह कहा गया कि सभी बच्चे व स्टाफ अपने सिर को कपड़े से ढक कर रखें। हम सब सिर ढककर गुरुद्वारा के दर्शन करने पहुँचे। हमने वहाँ पर दर्शन किए, गुरु ग्रंथ साहिब को मत्था टेका और फिर हम सब को वहाँ पर प्रसाद दिया गया और उस स्वादिष्ट प्रसाद को हमने जब खाया तो हमें बहुत अच्छा लगा और उसके बाद वहाँ से हम हैदराबाद के लिए रवाना हो गए। बीच में हमने अनेक नदियाँ देखी क्योंकि मेरा जन्म राजस्थान के रेगिस्तानी इलाके में होने के कारण मैंने कभी कोई नदी नहीं देखी थी। मैंने तो सिर्फ बालू के टीले ही देखे थे लेकिन मुझे नदियों को, झीलों को तथा उनसे निकलने वाली नहरों को देखकर काफी अच्छा लगा। बीच में हमने गोदावरी नदी भी देखी फिर रात को हमने हैदराबाद में चारमीनार देखा और वहाँ पर हमारी फोटो भी ली गई।

दिनांक 9 जनवरी, 2023 को हम लोग कर्नाटक के लिए रवाना हो गए। कर्नाटक में हमने

Rajasthan Education Department

प्रसिद्ध तुंगभद्रा नदी देखी। वहाँ हमें चाय पिलाई गई और फिर हम लोग मैसूर के लिए निकल पड़े। हम 10 जनवरी सुबह 6:00 बजे मैसूर पहुँचे वहाँ हम एक बड़े होटल में रुके। सुबह जल्दी नहा धोकर हम वहाँ पर नाश्ता करने के लिए हॉल में इकट्ठे हो गए। नाश्ते में हमें केले के पत्ते पर डोसा नारियल की चटनी और सांभर आदि दिए गए। दक्षिण भारतीय व्यंजन को खा कर मन बहुत खुश हुआ। फिर हम मैसूर महल और वृंदावन गार्डन को देखने के लिए गए। वहाँ पर बहुत सुंदर-सुंदर, झरने हरियाली, श्री कृष्ण जी की मूर्ति थी। वहाँ पर कुछ दुकानें भी थी जहाँ पर हमने अपनी पसंद का सामान लिया। फिर हम वहाँ से मदुरई तमिलनाडु के लिए रवाना हो गए।

दिनांक 11 जनवरी, 2023 को हम मदुरई पहुँचे। वहाँ हम सब होटल में रुके। सुबह नाश्ता करके हम मदुरई के विशालतम मंदिरों में से एक मीनाक्षी मंदिर के दर्शन करने के लिए गए। हमने उस मंदिर में जब प्रवेश किया तो हमने देखा कि वहाँ बहुत भीड़ थी तो दर्शन करने में हमें समय लगा। फिर उस मंदिर में हमने देखा कि वहाँ के लोगों ने लाल व काले कपड़े पहन रखे थे। फिर हम मंदिर से वापस लौटे तो रास्ते में कई जगह दुकानें थी। जिससे मैंने अपने परिवार के लिए और दोस्तों के लिए उपहार खरीदे। फिर उसके बाद हम सभी बच्चे रामेश्वरम के लिए निकल पड़े। दिनांक 12 जनवरी, 2023 को हम सब लोग रामेश्वरम के प्रसिद्ध कई स्थानों पर घूमे सबसे पहले हम हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी देखने गए। जिसे देखकर हमारा मन बहुत खुश हुआ क्योंकि मैंने अपने जीवन में पहली बार समुद्र को देखा था। हिंद महासागर में भारत की जो अंतिम चट्टान जिस पर बैठकर स्वामी विवेकानंद जी ने तप किया था और एक अखंड भारत का सपना देखा था। उसको देखकर मैं अभिभूत हो गई कि एक राजस्थान के छोटे से गाँव से निकलकर आज भारत के सबसे दक्षिणी बिंदु को देखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह बात सोच कर मेरा मन भर आया और मैंने अपने गुरुजनों नेमीचंद जी और अनूप जी सर का मन ही मन बहुत-बहुत धन्यवाद किया कि अगर ये लोग मुझे जाने के लिए उत्साहित न करते और मेरे घरवालों को न मनाते तो मैं इस अवसर को खो देती। मैंने हिंद महासागर में देखा कि वहाँ पर आसमान जमीन के साथ मिलता हुआ दिखाई दे रहा था। फिर वहाँ के एक प्रसिद्ध मंदिर जिसका नाम रामेश्वरम रामनाथ स्वामी मंदिर था। उसके पास स्थित समुद्र में जाकर शिव जी महाराज के दर्शन किए फिर हम सब रामेश्वरम में स्थित एपीजे अब्दुल कलाम का घर जिसे अब म्यूजियम बना दिया गया है, वह देखा फिर उनकी आर्ट गैलरी भी देखी। डॉ एपीजे अब्दुल कलाम का घर देखकर उनके प्रति जो पढ़ा था, जो सुना था वह एकदम आँखों के सामने साकार हो उठा और उनके प्रति मन अपार श्रद्धा से भर गया। फिर हमने तमिलनाडु के प्रसिद्ध शिवलिंग का दर्शन किया और उसके बाद वहाँ बाजार से कई चीजें खरीदी। मैंने एक बात ध्यान दी कि वहाँ के जो केले थे, वह लाल रंग के थे। वहाँ चावल की खेती का दृश्य बहुत सुंदर था। मैंने एक बात देखी कि वहाँ पर चावल के खेतों में पुरुषों से ज्यादा महिलाएँ काम कर रही थी। वहाँ की गाय और वहाँ की बकरियाँ हमारे गाँव की बकरियों से अलग थी।

उसके बाद हम कर्नाटक के हॉस्पेट के लिए रवाना हो गए। 13 जनवरी, 2023 को हम हॉस्पेट में पहुँचे और वहाँ सुग्रीव और बाली गुफा देखने के लिए गए जहाँ रास्ते में हमने कई अलग-अलग रंग के पत्थरों से बने पहाड़ देखें जो देखने में बहुत सुंदर थे। सुग्रीव और बाली गुफा में काफी अंधेरा था। वहाँ हमने यह भी देखा कि हनुमान जी कहाँ स्नान किया करते थे। सुग्रीव गुफा ऋष्यमूक पर्वत पर स्थित है। वहीं प्राचीन विजयनगर साम्राज्य में विरुपाक्ष मंदिर भी हमने देखा उसे देखने के बाद हम लोग नासिक के लिए रवाना हो गए।

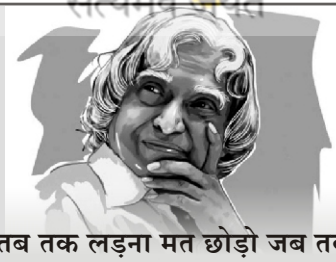

तब तक लड़ना मत छोड़ो जब तक अपनी तय की हुई जगह पे ना पहुँच जाओ- यही, अद्वितीय तुम हो। ज़िन्दगी में एक लक्ष्य रखो, लगातार ज्ञान प्राप्त करो, कड़ी मेहनत करो, और महान जीवन को प्राप्त करने के लिए दृढ़ रहो।

-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

14 जनवरी, 2023 को हम दिन में 11:00 बजे नासिक पहुँचे। वहाँ हम भोजन करने के लिए एक धर्मशाला में रुके। उस समय हम सब त्रिवेणी संगम में स्नान करने के लिए गए। हमने नासिक का प्रसिद्ध त्रिवेणी संगम भी देखा। जिसमें गोदावरी, वारुणी और तरुण की नदियाँ एक साथ मिलती है। उस दिन 12 सालों से जो कुंभ का मेला लगता है वह लगा हुआ था। वहाँ बहुत भीड़ थी। हम सब बच्चे एकजुट होकर चल रहे थे। वापस आते समय हमने साँई बाबा के दर्शन भी किए और उसके बाद हम सब लोग वापस अपने घरों के लिए रवाना हो गए।

जहाँ से हमें अलग-अलग होकर अपने-अपने घर वापस जाना था। 10 दिन के इस साथ में इस सफर में मेरे साथियों से मेरा एक अलग जुड़ाव हो गया था। हमारे साथ में जो सर थे, जो मैडम थी उनके साथ भी एक आत्मीयता पूर्वक रिश्ता बन गया था। हमने साथ-साथ सभी स्थान देखे। घूमे फिरे हमने खूब खुशियाँ मनाई। खूब मस्तियाँ की अपने-अपने अनुभव हमने एक दूसरे के साथ शेयर किए। साथ-साथ फोटो भी खिंचवाई। लेकिन जब अलग होने की बारी आई तब मेरा मन भर आया और हमारे कई साथी तो एक दूसरे से अलग होते हुए रोने भी लगे। हमने एक दूसरे से फिर मिलने का वादा किया और उसके बाद हम अपने-अपने घर वापस आ गए। मैं धन्यवाद देना चाहूँगी शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार का जिन्होंने मुझे इस अवसर के लिए चुना। एक बार तो मैंने भी सोचा था कि मैं ना जाऊँ लेकिन जब मेरे गुरुजनों ने मेरे घर वालों को मनाया और जब मैं गई और अब जब जाकर वापस लौटी हूँ तब मुझे लग रहा है कि अगर मैं ना जाती तो मैं कितना कुछ मिस कर देती। धन्यवाद जिंदगी तूने मुझे यह जो मौका दिया है। मैंने इसे गंवाया नहीं इसलिए मुझे अच्छा लग रहा है। मुझे पूरे भारत का भ्रमण करके बहुत अच्छा लगा। फिर से सभी का धन्यवाद।

छात्रा कक्षा-9
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बाडेट
झुंझुनूं (राज.)

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

खेलों के विकास में योगा का महत्त्व

❒ राजेन्द्र कुमार व्यास

आज पूरा विश्व खेलों को आशा की दृष्टि से देख रहा है, वर्तमान समय में खेलों की इतनी अहमियत बढ़ गई है कि प्रत्येक देश की प्रतिष्ठा का आधार भी उस देश का खेलों में विश्व स्तर पर या ओलम्पिक खेलों में पदकों की संख्या को माना जाने लगा है तथा अधिकांश देश अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए अपने आर्थिक बजट में खेलों एवं खिलाड़ियों के विकास हेतु अधिकाधिक खेल बजट निर्धारित करते हैं, ताकि खिलाड़ी विश्व स्तर पर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर अपने देश का झंडा फहरा सके।

आज पूरा विश्व खेलों में विकास के नए-नए आयाम स्थापित कर रहा है और अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर रहा है। प्रत्येक आधुनिक तकनीक और विज्ञान का सहारा लेकर भी खेलों में सुधार और विकास कर श्रेष्ठता सिद्ध करने के हर संभव प्रयास हो रहे है। इसी शृंखला में योगा भी एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। भारत सहित विश्व के अधिकांश देशों ने खेलों के विकास के लिए योग विज्ञान एवं योग क्रियाओं को एक महत्त्वपूर्ण साधन माना है जो कि शरीर क्रिया विज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित है और योगा का यथा संभव एवं सकारात्मक उपयोग करने से निश्चित रूप से खेल कौशलों एवं विधियों में आमूलचूल आवश्यक सुधार के बाद उच्च स्तर को प्राप्त किया है।

खेलों के लिए आवश्यक शारीरिक क्षमताओं लचीलापन/कठोरता/सहनशीलता/संघर्ष/मनोबल/धैर्य/स्फूर्ति/सकारात्मकता/आत्मविश्वास/मनोविज्ञान के संवेग जैसे महत्त्वपूर्ण गुणों के संर्वधन में योगा की विभिन्न विधाओं (यम, नियम, आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि) का सहारा लेकर निश्चित रूप से सफलता प्राप्त की जा रही है। योग सिर्फ व्यायाम ही नही है बल्कि पूर्ण रूप से विज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित शारीरिक क्रिया है, योग क्रियाओं से शारीरिक-मानसिक एवं आत्मिक सामंजस्य बनता है जो सरलता से श्रेष्ठतम लक्ष्यों को हासिल करवाता है।

वर्तमान समय में योग विधियों के सहारे से खेल कौशलों में अप्रत्याशित सुधार हो रहे हैं, नियमबंध तरीकों से प्रशिक्षण में योग क्रियाओं को शामिल कर कम समय में ही खेलों के स्तरों का विकास हो रहा है, आज विख्यात खेल विशेषज्ञ और खेल प्रशिक्षक खिलाड़ी की हर कमी को दूर करने के लिए प्रथम प्रयासों में योग विधियों का सहारा लेकर खेल कौशल में सुधार कर रहे हैं, खेल प्रशिक्षक प्रशिक्षण के दौरान योग गतिविधियों को शामिल कर रहे हैं। योग की महत्त्वपूर्ण विधि नियम प्रत्येक खिलाड़ी एवं खेलों के लिए सबसे आवश्यक गुण अनुशासन को सिखता है, खिलाड़ी होने का सबसे महत्त्वपूर्ण गुण ही अनुशासित होना है। एक खिलाड़ी अनुशासित होगा तब ही वह अपने इस महत्त्वपूर्ण गुण का सहारा लेकर अनुशासन पूर्ण तरीके से प्रशिक्षण लेगा एवं अपने खेल के महत्त्वपूर्ण कौशलों को नियमबद्ध तरीकों से ग्रहण करेगा तथा खेल प्रदर्शन के दौरान मैदान पर अनुशासित रहकर खेल भावनाओं के साथ अपनी टीम व अन्य टीमों के खिलाड़ियों एवं अन्य महत्त्वपूर्ण खेल दायित्वों वाले व्यक्तियों के प्रशासनिक एवं अन्य दायित्वों वालों के साथ अपने इस महत्त्वपूर्ण गुण के सहारे सफलता को अर्जित कर सकता है।

जब पूर्व में खिलाड़ी को अपने शरीर की शक्ति के विकास के लिए मैदानों में घण्टों दौड़ लगाकर तथा जिम एवं व्यायाम शालाओं में कड़ी मेहनत कर पसीना बहाना पड़ता था, अपने शारीरिक दमखम में वृद्धि के लिए कठिन व्यायाम किया करता था तथा लम्बे समय तक अभ्यास कर शरीर को लचीला-मजबूत व सहनशील बनाता था वही आज खिलाड़ी योग की महत्त्वपूर्ण विधि से विभिन्न आसनों का सहारा लेकर शरीर के छोटे से छोटे अंग, मसल्स और हड्डियों को मजबूती प्रदान कर सकता है तथा संपूर्ण शरीर को ताकतवर एवं दमखम पूर्ण बनाकर आवश्यकता अनुरूप बनाता है तथा प्रत्येक अंग के लिए आवश्यक आसनों का सहारा लेकर कम समय और कम मेहनत कर अपना शरीर खेल के अनुरूप बनाता है। इसी प्रकार एक खिलाड़ी अपने को खेलने के लिए अत्यधिक स्टेमिना और शरीर की आन्तरिक रूप से भी मजबूत करना होता है, जिसके लिए प्राणायाम का सहारा लेता और अपनी आन्तरिक शक्ति तथा श्वास क्रिया को मजबूती प्रदान करता है।

खेल शुरू करने से पूर्व खिलाड़ी अपने शरीर को खेलने के लिए तैयार करने के लिए शरीर को गर्म करता (वार्म अप) है, इसके लिए सूक्ष्म यौगिक क्रियाएँ तथा भस्त्रिका एवं उज्जयी प्राणायाम महत्त्वपूर्ण सहायक सिद्ध हो रही हैं। सूक्ष्म क्रियाओं की सहायता से शरीर के छोटे से छोटे अंग एवं मसल्स के निर्धारित सूक्ष्म यौगिक क्रियाओं के सहारे कम समय में ही शरीर को खेल के अनुरूप वार्मअप कर लेते हैं जिससे खेलों के दौरान मसल्स तथा नाड़ी में खिंचाव की समस्याओं से बहुत हद तक सुरक्षा मिलती है तथा ऐसी ही कुछ सूक्ष्म यौगिक क्रियाएँ होती है जो खेल समाप्त होने के बाद शरीर को बाहरी वातावरण के अनुरूप (कोल्ड डाऊन) करना होता है, शरीर को कोल्ड डाऊन करने के लिए भी योगा में निर्धारित सूक्ष्म व्यायाम एवं शीतकारी प्रणायाम क्रियाओं का सहारा लेकर शीघ्र ही शरीर को अनुकूलता प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण और सहयोगी साबित होती है।

एक श्रेष्ठ और कुशल खिलाड़ी में अप्रत्याशित निर्णय क्षमता होना जरूरी है क्योंकि खेलों में सामान्य परिस्थितियों के साथ ही नकारात्मक परिस्थितियाँ हर स्तर पर सामना करना पड़ता है ऐसे में धैर्य के साथ सकारात्मक एवं परिस्थिति अनुरूप निर्णय लेकर अपनी सर्वश्रेष्ठता साबित करना होता है। योग विधियों में विभिन्न प्राणायाम विधियों के सहारे से जीवन में सकारात्मक एवं धैर्यशीलता का गुण विकसित किया जा सकता है। धैर्य रख कर समयनुसार निर्णय ले सकता है तथा नकारात्मकता को अपने स्वयं पर हावी नहीं होने देता तथा अपने निर्णय से श्रेष्ठ खेल प्रदर्शन कर परिस्थितियों को अपने अनुकुल बना सकता है

Rajasthan Education Department

तथा श्रेष्ठतम खिलाड़ी बन जाता है।

खेल के दौरान दुर्घटना होना या खिलाड़ियों का चोटिल होना आम बात है, ऐसी परिस्थितियों में खिलाड़ी अधिकांशतः तो अल्प समय अवधि में ही पुन: मैदान में लौट आता है, कभी-कभी गंभीर दुर्घटना या चोट में लम्बे समय तक खेलों से दूर रहना पड़ता है, परिस्थिति अनुकूल न हो तो खिलाड़ी अवसादग्रस्त हो जाता है उसे अपने शरीर को पुन: खेल के लिए तैयार करना होता है, ऐसे समय में खिलाड़ी के मानसिक संतुलन को सकारात्मक बनाए रखने एवं खेल से संबंधित गतिविधियों से जोड़े रखने में योग क्रियाएँ बहुत उपयोगी साबित हो रही है, प्राणायाम तथा सह योगिक क्रियाओं के सहारे अपने तनाव तथा नकारात्मकता को खत्म करके उस नकारात्मकता को अपने पर हावी नहीं होने देता तथा लम्बे अन्तराल बाद भी पुन: उसी खेल स्तर के अनुरूप खिलाड़ी मैदान में आते हैं और अपना श्रेष्ठतम खेल कायम रख पाते हैं।

खेलों में सबसे महत्त्वपूर्ण खेल समाप्ति के बाद खेलों के दौरान जो थकान आती है उसे अतिशीघ्र दूर कर अपने शरीर को सामान्य गतिविधियों के लिए पुन: तैयार करना होता है जिसके लिए एक खिलाड़ी योग की सूक्ष्म शारीरिक क्रियाएँ जो पूर्ण रूप से शरीर क्रिया विज्ञान पर आधारित होती है, उन समस्त क्रियाओं से शरीर की थकान को खत्म कर पुन: सामान्य स्थिति में आ जाता है।

खेल के दौरान जीवन के सभी अच्छे और बुरे संवेग आते हैं, अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए सभी संवेगों को संतुलन करना अति महत्त्वपूर्ण होता है जो खिलाड़ियों के खेल स्तर को बनाए रखने और उनके व्यक्तित्व निर्माण के लिए आवश्यक है, संवेगों पर नियंत्रण एवं संतुलन रखने में योगिक क्रियाएँ महत्त्वपूर्ण सहयोगी साबित होकर खिलाड़ियों को श्रेष्ठता से सर्वश्रेष्ठता की ओर ले जाती है।

खिलाड़ियों को खेलों के लिए तैयार होने के लिए कड़ी मेहनत करनी होती है, मेहनत करने के लिए खिलाड़ी को एक सामान्य व्यक्ति से अधिक एनर्जी की आवश्यकता होती है जिसकी पूर्ति के लिए खिलाड़ी प्रोटीन/ कैल्सियम/ वसा/कार्बोहाइड्रेट से भरपूर भोजन करता है ताकि शरीर हृष्ट-पुष्ट और मजबूत रहे, ऐसे गरिष्ठ भोजन के पाचन के लिए भी योग में कुछ विशिष्ट आसन वज्रासन सहित कुछ महत्त्वपूर्ण प्राणायाम भी है जो भोजन के पाचन में सहयोग करते हैं ताकि भोजन का सरलता से पाचन हो जाए और खेल के दौरान शरीर स्वस्थ और मजबूत रहे।

वर्तमान में भारत सहित विश्व के अधिकांश देश अपने खेल प्रशिक्षण केन्द्रों पर योग प्रशिक्षक नियुक्त कर रहे हैं, अभी हाल ही के कुछ वर्षों में भारत खेल मंत्रालय ने भी भारतीय खेल प्राधिकार केन्द्र पर योग प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण शुरू किया है, जिसमें प्रशिक्षण प्राप्त प्रशिक्षकों ने कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय खेलों संघों के माध्यम से विश्व स्तर के खिलाड़ियों के प्रशिक्षण में योग क्रियाएँ शामिल कर खेलों में श्रेष्ठता सिद्ध करवाई है, जो इस बात को संबल दे रहे हैं कि खेलों के विकास के लिए योग विद्या महत्त्वपूर्ण है तथा योगा के बिना खेलों में सम्पूर्णता संभव नहीं है।

शारीरिक शिक्षक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सादुलगंज, बीकानेर (राज.)
मो.न.: 9413480567

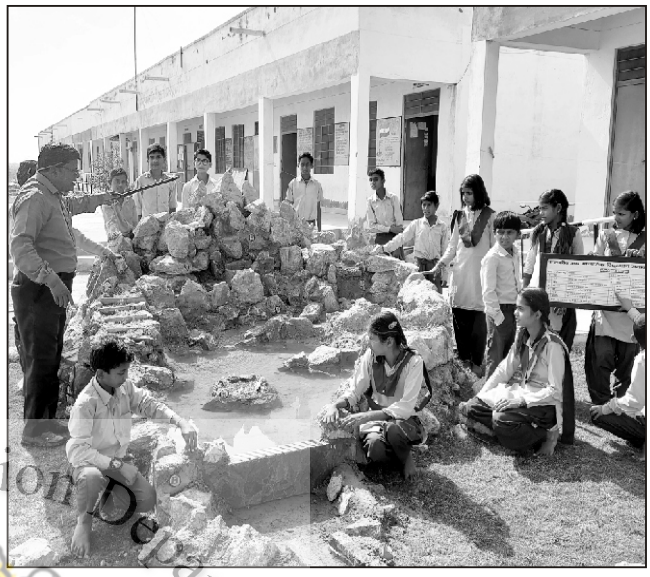

शैक्षिक नवाचार

❒ श्रवण कुमार लक्षकार

शाला सौंदर्यकरण, शैक्षिक नवाचार, बालकेन्द्रित आनंददायी शिक्षण तथा सदैव कुछ नया करने की जिद जब अंतर्मन में हो तो क्या नहीं किया जा सकता? राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रामावास कलां (पाली) के नवीन भवन-परिसर में मुझे कार्य करने के अवसर मिले। वैसे जब आपके अंदर एक सृजनशील अध्यापक हो तो अवसर मिलते नहीं बनाए जाते है, ढूँढ़े जाते हैं। महाकवि रामधारी सिंह दिनकर ने कहा था-

गुण एक से एक प्रखर, छिपे मानवों के भीतर
मेहंदी में जैसे लाली हो, वर्तिका बीच उजियाली हो
बत्ती जो नहीं जलाता है, रोशनी नहीं वो पाता है

मुझे याद है जब मैं राउप्रावि. तालकिया में प्रधानाध्यापक था। वहाँ पर एक पेंटर की लापरवाही व समय पर कार्य नहीं करने के कारण मैंने मन में ठाना कि ऐसे पेंटर को अवश्य ही सबक सिखाना चाहिए। मेरे अंतर्मन का कलाकार जाग उठा। ये मेरे से ज्यादा होशियार थोड़े ही है। बच्चों को पेन्टिंग, नक्शे बनाना, ट्रेसिंग करना, पैमाना व कलर कोम्बिनेशन हम अध्यापक ही तो सिखाते हैं। फिर क्या था? कलर और ब्रुश हाथ में उठा लिए और फिर दीवारें बोल उठी। सभी दीवारों पर नक्शे बना दिए और उद्घाटन हेतु उसी पेंटर को बुला डाला। पेंटर अवाक रह गया।

वो दिन है और आज है- तेरा तुझको अर्पण की भावना से जिस भी विद्यालय में रहा है, शिक्षण के साथ सौंदर्यकरण मेरा प्रिय विषय रहा। कोरोना काल में समय की कोई कमी नहीं थी। नया परिसर, नई दीवारें और समय का कोई बंधन नहीं, संसार, भारत, राजस्थान, पाली, जैतारण, ग्राम पंचायत व विद्यालय के नक्शों के साथ-साथ गणित-अंग्रेजी वर्ग पहेलियाँ, ज्यामिति आकृति से दीवारें बच्चों को आकर्षित करने लगी।

जहाँ चाह! वहाँ राह!! When there is will there is way. प्रधानाचार्य जी ने भी मेरा उत्साहवर्द्धन किया।

भौगोलिक आकृतियाँ :– शाला सौंदर्यकरण के तहत 15×15×6 फीट का कृत्रिम पहाड़ का निर्माण कुछ ऐसे किया गया कि इससे पर्वत, पठार, घाटी, चोटी, सीढ़ीनुमा खेती, प्रपात (झरना), नदी, बाँध, द्वीप, प्रायद्वीप, खाड़ी तो दृश्यगत होते ही हैं। पाइप के जरिए जल पहुँचा कर दो नदियों से सहायक व मुख्य नदी, संगम, डेल्टा, नहर, सहायक नहरों से होता हुआ जल बाल वाटिका तक पहुँचाया जाता है।

पर्वत पर विभिन्न शिक्षण बिन्दुओं को स्पष्ट करने हेतु क्रमांक 01, 02...अंकित किए गए हैं तथा पास में ही संकेत बोर्ड पर वही क्रमांक और परिभाषाएँ लिखी गई है। अब छात्र खेल–खेल में क्रमांक मिलाकर परिभाषा पढ़ते हुए तथा पर्वत से जीवंत दृश्य को देखते हुए स्थायी ज्ञान अर्जित करते हैं।

इस प्रकार भू–आकृति के साथ–साथ जल की गति, उत्प्लावन बल, तैरने–डूबने के सिद्धांत, मिट्टी का अपरदन, अपरक्षण, इन्द्रधनुष, चुम्बक के आवेश (ध्रुव) जैसे शिक्षण बिन्दु सहज ही सिखाए जा सकते हैं।

ये मॉड्यूल भी बना सकते हैं–चूँकि राजकीय विद्यालयों में स्थान की कोई कमी नहीं है। आप चाहते हैं कि उसका उपयोग हो और सौंदर्यकरण भी, तो आप भी ऐसे ही नवाचार कर सकते हैं–

क्र. सं.	नाम मॉड्यूल	आवश्यक अनुमानित स्थल	शिक्षण बिन्दु	क्या लगाया जाए? दर्शाया जाय?
1.	रेगिस्तान	50×20 फीट	मरुदभिद, मरुस्थलीय वनस्पति के अनुकूलन अपरक्षण, अंकुरण, रेतीली मिट्टी, अपरदन	बेर, खेजड़ी, आक, केर, बबूल, नदी की मिट्टी
2.	तालाब (छोटा गड्ढ़ा)	20×20×1 ल. चौ.	जलीय पौधे, जलीय पौधों के अनुकूलन, जलीय जीव तथा अनुकूलन उत्प्लावन बल, तैरने के सिद्धांत	कमल, जलीय पौधे, मेंढ़क, कछुआ, मछली
3.	भूगोल प्रयोगशाला (ऐच्छिक भूगोल विषय वाले विद्यालय में)	10×10 फुट प्रत्येक में	एशिया, यूरोप, अफ्रीका, उ. अमेरिका, द. अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया	प्रत्येक महाद्वीप के नदी, पहाड़ देश, प्रमुख शहर, खनिज अक्षांश देशांतर व अन्य आँकड़े

आपके विद्यालय में भी इस प्रकार नवाचार किए जा सकते हैं। विद्यालय को आपके होने का अहसास होना चाहिए तभी तो पढ़ेगा राजस्थान! तो बढ़ेगा राजस्थान!! जरूरत है मात्र पहल करने की।

हिन्दी क्लब का गठन– शिक्षा का उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास है तथा सर्वांगीण विकास का मतलब शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक व बौद्धिक विकास से है। मात्र कक्षा शिक्षण से ही इन लक्ष्यों को हासिल नहीं किया जा सकता। अतः ग्रामीण पृष्ठभूमि के छात्रों में इनके अतिरिक्त सृजनात्मकता के विकास व भाषा विद्वता अर्जन हेतु ''हिन्दी भाषा क्लब' का गठन किया गया है, जो कि प्रमुख पाठ्य सहगामी क्रिया है।

कक्षा 9 से 12 तक के प्रत्येक छात्र इस क्लब के सदस्य है। अध्यक्ष व सचिव के रूप में कक्षा 12 के छात्रों को जिम्मेदारी दी गई है। प्रभारी के रूप में मेरी भूमिका मात्र मार्गदर्शन व पर्यवेक्षक की रहती है। इस क्लब की प्रमुख गतिविधियाँ इस प्रकार है–

1. विद्यालय के प्रत्येक कक्ष का नामकरण महत्त्वपूर्ण हिन्दी साहित्यकारों के नाम से किया गया। यथा...भारतेन्दु कक्ष, मुंशी प्रेमचंद कक्ष, रवीन्द्रनाथ टैगोर कक्ष, महादेवी वर्मा कक्ष, दुष्यंत कक्ष....आदि।
2. विद्यालय की दीवारों पर तीन श्याम पट्ट इस क्लब हेतु बनाए गए।
3. प्रथम श्यामपट्ट पर हिन्दी साहित्य के प्राचीन काल से अब तक तमाम साहित्यकारों के नाम, जन्म स्थान, तिथि, काव्य के प्रकार (वाद) और प्रमुख रचनाओं के साथ उनके उपनाम अंकित किए जैसे उपन्यास सम्राट, निराला आदि।
4. उक्त प्रथम श्यामपट्ट पर साहित्यकारों के नाम, वर्ष दिनांक 1, 2, 3...जनवरी, फरवरी...दिनांक के क्रमानुसार अंकित किया गया।
5. इस श्यामपट्ट से छात्रों को न केवल साहित्यकारों का जीवन परिचय तो आसानी से याद होता है अपितु आगामी दिनांक को किस साहित्यकार का जन्मदिवस आ रहा है उसकी अग्रिम जानकारी होती है तथा 'बस्ता मुक्त दिवस' पर उसे मनाया जाता है।
6. द्वितीय श्यामपट्ट छात्रों को समर्पित रहता है। इसे भित्ति पत्रिका के रूप में काम में लिया जाता है। छात्र अपनी पसंद की कोई भी रचना कहानी, कविता, चित्र, पहेली या अन्य जो भी पसंद आए, घर से कटिंग लेकर आता है और अपने नाम सहित चिपका देता है।
7. तृतीय श्यामपट्ट पर प्रभारी द्वारा सप्ताह में तीन बार दस–दस (साहित्य या व्याकरण सम्बंधी) प्रश्न लिखे जाते हैं। छात्र इन प्रश्नों के उत्तर कहीं से भी ढूँढ़ कर स्वयं श्यामपट्ट पर लिख देते हैं। (अपने नाम सहित)

क्लब की इन गतिविधियों के चमत्कारिक परिणाम सामने आए हैं। जहाँ शुरू–शुरू में छात्र रचनाएँ लाने उत्तर लिखने आदि में हिचकिचाहट महसूस करते थे, अब उन्हीं छात्रों में रचनाएँ लाने, उत्तर लिखने और स्वयं का नाम श्यामपट्ट पर लिखने की प्रतिस्पर्धा होती है।

मित्रों! इस प्रकार की गतिविधियाँ प्रत्येक विद्यालय में सहज ही करवायी जा सकती है। आवश्यकता मात्र शुरूआत करने की है।

प्राध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रामावास कलाँ, पाली (राज.)
मो.न.: 9660413407

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

इतिहास एवं विषय वस्तु की उपादेयता

❒ ओमप्रकाश लोधा

इतिहास एक सामान्य परिचय:– इतिहास शब्द इति+ह+ आस से मिलकर बना है। जिसका अर्थ होता है – ऐसा ही हुआ।

संस्कृत के यह अस् धातु, लिट् लकार, अन्य पुरुष तथा एकवचन का रूप है। इसका तात्पर्य है यह निश्चय था या ऐसा निश्चित रूप से हुआ। अर्थात बीती हुई घटनाओं को हम इतिहास कहते हैं। किन्तु अतीत की सभी घटनाओं को इतिहास नहीं कह सकते। प्रामाणिक स्रोतों पर आधारित अतीत के क्रमबद्ध ज्ञान को इतिहास कहते हैं। अंग्रेजी भाषा के History शब्द का हिंदी रूपांतरण इतिहास है। History शब्द यूनानी भाषा के Historia या Historica से निकला है जिसका अर्थ है– जानना, ज्ञात करना एवं सत्य का अन्वेषण करना।

यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस को इतिहास का पिता कहते हैं।

हेरोडोटस की पुस्तक का नाम Historia है। इस पुस्तक में भारत और फारस के बीच सम्बन्धों का वर्णन किया गया है।

ग्रीस के लोग इतिहास के लिए हिस्तरी (History) शब्द का प्रयोग करते थे। हिस्तरी शब्द का अर्थ होता है– बुनना। अनुमान होता है कि ज्ञात घटनाओं को व्यवस्थित ढंग से बुनकर ऐसा चित्र उपस्थित करने की कोशिश की जाती थी। जो सार्थक और सुसम्बद्ध हो।

इतिहास की कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार है–

1. मानव की विशिष्ट घटनाओं का नाम ही इतिहास है।
2. हम इतिहास के अंतर्गत अब तक घटित घटनाओं का अध्ययन करते हैं या उनसे संबंध रखने वाली घटनाओं का काल क्रमानुसार वर्णन किया जाता है।
3. प्राचीनता से नवीनता की ओर आने वाली मानव जाति से संबंधित घटनाओं का वर्णन ही इतिहास है।

यह एक यूनानी राजदूत था। जो चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया था। उन्होंने भारत में जो कुछ भी देखा उसका वर्णन इंडिका नामक पुस्तक में किया है। इस काम के लिए उन्हें भारतीय इतिहास के पिता के रूप में जाना जाता है।

लिपि के आधार पर इतिहास को मुख्य तीन भागों में बाँटा गया है –

1. प्रागैतिहासिक
2. आद्य–इतिहास
3. इतिहास

1. प्रागैतिहासिक:– इसे प्रस्तर युग भी कहते हैं। इस काल में मनुष्य ने घटनाओं का कोई लिखित विवरण उद्धृत नहीं किया है। इसलिए इसे प्रागैतिहासिक कहते हैं।

अध्ययन की सुविधा के अनुसार प्रागैतिहासिक को तीन भागों में विभाजित किया गया है–

(A) पुरापाषाणकाल– यह काल 25 लाख ईसा पूर्व से 10 हजार ईसापूर्व तक का माना जाता है। यह शिकार और खाद्य संग्रह के युग के नाम से जाना जाता है।

(B) मध्य पाषाण काल– यह काल 9 हजार ईसा पूर्व से 4 हजार ईसा पूर्व के समय का माना जाता है। इसमें शिकार एवं पशुपालन मुख्य पेशा (व्यवसाय) था।

(C) नव पाषाण काल– यह काल 7 हजार ईसापूर्व से 1 हजार ईसापूर्व तक का माना जाता है। इस काल में कृषि कार्य को प्रमुखता दी गई। इसलिए इसे अन्न उत्पादक युग भी कहा जाता है।

2. आद्य–इतिहास– इसमें लिपि का अविष्कार तो हो गया था। लेकिन इस लिपि को आज तक पढ़ा नहीं जा सका है। आद्य–इतिहास की लिपि को अनेक नामों से जाना जाता है। जैसे– सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि, भाव चित्रात्मक लिपि।

3. इतिहास– इतिहास वह लिखित प्रमाण है जिसके द्वारा हम प्राचीन सभ्यता, संस्कृति व राजतंत्र के बारे में अध्ययन करते हैं। इस समय के लिखित इतिहास को हम पढ़ सकते हैं। समझ सकते हैं। जैसे– वैदिक संस्कृति (जिसमें चारों वेद– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद और ब्राह्मण साहित्य व पुराण सम्मिलित है।)

इतिहास को तीन भागों में विभाजित किया गया है –

(A) प्राचीन काल का इतिहास
(B) मध्य कालीन इतिहास
(C) आधुनिक इतिहास

यह इतिहास पुरातात्विक, साहित्यिक व विदेशियों के वर्णन पर निर्भर है।

कक्षा में इतिहास पढ़ाने से पूर्व दो बातों को ध्यान में रखना अति आवश्यक है–

1. कक्षा का प्रबंधन:–

(A) शिक्षक को कक्षा का प्रबंधन करते समय कमजोर, कम सुनाई देने वाले एवं कम दिखाई देने वाले छात्रों को अग्रिम पंक्ति में बिठाना चाहिए ताकि उन्हें किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं हो।

(B) श्यामपट्ट की उचित ऊँचाई एवं उचित दूरी रखनी चाहिए तथा श्यामपट्ट पर सुस्पष्ट एवं सही लिखने पर ध्यान रखना अति आवश्यक है।

(C) कक्षा–कक्ष का वातावरण शांत एवं सौम्य होना चाहिए। जिससे छात्रों में विषय वस्तु को ग्रहण करने में आसानी रहती है।

(D) कक्षा–कक्ष में महापुरुषों के चित्र लगे होने चाहिए। जिनसे छात्रों को अच्छी प्रेरणा मिलती है।

(E) कक्षा में नक्शा भी लगा होना चाहिए। जैसे– राजस्थान का नक्शा, भारत का नक्शा एवं विश्व का नक्शा आदि।

2. विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण–

(A) शिक्षक को कक्षा–कक्ष में छात्रों के समक्ष विषयवस्तु को सरलीकृत कर प्रस्तुत करनी चाहिए ताकि छात्र अच्छी तरह से समझ कर ग्रहण कर सकें।

(B) छात्रों के पूर्व ज्ञान पर आधारित विषय वस्तु होनी चाहिए जिससे पाठ्यक्रम की तथा पूर्व ज्ञान की क्रमबद्धता बनी रहे।

(C) शिक्षक को कठिन शब्दों को सरलीकृत कर श्यामपट्ट पर लिखना चाहिए।

(D) शिक्षक को इतिहास की विषय वस्तु को बोधगम्य, मनोरंजक, सरल करके एवं शिक्षण अधिगम सामग्री के साथ प्रस्तुत करनी

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

चाहिए।

(E) कमजोर वर्ग के छात्रों पर ध्यान रखना चाहिए। उनसे प्रश्न पूछते रहना चाहिए ताकि वे सक्रिय रह सके।

(F) कमजोर वर्ग के छात्रों की गृहकार्य की जाँच पर पूरा ध्यान रखना चाहिए जिससे वे पाठ्यक्रम में पूर्ण रुचि के साथ स्वाध्याय कर सके।

(G) कमजोर वर्ग के छात्रों को प्रोत्साहित करते रहना चाहिए जिससे उनमें एक आत्मबल व आत्मचेतना जाग्रत हो सके।

विद्यालयों में इतिहास पढ़ाने का औचित्य एवं महत्त्व:-

1. छात्रों में इतिहास ज्ञान वृद्धि का एक महत्त्वपूर्ण साधन है।
2. छात्रों के व्यावहारिक जीवन में इतिहास का ज्ञान बहुत उपयोगी है।
3. छात्रों के व्यापक दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए इतिहास पढ़ाना आवश्यक है।
4. छात्रों में सामाजिक एवं मानसिक परिपक्वता लाने के लिए इतिहास पढ़ाना जरूरी है।
5. छात्रों में राष्ट्रप्रेम की भावना एवं विश्वबन्धुत्व की भावना को विकसित करने के लिए इतिहास पढ़ाना आवश्यक है।
6. छात्रों में इतिहास से अतीत में हुई गलतियों से सीख लेते हुए वर्तमान समय में वैसे ही गलतियाँ पुन: नहीं करने की सीख मिलती है। इसलिए विद्यार्थियों में इतिहास का ज्ञान कराना बहुत ही औचित्य रखता है।
7. इतिहास से हमें राजनीतिक एवं प्रशासनिक गुणों की जानकारी मिलती है। जिनका उपयोग वर्तमान समय में शासन व्यवस्थाओं के संचालन में कर सकते हैं।
8. अपनी संस्कृति और सभ्यता को बनाए रखने के लिए इतिहास पढ़ाना आवश्यक है।
9. छात्र भविष्य में अपनी भूमिका भी इतिहास के रूप में निभा सकते हैं।
10. वर्तमान को समझने में इतिहास का ज्ञान बहुत ही आवश्यक है।

व्याख्याता (इतिहास)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय विरौधा,
धौलपुर (राज.)-328024

पुस्तक समीक्षा

पहली बूँद नीली थी

कवयित्री : सोनू यशराज; **प्रकाशक** : बोधि प्रकाशन, बीकानेर; **संस्करण प्रथम** : 2021; **पृष्ठ संख्या**: 104; **मूल्य**: ₹150/-

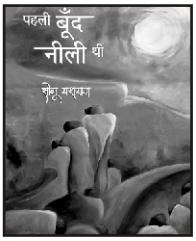

रंग और रेत, संघर्ष और जिजीविषा के प्रदेश राजस्थान के हनुमानगढ़ में जन्मी साहित्यकार सोनू यशराज को वर्ष 2021 में प्रकाशित उनके काव्य संग्रह-'पहली बूँद नीली थी' के लिए कृति सम्मान 2021 से विभूषित किया गया है।

उल्लेखनीय है कि इस पुस्तक की बहुचर्चित किताब शृंखला की सभी कविताएँ अनूदित हुई हैं। जिसमें 'चोरी' कविता छह भारतीय भाषाओं में अनूदित हुई है।

वर्ष 2021 में बोधि प्रकाशन से आई इस किताब की मानीखेज चर्चा कई प्रतिष्ठित मंचों यथा वर्ल्ड टाइम्स, कनाडा व मेलबोर्न रेडियो, हिमाचल साहित्य अकादमी व प्रगतिशील लेखक संघ राजस्थान इकाई द्वारा की गई।

के.के. बिड़ला फाउंडेशन के बिहारी पुरस्कार प्राप्त साहित्यकार डॉ. सत्यनारायण इस किताब की भूमिका में लिखते हैं- सोनू यशराज की कविताएँ जीवन के बीच से जीवन को टटोलती कविताएँ हैं। इन कविताओं का फलक व्यापक है। किसी एक मुहावरे या विचार या विरोधी स्वर की जगह कविताओं में बदलाव की आहट विवेकपूर्ण ढंग से महसूस की जा सकती है। यही समझ उनकी कविताओं की विशेषता है। वे खुद अपनी एक ऐसी भाषा चुनती हैं जहाँ धैर्य और उम्मीद के साथ जीवन की चमक है। इस अर्थ में सोनू यशराज एक सजग कवि हैं। उनकी निगाहें चौतरफ हैं। खो गए या खोते जा रहे जीवन को हेरती।

इसी किताब में प्रखर आलोचक श्री राजाराम भादू कहते हैं कि सोनू यशराज की कविता किसी गुस्सैल मुद्रा और वाग्जाल से मुक्त जीवन की तरह सहज और धूसर है। वहाँ चेखव की पात्र नाद्या है तो ग्यारह वर्षीय किशोरी श्रेया भी है। यहाँ डर को भी प्रेम की आस से जीतने का संकल्प है। जीवन वहाँ अपने श्वेत- श्याम ही नहीं, भूरे रंग के साथ अपनी समग्रता में है इसलिए हरापन भी उसका अविभाज्य यथार्थ है। सोनू की जीवन से गहरी सम्पृक्ति ही उनकी सृजनात्मक शक्ति है, जैसा कि संत- कवि ने कहा है- मोहे तो मेरे कवित्त बनावत।

'जो लिखा गया पहले मैं क्यूँ लिखूँ, एक पेड़ का उधार पहले से है' ये पंक्तियाँ सोनू यशराज की प्रकृति के प्रति दृढ़ आस्था और सचेत व्यवहार को इंगित करती है। पहले काव्य संग्रह से साहित्य की दुनिया में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराती, किताबों की महत्ता को परिभाषित करती और उनमें लोक की अभिरुचि जगाती मानीखेज कविताओं से समृद्ध है 'पहली बूँद नीली थी।'

शब्दों के बीच के मौन को साधती साहित्यकार सोनू यशराज सामाजिक सरोकारों से भी जुड़ी हैं। उनकी रचनाओं का देश भर की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं व ब्लॉग, आकाशवाणी, दूरदर्शन, सुनो साधो, साहित्य प्रोजेक्ट, राजस्थान कला व संस्कृति विभाग में प्रकाशन, प्रसारण, वाचन होता रहा है।

वरिष्ठ साहित्यकार श्री इंदुशेखर तत्पुरुष पहली बूँद नीली थी के सन्दर्भ में लिखते हैं- अपने समस्त प्रयोजन और प्रायोजनों के बाद भी कविता अन्ततः आनंद के लिए होती है। सोनू यशराज ने अपनी कविताओं में जो खिड़कियाँ खोली हैं, वे हमारी चेतना को कुछ स्वच्छ वायु और कुछ प्रकाश उपलब्ध कराएगी, ऐसा विश्वास है।

पूर्व में राजस्थान पर्यटन विभाग में एम्पेनल्ड ट्रेवल राइटर, एनएसीपी सेकेंड फेज़- राजस्थान में असिस्टेंट डायरेक्टर आई ई सी, के पद पर सुशोभित सोनू यशराज ने देश भर में यायावरी और गाँव-ढाणी की समस्याओं को बहुत करीब से देखा है। वे विगत 15 वर्षों से अनवरत राजस्थान सरकार के थीम कैलेंडर का कार्य कर रही हैं और साहित्य की सेवा में सलंग्न हैं। उनकी कविताएँ, कहानियाँ, डायरी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं एवं ब्लॉग यथा वागर्थ, हिन्दवी आदि में प्रकाशित हैं।

भाषा विज्ञानी श्री सुनील श्रीवास्तव

Rajasthan Education Department

कहते हैं कि सोनू यशराज की कविताओं में शब्द और ध्वनि के उस विराट संसार की आहट मिलती है जो आज के तमाम शोर और आपाधापी में गुम हो जाने के बावजूद हमारी आँख के जल में, संवेदना की जमीन पर कायम है और एक अलग रंग, आंच और खुशबू में बची हुई उम्मीद की तरह जगमगा रहा है।

सृष्टि को और बेहतर जानना है इन कविताओं को पढ़ना

मुझे चाहिए था स्पर्श
और पेड़ का आलिंगन किया मैंने
उसके पास नहीं थी आतुर बांहें
पत्ते हिला कर उसने खुशी ज़ाहिर की

जब सोनू यशराज यह लिखती है, मुझे कितने सारे पेड़ और वे आलिंगन याद आ जाते हैं।

कुछ लोग कितनी चुप्पी से बेहतरीन कविताएँ लिखते रहते हैं और उम्र के एक पड़ाव पर वे उन कविताओं से निकलते हैं और फिर पुस्तक आती है ... वह भी दबे पाँव।

ऐसी अनूठी कविताओं पर क्या महज छोटी सी टिप्पणी लिखी जा सकती है? ये कविताएँ और इनके बिम्ब तो हर पंक्ति का विश्लेषण चाहते हैं। सोनू की कविताई समझ कितनी बावड़ियाँ नीचे उतरती है और समानांतर ही कितने आकाश मापती है, यह इन कविताओं में व्याप्त है। इस छोटे कलेवर की किताब 'पहली बूँद नीली थी' में न जाने कितने फलक है जीवन, समाज, प्रकृति, समय और अंतस के साथ ही सोनू अथाह स्त्री मन की थाह सहज ही टटोलती चलती हैं, कुछ सूत्र मुखर होते हैं कुछ पंक्तियों के बीच सार्थक मौन से।

पड़ोस में रहने वाली कभी बहुत ज़्यादा न बोलने वाली स्त्री को जानना सृष्टि को जानना है।

शुरूआती कविता सोन चिरैया ही इस बात की पुष्टि करती चलती है। किताबों पर कविता शुरू होती है तो आगे बात 'किताबें और लड़की' पर खत्म होती है।

मैं चाहती हूँ
दुनिया की तमाम लाइब्रेरियों से चोरी हो किताबें
गली के शोहदों के कारण नहीं जा पा रही
शाम की लाइब्रेरी में
मंजुला, नीमा, अरुणिमा
चोरी की गयी कुछ किताबें
भिजवा दी जाए उनके घर
ताकि उनका घर बन जाए दुनिया
कुछ किताबें अनाथालयों, वृद्धाश्रमों की
चौखट पर भी
छोड़ दी जाए चुपचाप

किताब के आधे सफर तक स्त्री और लड़की के आस-पास व्याप्त जगत की हलचलों के साथ दिखती हैं, फिर सोनू प्रेम और करुणा को छूती हैं। रुरु मृग के बहाने लिखती हैं-

सहज था इसलिए असाधारण था रुरु
इस प्रपंची दुनिया में
असाधारण होकर जीना भी सरल नहीं
घिरी हुई स्वजनों की भीड़ में नितांत अकेला
आत्मीय सुरक्षा के कवच को तलाशता रुरु!

इन कविताओं में विचार के ठोस धरातल पर सहज स्पंदन और ध्वनियों की आवाजाही उन्हें जीवंत और रागमय बनाती है, विश्वसनीय भी। मानवीय संबंधों को भी इन कविताओं में बहुत सहज सुंदरता से समेटा गया है, माँ, पिता, बच्ची श्रेया, लाडला, भाई जी की जूतियाँ। इसी तरह घर गृहस्थी के मारक बिम्बों का प्रयोग करती हैं सोनू अपनी भाषा में। सोनू के पास अपनी अर्जित की हुई भाषा है क्लीशे से मुक्त नए रूपकों और बिम्बों से सजी। इसीलिए एक ताजगी महसूस होती है। इन कविताओं को पढ़ते हुए। पाठक के लिए ये कविताएँ एक नया आस्वाद लाती हैं। प्रेम इन कविताओं में एक झरने सा छलकता है, जैसे कोई पहाड़ी नही पहाड़ों से छिप कर मैदान की तरफ दौड़ पड़े।

वह मुझे बादल सौंपती थी मैं उसे बारिश
कल आकाश ने मुझसे कहा
वह छिटकाता था प्यार के बीज
मैं हरी जो जाती थी
कल धरती ने मुझे कहा

सोनू की कविताएँ मेरे लिए एक आश्वस्ति का पर्याय हैं, विचार, ताज़गी, नए बदलाव की आहट, भाषा और प्रयोग के संदर्भ में। सोनू की इन कविताओं पर लगातार चर्चा होनी चाहिए.... ये एक सचेत लेखिका की कविताएँ हैं।

समीक्षक : मनीषा कुलश्रेष्ठ
मकान नं. 10, 18 लेन, 19 स्ट्रीट सेंट्रल पार्क, एवेन्यू-बी, वाटिका इन्फोटेक सिटी, जयपुर
मो. 9911252907

घोषणा-पत्र
(फार्म नं. 4)

शिविरा पत्रिका के स्वामित्व और अन्य विवरण, जो केन्द्रीय धारा 1956 के अन्तर्गत समाचार-पत्र के रजिस्ट्रेशन के लिए प्रकाशित करने आवश्यक हैं।

1. प्रकाशन संस्थान	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक	:	गौरव अग्रवाल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
4. प्रकाशक	:	गौरव अग्रवाल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
5. प्रधान सम्पादक	:	गौरव अग्रवाल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

मैं, गौरव अग्रवाल घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी में एवं विश्वास के साथ सत्य और वास्तविकता पर आधारित है।

(गौरव अग्रवाल) आई.ए.एस
निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

Rajasthan Education Department

बाल शिविरा

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपनी सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु, नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

म्हारो राजस्थान.....

वीरों की भूमि है राजस्थान।
सब सुखों की जननी है राजस्थान।।

राजस्थान का मरुस्थल स्वर्णरूपी दिखता है।
राजस्थान मे अनेकताओं में ही एकता है।।

राजस्थान भामाशाहों की खान है।
यही तो राजस्थान की पहचान है।।

राजस्थान के कण-कण में सोना है।
राजस्थान के बिना चारों ओर सूना ही सूना है।।

राजस्थान के बुजुर्गों में भी जवानी है।
राजस्थान की प्रत्येक नारी-नारी ही महारानी है।।

राजस्थान की रीति-रिवाज ही निराली है।
इस राजस्थान में सूखे में भी हरियाली है।।

राजस्थान का ऊँटगाड़ा ही हवाई जहाज है।
राजस्थान का अनोखा ही स्वराज है।।

राजस्थान का नाम लेते ही मुर्दों में भी जान है।
राजस्थान में अपनी धरा के लिए वीरों का दान है।।

राजस्थान की विरासत मानवता का ताज है।
राजस्थान ही सब लोगों की लाज है।।

राजस्थान रो सोखो घणो प्यार है।
ओ राजस्थान ही सब जनता रो यार है।।

मने ईण राजस्थान पर नाज है।
एड़ी बातां करणी सब जणां रो काज है।।

ईण राजस्थान रां टाबरिया ही घणा होनहार है।
मीठी बोली अठीली जनता रें हथियार है।।

म्हारों रंग-रंगीलो राजस्थान है।
बादशाओं रो बादशाह म्हारो राजस्थान है।।

सुभाष गर्ग, कक्षा-12,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय धमाणा का गोलिया,
जालोर (राज.) मो :9610714084

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

तितली

रंग बिरंगी होती हूँ।
फूलों का रस पीती हूँ।
हाथ लगाओ तो
झट से उड़ जाती हूँ।
सबसे न्यारी होती हूँ।
सबसे प्यारी होती हूँ।
फूलों पर बैठती हूँ।
रंग-बिरंगी होती हूँ।
फूलों का रस पीती हूँ।

प्रियंका कक्षा–6,
राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय सराणा,
जालोर

पेड़ है, पेड़ है

पेड़ है, पेड़ है,
कितना अच्छा पेड़ है।
सबको हवा देता पेड़ है।
सबको फल-फूल देता पेड़ है,
कितना सुंदर पेड़ है।
पत्तियाँ खिलती देखो पेड़ पर,
छाया देता जो पेड़ है।
देखो पेड़ पर आम है,
कितना न्यारा पेड़ है
कितना प्यारा पेड़ है
पेड़ है, पेड़ है,
कितना अच्छा पेड़ है।

पायल कक्षा–6,
राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय सराणा,
जालोर

नारी शक्ति

भ्रुण हत्या बाल विवाह की
शिकार हुई है नारियाँ
घरेलु हिंसा ताना बाना
सब सह रही है नारियाँ
ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ
नहीं पहुँची हो नारियाँ
सदियों पुरानी जंजीरों
को तोड़ रही है नारियाँ
अपने हक की लड़ाई आज
लड़ रही है नारियाँ
जहाँ चाहा वो हर
मंजिल को पार कर रही है नारियाँ
निर्णय लेने में सक्षम आज हो रही है नारियाँ
शिक्षा पाकर देश को आगे
बढ़ा रही है नारियाँ

दुर्गा चौधरी, कक्षा 10
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय दादाई,
पाली

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

बाड़मेर–बालोतरा विद्यालय के पूर्व विद्यार्थी आकाश सोलंकी सॉफ्टवेयर इंजीनियर के आगमन पर आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व तहसीलदार मदनलाल सोनगरा ने ब्यूरो कंपनी बेंगलुरु में चयन होने पर साफा पहनाकर तथा पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर के जिला अध्यक्ष सालगराम परिहार, पूर्व लेखा अधिकारी महेश कुमार राठौड़, सहायक लेखा अधिकारी अनिल कुमार राठौड़, केमिकल इंजीनियर धीरज राठौड़, वरिष्ठ अध्यापक भगवानदास गहलोत, टाइपिस्ट विजय कुमार ने मालाएं पहनाकर नव चयनित सॉफ्टवेयर इंजीनियर का स्वागत किया। इस अवसर पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बालोतरा में कार्यरत रहे पुस्तकालय अध्यक्ष जगदीश सोलंकी का प्रथम श्रेणी पुस्तकालय अध्यक्ष पद पर पदोन्नति होने के उपलक्ष्य में जिलाध्यक्ष सालगराम परिहार ने माला पहनाकर सम्मान किया। मुख्य अतिथि पूर्व तहसीलदार मदनलाल ने कहा कि परिश्रम करने से मंजिल प्राप्त की जा सकती है। शिक्षित युवा कठिन परिश्रम करके समाज व देश का नाम रोशन करें तभी राष्ट्र का विकास तीव्र गति से होगा। जिलाध्यक्ष सालगराम परिहार ने कहा कि आकाश सोलंकी प्रारंभ से ही होनहार विद्यार्थी के रूप में स्कूल शिक्षा में हमेशा अव्वल स्थान पर रहे हैं। वर्तमान में तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता को युवा वर्ग समझें जिससे वे शीघ्र रोजगार की ओर उन्मुख हो सके।

मरु महोत्सव में स्काउट गाइड ने निकाली झांकी

जैसलमेर–मरु महोत्सव 2023 का आगाज पूनम सिंह स्टेडियम जैसलमेर में हुआ। सी.ओ. स्काउट सवाई सिंह ने बताया कि इस अवसर पर समारोह में महात्मा गाँधी इंग्लिश मीडियम स्कूल जैसलमेर के स्काउट गाइड द्वारा मूमल महिन्द्रा की झांकी निकाली, स्काउट मास्टर दिलीप सिंह, राखी व्यास, अर्चना व्यास के दिशा-निर्देशन में सजे धजे ऊँटों पर मूमल महिन्द्रा की झांकी ने प्रेमगाथा की सजीव प्रस्तुति देकर दर्शकों को मोहित किया। जया, भावना, मूमल-महिन्द्रा बने। स्काउट गाइड मूमल-महिन्द्रा की झांकी ने जिले में तीसरा स्थान प्राप्त किया। अतिथियों ने स्काउट गाइड को

पुरस्कार प्रदान कर उत्साहवर्धन किया। संस्थाप्रधान रामाराम जी ने एवं विद्यालय परिवार ने स्काउट गाइड का विद्यालय में स्वागत कर बधाई दी।

भामाशाह ने विद्यालय को दिया दान

नागौर– जिले के मेड़ता सिटी ब्लॉक से 15 कि.मी. पश्चिम में स्थित मोकलपुर ग्राम में स्टेशन पर स्थित रा.उ.मा.वि. मोकलपुर आपकी गाथा सुनाता है। श्री हरनारायण जी खोजा की प्रेरणा से भामाशाह रत्न श्री दुर्गाराम जी लटियाल ने अपने धन से इस वृक्ष को सींच कर वट वृक्ष रूप दे दिया है। जब-जब विद्यालय को आवश्यकता हुई आपने आगे बढ़कर सहयोग दिया। विद्यालय के प्रवेश द्वार की दांयी तरफ की दीवार का जोधपुरी घड़ाई के पत्थर लगाकर बनाई जिसकी सत्र 2017-18 में 500000/- पाँच लाख रुपये की लागत आयी। सत्र 2018-19 व 2019-20 में ग्राम वासियों ने जब 168×50 फीट का टीनशेड बनाया उसमें आपने 31000/- रुपये का योगदान दिया। इसी परम्परा को अविरल कायम रखते हुए आपने विद्यालय में प्रधानाचार्य कक्ष 20×30 मय बरामदा जो जोधपुरी पत्थर की घड़ाई में कड़ाऊ लगाकर बनाया। जिसकी लागत लगभग 1500000/- पन्द्रह लाख रुपये आई। आप विद्यालय के लिए भामाशाह रत्न होने के साथ-साथ शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार के भी भामाशाह रत्न हैं। अतः विद्यालय एवं शिक्षा विभाग आपकी दिन दूनी रात चौगुनी सुख समृद्धि की कामना करता है। आपका वरद हस्त हमेशा विद्यालय पर बना रहे।

शिक्षकों की कार्यशाला का आयोजन

चित्तौड़गढ़–जुबिलेंट कम्पनी सिंहपुर द्वारा सीएसआर के अंतर्गत दिनांक 11 फरवरी, 2023 को झांतला माता मंदिर परिसर मे आदर्श विद्यालय हेतु वातावरण निर्माण, नैतिक मूल्यों हेतु शिक्षक का योगदान, आदर्श शिक्षक एवं आदर्श विद्यार्थियों के निर्माण हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का स्वागत उद्बोधन एवं अतिथियों का स्वागत जुबिलेंट कम्पनी के सामाजिक सरोकार के प्रबंधक संजय कुमार सिन्हा के द्वारा किया गया।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

जिला शिक्षा अधिकारी राजेन्द्र शर्मा द्वारा आदर्श विद्यालय की परिकल्पना की जानकारी दी, सिंहपुर प्रधानाचार्य आनन्द कुमार दीक्षित ने संस्थाप्रधान के नेतृत्व, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की उपादेयता, कार्यक्रम अधिकारी समसा लोकेश नारायण शर्मा ने आदर्श शिक्षक के गुणों व सूरजभान सारस्वत प्रबोधक भँवरकिया ने कार्याशाला के महत्त्व के विषय में बताया। जुबिलेंट कम्पनी प्रतिनिधि निकिता राणावत द्वारा करके सीखना गतिविधि के माध्यम से बताया। इस कार्यशाला में कपासन ब्लॉक के 25 शिक्षकों ने भाग लिया। अंत में संजय कुमार सिन्हा ने सीएसआर के अंतर्गत दिए गए स्मार्ट क्लास के प्रभावी प्रबंधन व उपयोग के विषय में बताया व भविष्य में भर्तिया ग्रुप द्वारा विद्यालयों में लाइब्रेरी व विज्ञान प्रयोगशाला उपकरण प्रधान करने में भी आश्वासन दिया और आभार प्रकट किया।

नो बैग डे पर विद्यार्थियों ने की विधानसभा कार्यवाही

नागौर– रा.उ.मा.वि. बुडोद में शनिवार 'नो बैग डे' पर विद्यार्थियों ने विधानसभा कार्यवाही की। जिसमें तैयार विधानसभा, एक तरफ सत्ता पक्ष तो दूसरी तरफ विपक्ष, बीच में सरकार तो सामने चेयर पर विधानसभा अध्यक्ष; ऐसा नजारा देखने को मिला। शनिवारीय कार्यक्रम में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बुडोद, डीडवाना, नागौर में। बात करते है संभावनाओं के शनिवार पर आयोजित राजस्थान विधानसभा कार्यवाही की जहाँ कक्षा 9 की छात्रा आरती गुर्जर विधानसभा अध्यक्ष थी तो राधिका स्वामी मुख्यमंत्री, भावना कंवर, देवेन्द्र अफसाना, गुंजन, मोनिका, लाली दीपिका, गुड्डी आदि मंत्रियों ने विपक्ष के सवालों के जवाब दिए, वही कल्पना, सोनू, पलक कंवर, मनीष, विवेक चौधरी, शिवराज आदि ने विपक्ष में रहकर सवालों से सरकार को घेरने का प्रयास किया। अध्यक्ष आरती गुर्जर ने पक्ष-विपक्ष की बात को सुनते हुए विधानसभा की कार्यवाही को संपन्न करवाया। प्रधानाचार्य श्री हेमाराम रोहलन ने बताया कि संपूर्ण कार्यवाही बच्चों ने समस्त शिक्षकों के मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम संभावनाओं का शनिवार के अवसर पर बालक को अधिगम का बुनियादी ज्ञान की थीम पर किया। प्रधानाचार्य श्री रोहलन ने संविधान द्वारा कानून बनाने की राज्य कार्यपालिका शक्तियों के बारे में विद्यार्थियों को रूबरू करवाया तो वरिष्ठ अध्यापक श्री बजरंग लाल जाट ने विधानसभा में पक्ष-विपक्ष की भूमिका पर बात की।

शिक्षक बने भामाशाह

सिरोही– जिले के पिण्डवाड़ा तहसील ग्रामीण क्षेत्र के राउमावि. सिवेरा में शिक्षकों के सहयोग से विद्यालय में चार चाँद लग रहे है। गाँव के अधिकतर लोग खेती पर निर्भर रहते हैं मगर प्रधानाचार्य बाबुलाल मीणा व शिक्षकों के सहयोग से विद्यालय निरंतर प्रगति कर रहा है। शिक्षक जसवंत सिंह के प्रेरक बनकर स्वयं ने 8000/- रुपये लगाकर टांके में टाइल्स लगवाई एवं इन्हीं की प्रेरणा से भामाशाह श्रेणीक कुमार पुत्र अचलमल जी जैन ने 8000/- रुपये प्रधानाचार्य टेबल एवं डनलप की तीन कुर्सियाँ 5100/- रुपये व कमलेश कुमार पुत्र हरीशंकर जी रावल झाडोली ने 19000/- रुपये का साउण्ड सिस्टम विद्यालय को भेंट किया। इसी तरह शिक्षकों के सहयोग से 100000/- रुपये में फर्नीचर छात्रों के बैठने हेतु भेंट किया गया। जिसमें 39000/- रुपये स्वयं स्टाफ ने दिए एवं 61000/- रुपये ग्रामीण जनों से इकट्ठे करवा कर फर्नीचर खरीदा गया। जिस पर छात्र बैठते हैं उसी क्रम में शिक्षक जसवंत सिंह एवं भीम सिंह गढ़वी ने स्थानीय विद्यालय में छात्रों के बैठने हेतु कुर्सी टेबल हेतु स्थानीय विधायक से भेंट की तो स्थानीय विधायक श्री समाराम गरासिया ने भी 100000/- रुपये स्वयं के कोटे से विद्यालय में फर्नीचर हेतु दिए। वर्तमान में ग्राम पंचायत द्वारा 700 फीट परकोटे का निर्माण करवाया जा रहा है जिसकी कीमत 100000/- रुपये व 600000/- रुपये में सीसी रोड विद्यालय को जोड़ने हेतु बनवाया जा रहा है। विद्यालय की निरंतर प्रगति हो रही है। यह सब प्रधानाचार्य बाबुलाल मीणा द्वारा प्रोत्साहन देकर हो रही है। आने वाले समय में स्टेज पर टीन शेड भी बनवाने के प्रयास जारी है।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

ज्ञान संकल्प पोर्टल

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सुलखनिया छोटा, राजगढ़, चूरू

❒ परमेश्वरी शिवराण

पृष्ठभूमि:-राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सुलखनियां छोटा, ब्लॉक राजगढ़ (चूरू)-सन 1945 में प्राथमिक विद्यालय के रूप में आजादी के पूर्व से स्थापित है। सन् 2022 में उच्च माध्यमिक विद्यालय के रूप में क्रमोन्नत हुआ। विद्यालय परिवार भौतिक संसाधनों के अभाव में स्टाफ और विद्यार्थी कई तरह की परेशानियों का सामना कर रहे थे। उक्त विद्यालय के पुराने कमरे जीर्ण-शीर्ण अवस्था में होने एवं विद्यालय में 5-7 फुट तक अर्थ फिलिंग (मिट्टी का भराव) होने की वजह से आजादी के समय से ही बच्चों के अध्यापन की व्यवस्था बाधित रही है। विद्यालय में पानी की निकासी नहीं होने के कारण कमरों व विद्यालय प्रांगण में पानी भर जाने से विद्यार्थियों के बैठने की समस्या अनवरत रहती थी। अत: तत्कालीन विद्यालय प्रधानाचार्या श्रीमती परमेश्वरी शिवराण ने पूरी लगन और निष्ठा के साथ स्टाफ के साथ मिलकर ग्रामवासियों एवं भामाशाहों से सम्पर्क किया। बस एक आह्वान की ही आवश्यकता थी और कारवां जुड़ता गया। गाँव के हर घर से दानवीर आगे आए और ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से आर्थिक सहायता दी गयी।

1. भामाशाहों ने बदली तस्वीर- उक्त विद्यालय की इस दयनीय भौतिक हालात को देखकर व कोरोना काल के खाली समय का सदुपयोग करते हुए ग्रामवासियों, अभिभावकों, विद्यालय स्टाफ, SDMC सदस्यों से मीटिंग करके विद्यालय के उक्त विकास के लिए सभी को एक राय कर भागीदार बनने के लिए निवेदन किया गया। इस बाबत गाँव के पाँच व्यक्तियों की कमेटी बनाई गई। तत्पश्चात गाँव के 276 घरों में, खेत की ढाणियों में, शहरों में जहाँ सुलखनियां छोटा के ग्रामवासी रहते हैं, प्रधानाध्यापक द्वारा विद्यालय परिवार के साथ स्वयं संपर्क करके 50 रुपए से लेकर ढाई लाख रुपये तक क्षमता अनुसार हर घर से राशि इकट्ठी

कर गाँव के हर घर को भागीदार बनाने की कोशिश की गई। जिसमें गाँव के हर सदस्य ने बढ़-चढ़कर एक क्रांति की तरह विद्यालय को सहयोग किया। जिसके उपरान्त कुल राशि 22 लाख रुपये की धनराशि प्राप्त हुई। इस धनराशि से विद्यालय में पाँच नए कक्षा-कक्षों का निर्माण मुख्यमंत्री जन सहभागिता के अन्तर्गत समसा द्वारा करवाया गया एवं साथ ही पाँच पुराने कक्षा-कक्षों को 5-7 फुट तक ऊँचा उठाकर सम्पूर्ण विद्यालय में बालू मिटटी का भराव करवाया गया। इसके अतिरिक्त विद्यालय के पड़ोसी ग्रामवासी श्री सत्यनारायण शर्मा से संपर्क कर 3-4 फुट जमीन विद्यालय की दीवार के साथ-साथ विद्यालय को दान कर दिलवाई गयी जिससे टेढ़ी-मेढ़ी विद्यालय भवन की दीवार को सीधा कर समान रूप में चार दीवारी का निर्माण करवाया गया। ग्रामवासियों से प्राप्त राशि के अलावा भी प्रधानाध्यापक द्वारा क्षेत्रीय सांसद चूरू श्रीमान राहुल जी कस्वां, पदमश्री डॉक्टर कृष्णा जी पूनियां, विधायक सादुलपुर से भी व्यक्तिगत संपर्क करके विद्यालय में भवन निर्माण के लिए उत्तरोत्तर कार्य कर, एक-एक कमरों का प्रस्ताव लेकर दोनो से निवेदन किया गया। जिसके फलस्वरूप माननीय सांसद महोदय द्वारा एक बड़ा हॉल 25×40 फीट बरामदा सहित, जिसकी लागत राशि लगभग 14,41000/- रुपये है, स्वीकृत करवाकर कंस्ट्रक्शन कार्य भी अमल में लाया गया, जो कि वर्तमान में अंतिम चरण में है। क्षेत्रीय विधायक पदमश्री डॉक्टर कृष्णा जी पूनियां का भवन स्वीकृति का प्रस्ताव निकट भविष्य में होना शेष है।

2. सहशैक्षिक गतिविधियाँ- विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अध्ययन-अध्यापन के कार्य के साथ-साथ विद्यालय में सत्र पर्यन्त नियमित रूप से सहशैक्षिक गतिविधियों का आयोजन भी किया जाता है जिसमें खेलकूद, नृत्य, गायन, निबन्ध, पोस्टर, मॉडल, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आदि का भी आयोजन किया जाता है। हमारे विद्यालय की छात्र संसद द्वारा समय-समय पर विज्ञान, लोक क्षेत्र एवं लोक कला से जुड़े कार्यक्रम किए जाते हैं जो स्टाफ एवं विद्यार्थियों का सराहनीय कदम है।

3. पर्यावरण संरक्षण:- हरियाली किसी भी परिसर की सुंदरता में चार चाँद लगाने का काम करती है। भामाशाहों की प्रेरणा से वन विभाग के सहयोग से नवीन परिसर में लगभग 100 पौधें लगाए गए जिनमें आयुर्वेदिक औषधीय, फलदार एवं फुलवारी आदि कई किस्में लगाई गई हैं। बड़ी संख्या में पौधों की वजह से यह विद्यालय किसी हरित वाटिका से कम नहीं है। हर विद्यार्थी द्वारा एक-एक पौधा

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

गोद लेकर उसकी सार संभाल की जाती है। विद्यालय भवन के सामने लगी दूब हरे कालीन के रूप में विद्यालय की सुन्दरता को और तृप्त कर रही है। पेड़ पौधों से युक्त हरियालीमय वातावरण परिवेश में एक तरह का आनन्द भरता है जिससे विद्यार्थी भी सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण रहते हैं।

4. संस्थाप्रधान की कलम से:– मैं 1 जून 2018 को कार्यग्रहण कर लगभग चार वर्ष तक कार्यरत रही। मेरे द्वारा उक्त विद्यालय में बतौर प्रधानाध्यापक कार्य ग्रहण करने के वक्त छात्र संख्या 98 थी, जिसको बढ़ाकर इस संस्था से कार्यमुक्ति के वक्त 130 तक पहुँचाया गया। NMMS में पंद्रह विद्यार्थियों का चयन हुआ, जिसमें एक विद्यार्थी जिले स्तर पर पाँचवी रैंक पर रहा। विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि के साथ–साथ दसवीं कक्षा में बोर्ड का परिणाम भी हर साल लगातार गुणात्मक, सर्वश्रेष्ठ रखा गया। भामाशाहों से छात्र व छात्राओं के लिए शौचालय, विद्यालय में चार दीवारी व पानी की उचित व्यवस्था के कार्य करवाए गए। इस प्रकार समस्त ग्रामवासियों व भामाशाहों के सहयोग से ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से एवं मुख्यमंत्री जन सहभागिता द्वारा एक ज्वलंत समस्या को पूर्ण विकास के पायदान पर पहुँचाया गया, जिसके कारण आज सम्पूर्ण ग्रामवासी, शाला परिवार, विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं।

उप प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सुलखानियां
छोटा, ब्लॉक राजगढ़, चूरू (राज.)
मो.न.: 9784461895

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से
राजकीय विद्यालयों को माह–जनवरी 2023 में 50000 एवं अधिक राशि का सहयोग करने वाले भामाशाह

S. No.	Donar Name	School Name	Block Name	District	Amount
1	Parmeshwar Jangid	Govt. Senior Secondary School Antroli (405575)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	505555
2	Great Eastern Retail Pvt Ltd	Shri Union Club Govt. Girls Senior Secondary School Rajaldesar Churu (215614)	Ratangarh	Churu	460000
3	Sanwar Mal Fageria	Govt. Senior Secondary School Jagmalpura Sikar (213386)	Piprali	Sikar	350000
4	Gharsee Ram Jat	Govt. Girls Senior Secondary School Chak Rajiyasar (215462)	Sujangarh	Churu	200000
5	Rajak Ali Khan	Govt. Senior Secondary School Beri Jatanpura (219759)	Molasar	Nagaur	201000
6	Gauri Shankar Sihag	Govt. Upper Primary School Dallusar (476827)	Sardarshahar	Churu	160000
7	Mahbub Khan	Shaheed Ibrahim Khan Govt. Girls Upper Primary School Jatanpura (477312)	Molasar	Nagaur	151000
8	Col Rajesh Bhukar	Shahid Naurang Lal Govt. Senior Secondary School Katrathal Sikar (213382)	Piprali	Sikar	146000
9	Sita Ram Meena	Govt. Upper Primary School Dhanoli (464654)	Sawai Madhopur	Sawai madhopur	131000
10	Madan Lal Sharma	Govt. Senior Secondary School Ramsara Narayan (212318)	Hanumangarh	Hanumangarh	111111
11	Surendra Singh Poonia	Govt. Senior Secondary School Rajgarh (215272)	Rajgarh	Churu	101100
12	Satiate International Trading Pvt Ltd	Govt. Girls Senior Secondary School Shyam Sadan Sardarpura (220362)	Jodhpur City	Jodhpur	100000
13	Parash Ram Sethiya	Swami Vivekanand Govt. Model School, Raipur, Bhilwara (214597)	Raipur	Bhilwara	100000
14	Gharsiram	Govt. Upper Primary School Ranisar (504764)	Nohar	Hanumangarh	100000
15	Nirmala	Mahatma Gandhi Govt. School Bibasar (215645)	Jhunjhunu	Jhunjhunu	100000
16	Laduram Choudhary	Govt. Senior Secondary School Kelawa Kallan (220337)	Baori	Jodhpur	100000
17	Bhagwanaram	Govt. Senior Secondary School Todas (219977)	Kuchaman	Nagaur	100000
18	Vijay Kumar Poonia	Govt. Senior Secondary School Dokwa (215221)	Rajgarh	Churu	100000
19	Ishwer Singh	Govt. Senior Secondary School Peepli (215844)	Pilani	Jhunjhunu	100000
20	Dr Somveer Sarawag	Govt. Senior Secondary School Dokwa (215221)	Rajgarh	Churu	100000
21	Mukesh Kumar Pandia	Govt. Senior Secondary School Luhara (215472)	Bidasar	Churu	100000
22	Sigma Minerals Limited	Govt. Girls Senior Secondary School Khinwsar (500176)	Khinwsar	Nagaur	100000
23	Shakuntla Devi	Shaheed Puranmal Govt. Senior Secondary School Sanwaloda Dhayalan (213275)	Dhod	Sikar	100000
24	Laxmi Devi	Govt. Senior Secondary School Samarthpura (408206)	Piprali	Sikar	100000

Rajasthan Education Department

25	Shyama	Govt. Primary School Bhilo Ki Dhani Kolu Pabuji (433977)	Dechu	Jodhpur	95000
26	Dherendra Kumar Sharma	Govt. Senior Secondary School Nandera Bharatpur (216993)	Kaman	Bharatpur	91000
27	Surendra	Govt. Senior Secondary School Nyama (215439)	Sujangarh	Churu	81000
28	Chhatra Singh Baid	Govt. Girls Senior Secondary School Bhivsariya (215526)	Sujangarh	Churu	80000
29	Kavita	Govt. Senior Secondary School Dokwa (215221)	Rajgarh	Churu	80000
30	Sarjeet	V.c. Subedar Sawalram Govt. Senior Secondary School Ranasar (216047)	Nawalgarh	Jhunjhunu	79900
31	Ram Kumar Bangrawa	Govt. Senior Secondary School Malsar (215294)	Sardarshahar	Churu	78000
32	Narasha Ram	Govt. Upper Primary School Dhana Bhakran (474450)	Taranagar	Churu	75000
33	Arvind Kumar	Govt. Senior Secondary School Khuddi (215224)	Rajgarh	Churu	71000
34	Gopi Ram	Govt. Senior Secondary School Depalsar (215422)	Churu	Churu	70000
35	Prithvi Singh Rao	Seth Hanuman Prasad Sarraf Govt. Senior Secondary School Dhamora (216131)	Udaipurwati	Jhunjhunu	70000
36	Sunita	Govt. Senior Secondary School Dokwa (215221)	Rajgarh	Churu	70000
37	Rajkumar Dhayal	Shaheed Puranmal Govt. Senior Secondary School Sanwaloda Dhayalan (213275)	Dhod	Sikar	70000
38	Jakir Hussain	Govt. Senior Secondary School Beri Jatanpura (219759)	Molasar	Nagaur	67500
39	Shivji Lal Meena	Govt. Senior Secondary School Chandli Deoli (222128)	Deoli	Tonk	61000
40	Heera Ram	Govt. Senior Secondary School Khotho Ki Dhani (220591)	Baitu	Barmer	60000
41	Mandeep Kaur	Govt. Senior Secondary School Chakkera (211963)	Sadulshahar	Ganganagar	60000
42	Ramavatar	Govt. Senior Secondary School Patusar (405899)	Alsisar	Jhunjhunu	60000
43	Rakesh Kumar	Govt. Senior Secondary School Kolasar (215454)	Sujangarh	Churu	60000
44	Radheshyam	Shaheed Rajkumar Govt. Senior Secondary School Bhainsali (215260)	Rajgarh	Churu	59000
45	Rajesh Kumar Godara	Mahatma Gandhi Govt. School Kolana Bas Khokhrana (407017)	Lunkaransar	Bikaner	58600
46	Geeta Kulhari	Shaheed Shishram Govt. Senior Secondary School Bishanpura (215638)	Jhunjhunu	Jhunjhunu	56100
47	Shyam Lal Ameta	Govt. Senior Secondary School Keli (224329)	Nimbahera	Chittaurgarh	55000
48	Bhanwar Singh Dhayal	Shaheed Puranmal Govt. Senior Secondary School Sanwaloda Dhayalan (213275)	Dhod	Sikar	55000
49	Mange Ram	Govt. Senior Secondary School Nyangal Chhoti Churu (215197)	Rajgarh	Churu	52000
50	Sohan Singh Meena	Govt. Senior Secondary School Suroth (212499)	Hindaun	Karauli	51000
51	Nehra Electricals And Construction Company Sikar	Govt. Upper Primary School Molyasi (487991)	Dhod	Sikar	51000
52	Sigma Minerals Limited	Govt. Senior Secondary School Basni Harisingh (219065)	Bhopalgarh	Jodhpur	51000
53	Shail Bala Sharma	Govt. Senior Secondary School Lasadiya (214362)	Jawaja	Ajmer	51000
54	Narendra Kumar Varma	Mahatma Gandhi Govt. School Arthuna (214948)	Arthuna	Banswara	51000
55	Krishan Kumar	Govt. Senior Secondary School Khyali (215204)	Rajgarh	Churu	51000
56	Sumitra Choudhary	Mahatma Gandhi Govt. School Nadiya Kumharan Katrathal Sikar (402984)	Piprali	Sikar	51000
57	Devi Lal	Govt. Senior Secondary School Khuddi (215224)	Rajgarh	Churu	51000
58	Babu Lal Meena	Govt. Senior Secondary School Moondli (218723)	Tunga	Jaipur	51000
59	Nagendra Lal Pargi	Govt. Senior Secondary School Garhi (223912)	Garhi	Banswara	51000

Rajasthan Education Department

60	Ajay Bahadur	Govt. Senior Secondary School Suratpura (212406)	Bhadra	Hanumangarh	51000
61	Santosh Kumar	Govt. Senior Secondary School Thorasi (227432)	Dhod	Sikar	51000
62	Geeta Kumari Meena	Govt. Girls Upper Primary School Rohindi (479347)	Parbatsar	Nagaur	51000
63	Rupesh Kumar Pareek	Govt. Senior Secondary School Tal Maidan Sardarshahar (215358)	Sardarshahar	Churu	50000
64	Sanwar Mal Fageria	Govt. Senior Secondary School Jagmalpura Sikar (213386)	Piprali	Sikar	50000
65	Raghu Nath Verma	Govt. Senior Secondary School Tejaji Chowk Khatoli (224430)	Itawa	Kota	50000
66	Suneeta	Govt. Girls Upper Primary School Paliwalo Ki Dhani Umarlai Khalsha Umarlai (507245)	Balotra	Barmer	50000
67	Suneeta	Govt. Girls Upper Primary School Paliwalo Ki Dhani Umarlai Khalsha Umarlai (507245)	Balotra	Barmer	50000
68	Suneeta	Govt. Senior Secondary School Simarkhiya Patodi Barmer (220683)	Patodi	Barmer	50000
69	Navin Kumar	Govt. Senior Secondary School Suratpura (212406)	Bhadra	Hanumangarh	50000
70	Hawa Singh	Govt. Senior Secondary School Dokwa (215221)	Rajgarh	Churu	50000
71	Seema Sharma	Govt. Senior Secondary School Topriya (212348)	Nohar	Hanumangarh	50000
72	Reena Panwar	Govt. Primary School Bhilo Ki Dhani Kolu Pabuji (433977)	Dechu	Jodhpur	50000
73	Mala Ram	Govt. Girls Senior Secondary School Khinwsar (500176)	Khinwsar	Nagaur	50000
74	Ganga Singh	Govt. Upper Primary School Delvas (487863)	Bhadesar	Chittaurgarh	50000
75	Gordhan Singh	Govt. Upper Primary School Dhani Pooniya (477558)	Taranagar	Churu	50000
76	Ram Lal Jat	Govt. Senior Secondary School Khadbamniya (214829)	Railmagra	Rajsamand	50000
77	Col Rajesh Bhukar	Govt. Senior Secondary School Deenarpura Piprali Sikar (213379)	Piprali	Sikar	50000
78	Arvind Kumar	Govt. Senior Secondary School Khuddi (215224)	Rajgarh	Churu	50000

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह–जनवरी 2023 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	CHURU	571	5010961
2	SIKAR	1197	2558406
3	NAGAUR	2006	1876928
4	BANSWARA	1302	1293560
5	JHUNJHUNU	324	1051811
6	JAIPUR	3187	947809
7	JODHPUR	1865	865386
8	CHITTAURGARH	1221	761449
9	BARMER	1372	689750
10	SAWAIMADHOPUR	914	602880
11	KOTA	510	545118
12	HANUMANGARH	258	514354
13	BUNDI	1135	483521
14	RAJSAMAND	1663	464802
15	DUNGARPUR	2051	439219
16	UDAIPUR	1304	437669
17	BHARATPUR	786	413038
18	PALI	944	412512
19	BHILWARA	991	376036
20	JHALAWAR	782	358521
21	BIKANER	1069	352006
22	ALWAR	702	264878
23	AJMER	240	261440
24	BARAN	424	183532
25	TONK	209	164806
26	PRATAPGARH	200	156890
27	JALOR	763	149029
28	KARAULI	205	144908
29	GANGANAGAR	450	138859
30	SIROHI	1289	128744
31	DAUSA	19	120421
32	JAISALMER	357	99691
33	DHAULPUR	76	31626
	Total	**30386**	**22300560**

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृत प्रोजेक्ट

विभिन्न औद्योगिक घरानों/संस्थानों/व्यक्तिगत दानदाताओं द्वारा राजकीय विद्यालयों में सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से स्वीकृति हेतु ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Create your own Projects में Projects Submit किए गए एवं Adopt to school में कुल 14 राजकीय विद्यालयों को गोद लिया गया। माह जनवरी 2023 में 3 करोड़ 72 लाख से अधिक की लागत से कुल 07 Projects स्वीकृत/अनुमति प्रदान की गई है, उक्त अनुमोदित/स्वीकृत किए गए Projects निम्नानुसार है:-

क्र. सं.	कम्पनी/संस्था/दानदाता का नाम	प्रोजेक्ट संख्या	कम्पनी/संस्था/दानदाता द्वारा किए जाने वाले कार्य का विवरण	अनुमानित लागत/ व्यय (लाख में)
1	आरएक्स लोजिक्स कॉर्पोरेशन प्रा.लि.	1239	राजकीय उच्च माध्यमिक, नावा, नागौर में पुस्तकालय कक्ष, फर्नीचर, भौतिकी प्रयोगशाला, रसायन विज्ञान प्रयोगशाला, जीव विज्ञान प्रयोगशाला, कंप्यूटर प्रयोगशाला/उपकरण, संगीत/अन्य गतिविधि उपकरण आदि का कार्य	50.00
2	बिरला कॉर्पोरेशन लिमिटेड	1240	चित्तौड़गढ़ के 05 राजकीय विद्यालयों में कक्षा-कक्ष 1-8), बाउंड्री वॉल, रैंप, छात्र-छात्राओं का शौचालय, पीने का पानी, हाथ धोने की व्यवस्था, फर्नीचर, कमरों का नवीनीकरण, स्मार्ट क्लासरूम,आदि का निर्माण कार्य	26.59
3	एसएम सेहगल फाउण्डेशन	1236	राजकीय माध्यमिक विद्यालय महुआखुर्द, मालाखेडा, अलवर में बिजली सुविधा /बिजली फिटिंग, फर्नीचर, कंप्यूटर लैब/उपकरण, सौर फलर्क का कार्य	13.50
4	श्री श्यामा	1234	राजकीय प्राथमिक विद्यालय भीला की ढाणी, कोलूपाबूजी, डेचू, जोधपुर में प्रधानाध्यापक कक्ष का निर्माण कार्य	2.00
5	श्री दयाल राम	1233	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गज्जू, मूंडवा, नागौर में कक्षा-कक्ष का विस्तार का कार्य	3.25
6	चम्बल फर्टिलाइजर एण्ड केमिकल लिमिटेड	1231	कोटा जिले के 45 एवं बारां जिले के 01 राजकीय विद्यालय में कम्प्यूटर एडेड एण्ड लर्निंग प्रोजेक्ट का कार्य	57.76
7	चम्बल फर्टिलाइजर एण्ड केमिकल लिमिटेड	1232	कोटा जिले के 44 एवं बारां जिले के 03 राजकीय विद्यालय में रेमेडियल लर्निंग क्लासेज प्रोजेक्ट	219.34
			कुल राशि	**372.44**

ज्ञान संकल्प पोर्टल के अन्तर्गत Adopt to school के माध्यम से गोद लिए गए विद्यालय

क्र. सं.	कम्पनी/संस्था/दानदाता का नाम	कम्पनी/संस्था/दानदाता द्वारा तीन वर्षों के लिए गोद जाने वाले विद्यालय	अनुमानित लागत/ व्यय (लाखों में)
1	एचजी फाउण्डेशन ट्रस्ट	महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय गाँधीनगर, जयपुर	7.78
		राउमावि मांग्यावास, जयपुर	12.28
		राउमावि ब्रहमपुरी जयपुर	16.45
		महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय ब्रहमपुरी जयपुर	13.19
		राबाउमावि देलवाड़ा राजसमंद	37.78
		राप्रावि राया राजसमन्द	20.94
		राउमावि देलवाड़ा राजसमंद	51.13
		राउमावि गोढच राजसमंद	36.69
		राउप्रावि मून्वास उदयपुर	22.72
		राउमावि मटाटा उदयपुर	68.87
		राप्रावि राया कैलाशपुरी उदयपुर	11.15
		राउमावि कैलाशपुरी उदयपुर	38.72
		राउप्रावि उमराणि सिरोही	20.47
2	सीएम मूंधड़ा फाउण्डेशन ट्रस्ट मुम्बई	श्रीमति गीता देवी बागड़ी राबाउमावि. नापासर, बीकानेर	16.23
		कुल	**374.4**

Rajasthan Education Department

शिविरा पत्रिका (मासिक) : मार्च, 2023 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक : सुनीता चावला, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

बाल शिविरा : मार्च, 2023

दिविशा,
एमजीजीएस. सांखू फोर्ट, चूरू

विशाखा सोनी,
एमजीजीएस. सांखू फोर्ट, चूरू

जसवंत,
राबाउप्रावि. सराणा, जालोर

शगुन शर्मा,
शहीद प्रमोद कुमार राउमावि.हसामपुर, सीकर

धापू,
राबाउप्रावि. सराणा, जालोर

किस्तुरी, दल्लु;
राउमावि. होडू, बाड़मेर

बिन्दू कँवर,
राउमावि. बिशनगढ़, जालोर

संगीता व्यास,
राउमावि. कासोरिया, भीलवाड़ा

दुर्गा, दिव्या;
राउमावि. होडू, बाड़मेर

सुगणी, ममता;
राउमावि. होडू, बाड़मेर

सुगणा,
राबाउप्रावि. सराणा,
जालोर

कृष्णा,
राबाउप्रावि. सराणा,
जालोर

दिव्या कटारिया,
श्रीमती राधा राउप्रावि. बींजवाड़िया,
जोधपुर

देवराज व्यास,
राउमावि. कासोरिया,
भीलवाड़ा

Rajasthan Education Department

वेटरनरी ऑडिटोरियम बीकानेर में आयोजित राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2022 में माननीय शिक्षा मंत्री एवं अधिकारीगण का सम्मान करते हुए तथा कार्यक्रम में उपस्थित अतिथिगण, अधिकारीवृंद एवं सम्मानित हुए कर्मचारीगण

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2022 में सम्मानित हुए कर्मचारीगण

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

श्री विचित्र नारायण आचार्य, श्री भूपेश आमेटा, श्री सांवल सिंह, श्री कपिल देव शर्मा, श्री मुकेश गांधी, श्री विनोद कुमार महात्मा, श्री राजेन्द्र प्रसाद कुमावत, श्री जाकिर हुसैन, श्री हरीश पालीवाल, श्री हेतराम, श्री देवेन्द्र सिंह, श्री संदीप मेहरा, श्री विनोद कुमार जोशी, श्री महावीर प्रसाद शर्मा, श्री गौरव कुमार काठपाल, श्री देवेन्द्र कुमार धनेरिया, श्री कैलाश कुमार राठौड़, श्री मनोज कुमार सैनी, श्री मंछाराम, श्री अमित गोयल, श्री रामचन्द्र बांकोलिया, श्री देवेन्द्र कुमार यादव, श्री पारस मल जैन, श्री सुरेश कुमार व्यास, श्री शौकत अहमद, श्री पेपाराम, श्री बृजमोहन पारीक, श्री अशोक कुमार, श्री शिवलहरी शर्मा, श्री नरेश कुमार, श्री अमन परिहार, श्री हनुमान प्रसाद व्यास, श्री तिलक चन्द बंसल, श्री रवि परिहार, श्री सुरेन्द्र कुमार गढवाल, श्री रमजान खाँ पठान, श्री महेश कुमार रंगा, श्री प्रदीप कुमार, श्री किशनलाल बंशीवाल

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/414/2023-25 शिविरा पत्रिका (मासिक) • मार्च, 2023 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 मार्च, 2023 पृष्ठ 56 • प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

वेटरनरी ऑडिटोरियम बीकानेर में आयोजित राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2022 की झलकियाँ

Rajasthan Education Department